INTERNATIONAL MAGAZINE
RNI NO. 64884/96

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै ।।
आतम पसारा करण हारा प्रभ बिनां नहीं जाणीअै ।।

आत्म मार्ग

April 2018

बैसाखी 1699 ई. को साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज, खालसा सृजन के अवसर पर शीश की माँग करते हुए।

आत्म मार्ग

वर्ष तेइसवां - अंक तीसरा, अप्रैल 2018

गुरद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज (ब्रह्मलीन)
तथा संत माता (बीजी) रणजीत कौर जी (ब्रह्मलीन)

चेयरमैन
सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

एडिटर-इन-चीफ
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

प्रबन्ध सम्पादक
भाई (डा.) सुखविंदर सिंह

मुख्य सम्पादक
डा. जगजीत सिंह (97798 16909)

मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृप्या निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यलय समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - **84378-12900, 94172-14391, 94172-14379**

Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry, Money Order's :

'ATAM MARG' MAGAJINE
Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib (New Chandigarh) P.O. Mullanpur Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S. Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

SUBSCRIPTION - शुल्क (देश)

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

SUBSCRIPTION FOREIGN (विदेश)

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can $	800 Can $
Australia	80 Aus $	800 Aus $

प्रकाशन के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटर्ज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्लांपुर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर (मोहाली), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in
www.ratwarasahib.org } **(Every sunday)**

Email :sratwarasahib.in@gmail.com

विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल
फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर
फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बैंस - मोबाइल 001-604-862-9525
फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंगलैंड - बीबी गुरबख्श कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी
फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,
भाई अरविंदर सिंह (राज) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्प्रीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

* आत्म मार्ग मैगज़ीन (पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी)
9417214391, 9417214379, 8437812900

* गुरू गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(CBSE) - 0160-2255003

* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सैंटर - **96461-01996**

* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(PSEB) अंग्रेजी माध्यम - **95920-55581**

* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल (मुफ्त)
98786-95178, 92176-93845

* इंटरनैशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -
94172-14382

* इंटरनैशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन (बी. एड.)
94172-14382

* अकाल वृद्ध आश्रम (मुफ्त) **98157-28220**

विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी	-	98551-32009
श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग	-	94647-12900
आडियो-वीडियो लाईब्रेरी	-	98728-14385, 98555-28517
केवल टी.वी. नेटवर्क	-	94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर
98889-10777, 96461-01996, 9417214381

विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5
(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

2. बारहमाहा 7
डा. जगजीत सिंह

3. आलमे रोशन ज़ि गुरु गोबिन्द सिंह 11
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

4. गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।। 28
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

5. बाबाणियाँ कहानियाँ 42
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

6. आत्म ज्ञान 46
सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

7. मिलु साध संगति भजु केवल नाम 48
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

8. नूरानी मिलाप 53
(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

9. 1699 की बैसाखी 55
डा. जगजीत सिंह

10. गुरबाणी अर्थ भण्डार 60
सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

11. स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार 61
डा. स्वामी राम जी

12. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची 63

सम्पादकीय

(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

सिक्ख धर्म का आरम्भ परमात्मा के साकार रूप धन्य श्री गुरू नानक साहिब जी के प्रकाश, गुरवाणी के नाद तथा रवाब की तार से होता है। यह अपना सफर पड़ाव-दर-पड़ाव तय करता हुआ, कुरबानी तथा खण्डे की धार और नगाड़े की चोट तक पहुँचा। सर्वस्वदानी धन्य श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज सगुण स्वरूप में इस इलाही ज्योति के शिखर हैं इस धर्म के दस स्वरूप धारण किए। अब ग्यारहवें स्वरूप युगों-युगों तक अटल श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के रूप में दर्शन देकर मानवता का उद्धार कर रहे हैं तथा मानवता के प्रत्येक क्षेत्र की अगुवाई कर रहे हैं। यह विशाल यात्रा सन् 1469 ई. को शुरू होती है तथा सन् 1699 ई. इसका शिखर हो जाता है। सन् 1708 ई. में मंजिल-ए-मकसूद को प्राप्त शाश्वत तौर पर शब्द गुरू का सिद्धान्त से जुड़ होता है। इस इलाही नाद पर ज्योति के अनेकों पहलू हैं, इनमें से कुछेक पहलुओं पर अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार अपने विचार शेयर करने जा रहे हैं। इस सिक्खी रूप खेती को श्री गुरू नानक साहिब जी ने सींचा और दसवें गुरू यानि कि दशमेश पिता जी के समय फल लगा। इस सफर के दौरान इस हरियाली वाले गुरदस्ते में अनेकों रंग भरे गए। सबसे पहले 'नानक कै घरि केवल नामु।। अब कलू आइओ रे।। इकु नामु बोवहु बोवहु। अन रूति नाही नाही।। मतु भरमि भूलहु भूलहु।।' भावार्थ नाम का सिद्धान्त प्रकट हुआ। हुक्म के सिद्धान्त पर खड़ी सम्पूर्ण विचारधारा सेवा व सिमरन के रूप में सामने आई। कर्मकाण्डों, भेषों, भ्रमों, जाति-पात, नस्ल, लिंग के भेदभाव से छुटकारा 'ना हम हिंदू, न मुसलमान।। अलह राम के पिंडु परान।।' (अंग - 1136) 'अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे।। एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।। (अंग - 1350)' सारी मानवता को वाहिगुरू का रूप जानने का सिद्धान्त व्यवहारिक रूप में प्रकट हुआ। फलस्वरूप नाम स्मरण करना, कर्म करना और मिल बाँट कर ग्रहण करने का सिद्धान्त सिक्ख जीवन के अभिन्न अंग बन गए। 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत का भला' माँगने की शाश्वत प्रार्थना बन गई और जीवन मुक्ति की विचारधारा रूपमान हुई।

दसों स्वरूपों की इलाही ज्योति की यात्रा में हुक्म, सेवा, सिमरन, भाईचारा रजा में राजी रहने व मीरी-पीरी का सिद्धान्त कोमल हृदय, मानवीय अधिकारों की रक्षा, अन्य धर्मों की रक्षार्थ अपनी जान की बाजी लगा देनी तथा देश, कौम व मानवता के कल्याणार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने का एक अत्यन्त नवीन व विलक्षण मार्ग था। भारतवर्ष में आई प्रत्येक पक्ष की गिरावट की भरपाई की गई अथवा इसे यूँ कह लें कि अधूरेपन गड्ढे को भरकर तथा पूर्णता का अहसास जगाकर एक पूर्ण मनुष्य का सृजन किया गया। कर्म उपासना, ज्ञान व विज्ञान का मार्ग दृढ़ करवाया गया तथा मल, विषशेप व आवरण जैसे दोषों को दूर करके आत्म साक्षात्कार करवाया एवं अपने मूल को पहचानना ही जीवन का लक्ष्य होने का अहसास करवाया। सुनने के साथ-साथ मानने की भी हिदायत की। इसकी तैयारी, मंजिल का सफर तथा शिखर, बुलन्दावस्था वाला था। यह एक करामात थी जो कि सन् 1699 ई. में पूरी हुई। 'पूजा अकाल की, पर्चा शब्द का तथा दीदार खालसे का' सिद्धान्त को कौम का शाश्वत अंग बनाना था। 'सवा लाख से एक लड़ाउं तबै गोबिंद सिंह नाम कहाउं।।' का नव सिद्धान्त था। हजारों-लाखों में एक पहचान की बख्शीश थी।

इस इलाही नाद व ज्योति ने, इसकी नीवों को शहीदों के खून से सिंचित किया। कई प्रकार की रजा में राजी रहने के वृत्तांत, मीरी-पीरी के सिद्धान्त तथा तिलक व जनेऊ की रक्षा करने जैसी घटनाएँ हमारे सामने हैं। जीवन-मुक्त के भाव में विचरण करता हुआ मनुष्य, प्रेम का खेल खेलता है।

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
अंग - 1102

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरू धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरू धरीजै ॥
सिरू दीजै काणि न कीजै ॥ *अंग - 1412*

के सिद्धान्त पर चलते चलते यह 'खालसा मेरो रूप' बन गया। खण्डे की धार व तलवार में से उत्पन्न हुए इस पूर्ण मनुष्य ने खालसे की उपाधि प्राप्त की। उपाधि प्रदान करने वाले गुरू 'आपे गुर चेला' के रूप में प्रकट हुए। यथा-

वाह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरू चेला।
भाई गुरदास जी, वार 41/17

जागत जोति जपै निस बासुर एक बिनाँ मन नैक न आनै॥ पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै। तीरथ दान दइआ तप संजम, एक बिना नहि एक पछानै॥ पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै॥ *(सवये पा: 10)*

केवल एक अद्वितीय परमेश्वर वाहिगुरू को मानने वाला खालसा प्रकट हुआ यानि कि एक साधारण मनुष्य आशीर्वाद प्राप्त करके उस अकाल पुरुष का रूप बन गया। सृजनहार द्वारा सृजित मनुष्य, उसके जैसा ही बन गया। सारे समाज में अकाल पुरुष तथा उस पूर्ण मनुष्य में कोई अन्तर नहीं रह गया। जो भाई मरदाना जी ने गुरू नानक देव जी को किसी समय कहा था कि 'तेरा मेरा बहुत अंतिर नाही, तूँ खुदा दा डूंम हउ तेरा डूम' ये भावनात्मक बोल अब सत्य हो गए। भाई साहिब भाई दया सिंह जी महाराज तथा चार और साथी 'पंच परवाण पंच परधान' एवं 'खालसा मेरा रूप है खास।। खालसे महि हौं करौ निवास।।' के रूप में खालसा रूपमान हुआ। चरण पाहुल से शुरू होकर, खण्डे की पाहुल के रूप में धर्म के अन्दर प्रवेश करने की युक्ति सामने आई तथा खण्डे की पाहुल अब शाश्वत रूप में सामने आ चुकी थी। सन् 1675 ई. से लेकर सन् 1699 ई. तक यानि कि 24 वर्षों तक महाराज जी ने चरण पाहुल वाले नियम का ही प्रयोग किया। गुरवाणी तथा कुर्बानी वाली जीवन जीने की कला सन् 1699 ई. की बैसाखी को श्री आनन्दपुर साहिब में पूर्ण सतगुरू के माध्यम से पाँचों में प्रवेश करके शाश्वत या अमरता का रूप धारण कर गई। इन पाँचों में से स्वयं पाहुल लेनी भावार्थ अमृतपान करना, पाँचों के आगे अपना शीश झुकाना तथा पाँचों को अपना रूप समझना, बड़े सिद्धान्तों की रूप मानता करता है। यह एक अद्वितीय व विलक्षण मिसाल है। धार्मिक इतिहास के अन्दर यह पहली व अन्तिम मिसाल है।

बैसाखी 1699 ई. को कौम के जन्म-दिवस के तौर पर नहीं देखा जा सकता है। यह तो खालसे का सृजन दिवस है, पन्थ का सृजन दिवस है, एक पूर्ण मनुष्य का प्रकट दिवस है। 'प्रगटिउ खालास प्रमात्म की मौज' तथा 'सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जग चानणु होआ' मिलते जुलते सिद्धान्त ही है। दरअस्ल प्रकट वही वस्तु हुआ करती है जो कि पहले मौजूद हो जिसका पहले सो कोई अस्तित्व हो। खालसा एक आदर्श है -

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥
अंग - 655

यह एक सच्चा-सुच्चा आदर्श है, जिसका अस्तित्व पहले भी विद्यमान था लेकिन अप्रैल सन् 1699 ई. के दिन वह प्रकट हुआ। उस दिन गुरवाणी को जीवन में अपनाने या इस पर चलने के ढंग की जिम्मेदारी को अमृतपान कर चुके पाँचों प्यारों के रूप में पन्थ को तथा मानवता को सुपुर्द कर दिया गया। यह जीवन जीने की कला मानवता के लिए एक ईश्वरीय उपहार है। यह वह अमृत है जिसे ग्रहण करके शाश्वत स्थिति यह अमरत्व प्राप्त हो जाता है। आन्तरिक अमृत के साथ एकत्व प्राप्त कर लेना ही इसका वास्तविक उद्देश्य है -

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ अंग - 293

अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए
अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥ अंग - 538

उस महान अमृत के सरोवर तक पहुँचने का यह एक सरल मार्ग है और यही वास्तव में आत्म मार्ग है। आत्म मार्ग मैगजीन का भी यही लक्ष्य है कि उस आन्तरिक अमृत तक हमारी पहुँच कैसे हो जाए यानि कि आन्तरिक अमृत को चखकर हम किस प्रकार से अमर हो जाएँ। जब हमारी पहुँच उस अमृत तक हो गई फिर तो सारी सृष्टि ही बेगमपुरा यानि कि 'ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै।। आतम पसारा करणहारा प्रभु बिना नही जाणीअै।।' (अंग - 846) के सिद्धान्त की व्यवहारिक रूपमानता हो जानी है। इसी सिद्धान्त पर चलते हुए 'आत्म मार्ग' की सारी विचारधारा का सफर भी प्रस्तुत अंक के साथ चौबीसवें वर्ष में प्रवेश कर जाता है। विगत 23 वर्षों से लगातार एक ही विचारधारा को लेकर यह रूहानियत भरपूर खजाना पाठकजनों तक पहुँच रहा है। प्यारे महापुरुषों के अनुभवी प्रवचनों से भरपूर 25 से 30 पृष्ठ इसी उद्देश्य हेतु इस मैगजीन में प्रकाशित किए जाते हैं। अन्य रूहानी सामग्री के अलावा इस बार नवीन शीर्षक 'नूरानी मिलाप' में भी गुरमति विचार शुरू किए जा रहे हैं। धन्य श्री गुरू नानक साहिब महाराज जी के 550 वर्षीय प्रकाश शताब्दी को समर्पित यह 'नूरानी मिलाप' नामक नवीन लेख शुरू किया जा रहा है। उम्मीद है कि पाठकजन पढ़ व विचार कर अवश्य ही लाभ प्राप्त करेंगे।

मार्च माह में ट्रस्ट के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी गुरमति प्रचार श्रंखला के अन्तर्गत आस्ट्रेलिया गए हुए हैं और आप बैसाखी पर्व से पहले वापिस लौट आएंगे। प्यारे महापुरुषों तथा सम्माननीया बीजी की आशीषों तथा श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के आशीर्वाद की बदौलत ट्रस्ट द्वारा आरम्भ की गई समस्त संस्थाएँ बुलन्दावस्था में चल रही हैं तथा मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो रही हैं। गुरू जी कृपा करें ताकि समस्त ट्रस्ट सदस्यों व श्रद्धालुजनों को बुलन्दावस्था वाला जीवन प्राप्त हो और सतगुरू जी अपने घर की सेवा समस्त प्रेमीजनों के सिर पर हाथ रखकर लेते रहें। आत्म मार्ग मैगजीन के चौबीसवें वर्ष में प्रवेश करने पर समस्त पाठकजनों को कोटि कोटि मुबारकवाद।

आओ इसी खुशी में आत्म मार्ग को अन्य लोगों तक पहुँचा कर सतगुरू की खुशियाँ प्राप्त करें तथा 'आपि जपै अवरह नामु जपावै' के सिद्धान्त पर पहरा दें।

वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।।

(वैसाख माह की संक्रान्ति - 14 अप्रैल दिन शनिवार)

(डा.) जगजीत सिंह

बारह माहा मांझ महला 5 घरु 4

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम विछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥

अंग - 133

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम विछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥

वैसाख का महीना अत्यन्त सुवाहनी ऋतु वाला है तथा प्रत्येक स्त्री पुरुष के लिए खुशियों भरा सन्देश लेकर आता है। परन्तु इस सुहावने माह में भी उन जीव रूपी स्त्रियों का दिल किस प्रकार से स्थिर या प्रसन्न हो सकता है, जो परमेश्वर रूपी प्रियतम से बिछुड़ी हुई हैं तथा जिनके अन्दर पति प्यार का अभाव है तथा विरह व्यथा का अनुभव नहीं है। *'वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम विछोहु।'* बिछोड़ा सबसे बड़ा दुख है परन्तु इससे भी बड़ा दुख है विछोड़े के दुख का अनुभव समाप्त हो जाना। यदि किसी के हृदय में बिछुड़ने के दुख का अहसास होगा तो वह मिलाप के लिए उद्यमशील भी हो सकता है परन्तु यदि भावना ही मृत हो जाए तब तो वह अत्यन्त दयनीय दशा हो जाती है। इस प्रकार जिस जीव को मनमोहक माया पकड़ लेती है वे सज्जन प्रभु को भूल ही जाते हैं और फिर उन्हें धैर्य कैसे प्राप्त हो सकता है? *(हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोह।।)*

मनुष्य को माया मीठी लगती है, माया का रंग रूप अत्यन्त सुन्दर है। परमात्मा का खेल ही ऐसा है कि माया की ठगमूरी बूटी मनुष्य के चंचल मन को मोह लेती है। मनुष्य इसके छलावे को समझ नहीं सकता है तथा इसके प्यार में से खुशी व आनन्द की तलाश करता है लेकिन धुएँ के पर्वत में स्थिरता कहाँ होती है? और इसी प्रकार से रेत की दीवार की कितनी अवधि होती है? श्री गुरू अमरदास जी बड़े ही प्यारे शब्दों के द्वारा चंचल मन को माया के छलावे से सावधान करते हुए कहते हैं -

ए मन चंचला चतुराई
किनै न पाइआ ॥
चतुराई न पाइआ किनै
तू सुणि मंन मेरिआ ॥
एह माइआ मोहणी जिनि
एतु भरमि भुलाइआ ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती
जिनि ठगउली पाईआ॥
कुरबाणु कीता तिसै विटहु
जिनि मोहु मीठा लाइआ॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई
किनै न पाइआ ॥ ***अंग - 918***

माया के प्यार व छलावे का सबसे दुखदाई प्रतिक्रम यह होता है कि मनुष्य सृजनहार, पालनहार, प्रभु को विसार देता है तथा इसके खेल में मस्त होकर अमूल्य जीवन की बाजी को हार जाता है, फलस्वरूप उसे न तो दीन मिलता है और न दुनिया। यदि मनुष्य माया की वास्तविकता को समझ ले, गुरु शब्द द्वारा वाणी द्वारा, नाम स्मरण द्वारा, सन्तों महापुरुषों व नाम अभ्यासियों की संगत के द्वारा तो वह प्रभु प्यार के आनन्द में विचरण करते हुए माया को दासी मानकर उसे उत्तम कार्यों के लिए साधन के तौर पर प्रयोग में लाया जा सकता है अन्यथा माया की अग्नि मनुष्य को जलाकर

स्वाह कर देती है -

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥
लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी
तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ *अंग - 921*

माया के मोह में ज्ञानविहीन मनुष्य कीमती हीरे व मोतियों के सदृश्य प्रभु नाम को विस्मृत कर देता है जो इसका असली खजाना है जो सुखों की खान है, जो असली जीवन है, सुख आनन्द का घर है। माया का मोह, लोभ, लालच, तृष्णा की अग्नि तो सदा ही द्वैत भाव को उत्पन्न करती है जहाँ पर कि स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं हो पाता है -

रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥
मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥
जो बीजै सोई फलु पाए
सुपने सुखु न पावणिआ ॥ *अंग - 113*

गुरवाणी हमारे सामने माया की वास्तविकता को प्रकट करती है कि उस माया के साथ मोह डालने व एकत्र करने का क्या लाभ है, जो संसार से चलते समय साथ नहीं जाती है और आखिर जिससे बिछुड़ जाना है उसके लिए इतने यत्न करने, वैर, विरोध उत्पन्न करने का क्या लाभ है -

चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥
तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥
अंग - 708

सच्चाई तो यह है कि मनुष्य ने माया के बड़े डरावने जंगल को रमणीक शहर मान लिया है, नाशवान पदार्थों को शाश्वत मान लिया है, इनके लिए काम, क्रोध, अहंकार में मनुष्य पागल हुए घूम रहे हैं। जब मौत का डंडा सिर में लगता है तो फिर इन्हें पछताना पड़ता है -

महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥
झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥
काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥
सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥
बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ *अंग - 707*

पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥

माया के प्यार में मनुष्य इस सच्चाई को भूल जाता है कि न पुत्र, न स्त्री, न धन न अन्य कुछ साथ में जाता है, एक अविनाशी परमात्मा ही साथ में निभने वाला साथी है, जिसने सहजता, सुख व शान्ति प्रदान करनी है तथा जिसके मिलाप से जीवन मनोरथ की सिद्धि होनी है *(पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु)।*

इस सम्बन्ध में पाँचवे गुरु महाराज जी कथन करते हैं कि यहाँ संसार में असली मित्र कौन है -

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥
जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै
ता की निरमल रीति॥
मात पिता बनिता सुत बंधप
इसट मीत अरु भाई ॥
पूरब जनम के मिले संजोगी
अंतहि को न सहाई ॥
मुकति माल कनिक लाल हीरा
मन रंजन की माइआ॥
हा हा करम बिहानी अवधहि
ता महि संतोखु न पाइआ ॥
हसति रथ असु पवन तेज
धणी भूमन चतुराँगा ॥
संगि न चालिओ इन महि
कछूऐ उठि सिधाइओ नाँगा॥
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के
ता कै हरि हरि गाईऐ॥
नानक ईहा सुखु आगै मुख उजल
संगि संतन कै पाईऐ ॥ *अंग - 700*

अर्थात कोई विरला मनुष्य ही इस सच्चाई को जानता है कि इस संसार में उसका असली मित्र कौन है? इस असलियत को समझने से ही जीवन पावन व आनन्दमयी हो सकता है। सच्चाई यह है कि माँ-बाप, पुत्र, रिश्तेदार, प्यारे मित्र एवं भाई-बन्धु आदि सभी पिछले जन्म के संयोगों के कारण एकत्र होते हैं। यह भी निरोल सत्य है कि अन्तिम समय

में इनमें से कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता है। यह भी सत्य है कि मनुष्य जान मार के हाय-हाय करते हुए सोना, लाल, हीरे, हाथी, घोड़े, जमीनें, फौजें आदि एकत्र करता है लेकिन सब कुछ छोड़कर वह नंगा ही संसार से विदा हो जाता है, फिर मनुष्य को करना क्या चाहिए? मनुष्य को ऐसे सन्त जनो प्रभु-प्यारों, की संगत करनी चाहिए जो कि प्रभु परमात्मा का यशगान करके दिव्यानन्द में लीन रहते हैं। ऐसी संगत से रंगत लेकर ही प्रभु-प्यार का आनन्द उठाया जा सकता है तथा लोक व परलोक सफल हो जाता है।

इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥

अज्ञानता के अन्धकार में मनुष्य यह भूलकर बैठा है कि केवल प्रभु नाम ही साथ में निभने वाली अमूल्य वस्तु है नाम के बिना अन्य सारी क्रियाएँ रजो, तमो, सतो यानि कि तीनों गुणों में किए सारे कर्म पहले ही छीन लिए जाते हैं और जीव के कल्याण हेतु इनका कोई भी मूल्य नहीं पड़ता है *(इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि)*।

प्रभु नाम, जपु, सिमरन, के बिना सारी क्रियाएँ व्यर्थ है सारे जप, तप, सारे कर्मकाण्ड पहले ही चुंगी के तौर पर धरवा लिए जाते हैं, वे आगे काम नहीं आते हैं। आगे तो केवल और केवल प्रभु जी का नाम ही मददगार होता है -

हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥
जप तप संजम करम कमाणे ईह ओरै मूसे ॥
अंग - 216

पाँचवे पातशाह का फुरमान है -

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का
निमख सिमरत जितु छूटै ॥ *अंग - 747*

यह अटल सच्चाई है कि प्यारे प्रभु जी को विस्मृत करने से जीवन में परेशानी ही परेशानी आ जाती है -

हरि बिसरत सदा खुआरी ॥
ता कउ धोखा कहा बिआपै
जा कउ ओट तुहारी ॥ *अंग - 712*

परमात्मा के बिना इस जीव का कोई भी सहारा नहीं बचता है और न ही कोई हो सकता है -

प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥

इसलिए जो जीव प्रभु प्रियतम की चरण शरण में रहते हैं, उनकी लोक व परलोक में शोभा होती है।

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥

इसलिए हे प्रभु! तुम्हारे द्वार पर सविनम्र विनती है कि मुझे भी आपका भरपूर प्यार व मिलाप प्राप्त हो (नानक की प्रभु वेनती प्रभु मिलहु परापति होइ।।) बैसाख का महीना सुहावना है, सुन्दर है, उल्लास व हरियाली भरा है लेकिन आत्मा को बैसाख का महीना तभी सुहावना लगता है जबकि किसी परमेश्वर के प्यारे सन्त के द्वारा प्रभु जी का मिलाप हो जाए। *(वैसाख सुहावा ता लगै जा संत भेटै हरि सोइ।)* इसलिए प्रभु मिलाप के लिए नाम स्मरण में जुट जाना ही सर्वोत्तम क्रिया है, सुख सहज व शान्ति का मार्ग है। यही जीवन मनोरथ है इसकी प्राप्ति के लिए नाम अभ्यासी सतपुरुषों की संगत करनी आवश्यक है। सन्तजन सदैव परमात्मा के प्यार में रंगे हुए शाश्वत आनन्द को अनुभव करते हैं वे किसी अन्य की मोहताजी करना नहीं जानते हैं, अपितु वे तो प्रभु प्रेम में ही मस्त रहते हैं। रोग, चिन्ता, बुढ़ापा, मृत्यु (इनके भय) प्रभु-प्यारों के नजदीक नहीं आ पाते हैं। वे दुनियावी भयों से मुक्त प्रभु प्रेम व याद में लीन रहते हैं। इन प्रभु प्यारों की संगत करने वाले भी इस रंग में रंगे जाते हैं -

संतन अवर न काहू जानी ॥
बेपरवाह सदा रंगि हरि कै
जा को पाखु सुआमी ॥
उच समाना ठाकुर तेरो
अवर न काहू तानी ॥
ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ
राचि रहे रंगि गिआनी ॥
रोग सोग दुख जरा मरा
हरि जनहि नही निकटानी॥
निरभउ होइ रहे लिव एकै
नानक हरि मनु मानी ॥ *अंग - 711*

श्री गुरु जी फुरमान करते हैं कि वे प्रभु प्रेम वाले मनुष्यों से कुर्बान जाते हैं जो कि रूहानी सत्संग में शामिल होकर प्रभु जी की बातें सुनते हैं। वे मनुष्य शुभ गुणों वाले तथा सबसे अच्छे मनुष्य है जो कि प्रभु जी के आगे सिर झुकाते हैं, वे हाथ पवित्र है जो प्रभु जी का यशगान लिखते

हैं, वे पैर पवित्र है जो प्रभु जी के मार्ग पर चलते हैं। सन्त महापुरुषों की संगत में दुखों व विकारों से बचाव हो जाता है, सारा दुख दूर हो जाता है (वैसाख ही नहीं) उनका सारा जीवन ही सफल व सुहावना हो जाता है -

सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥
पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥
हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥
चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥
संताँ संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ अंग - 709

राग तुखारी में प्राप्त गुरू नानक देव जी के बारहमाहा में वैसाख माह का पाठ तथा उसकी सरल व्याख्या -

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो॥
कीमति कउण करे तुधु भावाँ देखि दिखावै ढोलो ॥
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥
अंग - 1108

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥

वैसाखु का महीना बड़ा ही सुहावना, शोभनीक व अच्छा लगने वाला महीना है। एक तरफ गेहूँ के खेत तैयार होकर लहलहा रहे होते हैं, किसान अपनी सफल हुई मेहनत को देखकर प्रसन्न होता है तथा अन्दर ही अन्दर धन्यवाद भाव में जुड़ता है। उसकी सेवा सम्भाल की तैयारी करता है। अनाज की सेवा सम्भाल करके, सबका लेन-देन खत्म करके वह वैसाखी के मेले की खुशियां मनाता है। इस महीने में कुदरत भी भरपूर यौवन पर होती है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली को देखकर मन खिल उठता है। वृक्षों की टहनियां सुन्दर वस्त्र धारण करके सजावट करती हैं *(वैसाखु भला साखा वेस करे)* नई फूटी डालियां तथा नए निकले नर्म-नर्म पत्ते, वृक्षों को नया रंग-रूप प्रदान करते हैं, जिसे देखकर कुदरत पर बलिहार जाने को मन करता है। इन वृक्षों का हार-श्रृंगार देखकर पति से बिछुड़ी हुई स्त्री के अन्दर भी पति को मिलने की खींच पड़ती है तथा वह अपने घर की दहलीज पर खड़ी अपने प्रियतम का मार्ग देखती है। इसी प्रकार से कुदरत रानी का सौन्दर्य व श्रृंगार देखकर उल्लास से भरी हुई जीव रूपी स्त्री अपने हृदय के द्वार पर प्रभु रूपी पति की प्रतीक्षा करती है तथा उसके अन्दर से यह हूक निकलती है कि हे प्रभु पति! कृप्या मेरे हृदय रूपी घर में आओ। *(धन देखे हरि दुआरि आवहु दइआ करे)।*

घरि आउ पिआरे दुतर तारे
तुधु बिनु अढु न मोलो ॥
कीमति कउण करे तुधु भावाँ
देखि दिखावै ढोलो॥

हे मेरे प्यारे! मेरे हृदय रूपी घर में आकर बस जाओ ताकि यह विषय संसार समुद्र को मैं सहजता से ही पार कर जाऊँ। तेरे बिना इस मान रहित व बलहीन जीवात्मा का कौड़ी भर मूल्य भी नहीं है *(घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो)* परन्तु हे मित्र प्रभु! यदि गुरु कृपा करे जिसे कि तुम्हारे दर्शन प्राप्त है, वह मुझे भी तुम्हारे दर्शन करवा दे तथा यदि मैं तुम्हें अच्छी लग जाऊँ तो मेरा मूल्य कौन पा सकता है? कीमति कउणु करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो) तुम्हारे बिना मेरा आधी कौड़ी भर भी मूल्य नहीं था और अब तुम्हारे दर्शन करके मैं अमूल्य हो गई हूँ-

दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना॥
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥

सतगुरु जी ने कृपा करके जब ऐसा अनुभव प्रदान कर दिया तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरा प्रियतम तो मेरे अन्दर ही निवास कर रहा है, वह मुझसे कहीं दूर नहीं गया है। अब मुझे उस टिकाने का पता चल गया है, जहाँ पर कि मेरे प्रियतम तुम निवास करते हो। *(दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना)* अब गुरु जी ने कृपा करके यह समझ प्रदान की है कि वैसाख की सुन्दर ऋतु में वह जीव रूपी स्त्री प्रभु रूपी पति के साथ मिलाप को हासिल कर लेती है, जिसकी सुरति गुरु के शबद में जुड़ी रहती है, जिसका मन प्रभु जी के यशगान के गीत गाता रहता है। *(नानक वैसाखी प्रभू पावै सुरति सबदि मनु माना)।*

भाव यह है कि कि वैसाख की सुहावनी ऋतु में सुरति को गुरु-शब्द में जोड़ने से प्रभु जी की प्राप्ति तथा दर्शन दीदार नसीब होते हैं।

आलमे रोशन ज़ि गुरु गोबिन्द सिंह
जानि दिल गुलशन ज़ि गुरु गोबिन्द सिंह

(सतगुरू जी से संसार में प्रकाश हुआ है, देह और आत्मा भी सतगुरू जी से आनन्दित हुए हैं)

(खालसा आदर्श)

सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

'अरबद नरबद धुन्धुकारा' व्यापक रहा। आत्मा सत्त-चित्त-आनन्द के रूप में ऐकंकार में से प्रकाशित हुई और प्रसार आरम्भ हो गया। यह सत शक्ति भी संसार की कल्पना नहीं करती थी। संसार था ही नहीं। आगे बताते हैं कि उस परमेश्वर ने पहले इन पाँच महाभूतों को प्रकट किया और स्वंय ही अगम अगोचर अवस्था में से प्रकट होकर उस प्रभु ने अनेक प्रकार की सृष्टि सिरजने रचाने से पहले अपनी देह से पानी की रचना की पवन से जल हुआ, जल से त्रिभुवन साकार हुआ तथा उसमें शक्ति रूपी बीज डाल दिया। इस प्रकार भाई गुरदास जी बताते हैं कि पहले पहल जब श्वांस और मांस कुछ भी नहीं था, अन्धा धुन्ध अन्धेर, घटा टोप अन्धेरा था, कुछ भी ज्ञान नहीं था। माता के रक्त तथा पिता के वीर्य की देह बना कर उसने पाँच तत्वों को जड़ित कर दिया। वायु, पानी, अग्नि तथा चौथा तत्व पृथ्वी पाँचवा आकाश बनाकर, छठा अपने आपको गुप्त रूप में रखकर हृदय में बैठ गये। इसलिये कि सारे जड़ शरीर को सत्ता देकर चलाएं। पाँच तत्व तथा 25 प्रकृतियाँ जो आपस में शत्रु थी मित्र बनाकर देह बना दी। अग्नि, पानी, मिट्टी जो आपस में शेर और बकरी की तरह है, इकट्ठे कर दिये। चार श्रेणियों अन्डज़, जेरज़, सेतज़ उतभुज तथा चार ध्वनियों (परा, पसन्ती, मधमा, वैखरी) इन्हें गतिमान करके आवागमन का चरित्र प्रकट कर दिया। इस प्रकार 84 लाख यौनियों की रचना कर दी।

इस प्रकार विद्वान बताते हैं कि यह अनादि संसार चला आ रहा है। वट वृक्ष के बीज की तरह यह पता नहीं चल पाता कि वट वृक्ष पहले था या बीज। इसी प्रकार पता नहीं चलता कि पहले कर्म था कि शरीर यह बात जिसने संसार की रचना की वही जानता है। जपुजी साहिब में ऐसे ज़िक्र आता है -

थिति वारु न जोगी जाणै रुति माहु न कोई।
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई॥
अंग - 4

भारत में षट-शास्त्र हैं, उनमें सृष्टि की रचना के बारे में अपने अपने मत प्रकट किये हैं। नियाय वाले (वैज्ञानिक) परमाणुओं से, सांख्य शास्त्र वाले तीन गुणों की समान अवस्था से, वेदान्त वाले माया से जगत की उत्पत्ति मानते हैं। ऐसा भी मानते हैं कि स्वंयभूमुनि नर तथा सतरूपा उसकी स्त्री बनी, उनके रक्त बिन्दु से सारी सृष्टि का प्रसार हुआ क्योंकि जो घोड़ा-घोड़ी आदि सारी चौरासी का नर-मादा वे दोनों ही बन जाते हैं परन्तु ये सभी विचार हैं, गुरमत के सिद्धान्त अनुसार सृष्टि का कर्त्ता एक ही वाहिगुरू है जिसने -

कीता पसाउ एको कवाउ।
तिसते होए लख दरीआउ॥ *अंग - 3*

उसने अपनी शक्ति से एक फुरना (अक्समात विचार) करके सारी सृष्टि की रचना कर दी। महाराज जी फ़रमान करते हैं -

करन कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ।
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ॥
अंग - 276

संसार में जो शून्य (सुन्न) था उसे देखने वाला आत्मा था, उस आत्मा से ही सारे संसार का प्रसार हुआ जैसा कि फ़रमान है -

ब्रहम दीसै ब्रहमु सुणीऐ
एकु एकु वखाणीऐ।

आतम पसारा करणहारा
प्रभ बिना नही जाणीऐ॥ *अंग - 846*

आत्मा ने ही पाँच तत्वों की देही रचकर सृष्टि की रचना की है। इसी प्रकार परमाणु प्रधान कर्म आदि कारण सभी जड़ है। चेतन आत्मा की सत्ता के बिना कोई कुछ नहीं कर सकता। सो इसलिये वे विचार निर्मूल हैं। भाई गुरदास जी फ़रमान करते हैं -

प्रिथमै सासि न मास सनि अंध धुंध कछु खबरि न पाई।
रकति बिंद की देहि रचि, पांचि तत की जड़ित जड़ाई।
पउण पाणी बैसंतरो चउथी धरती संगि मिलाई।
पंचमि विचि आकासु करि करता छटमु अदिसटु समाई।
पंच तत पंचीसि गुनि सत्रु मित्र मिलि देहि बणाई।
खाणी बाणी चलितु करि आवागउणु चरित दिखाई।
चउरासीह लख जोनि उपाई॥
भाई गुरदास जी, वार 1/2

और भी ऐसा फ़रमान है -

ओअंकारु आकारु करि एक कवाउ पसाउ पसारा।
पंज तत परवाणु करि घटि घटि अंदरि त्रिभवणु सारा॥ *भाई गुरदास जी, वार 1/4*

वाहिगुरू जी ने एक वचन से रूपमान होकर सारा प्रसार कर दिया। पाँच तत्वों से सारे ब्रह्मण्ड रचकर, अपने आपको घट घट में रचकर प्रत्येक के शरीर में प्रवेश करके सत्ता दे रहा है। मकड़ी भी अपने अन्दर से जाला बुनती है पर वह जाले में व्याप्त नहीं होती, वह एक तरफ होकर कोने में बैठ जाती है। जाला तानने (बनाने) के बाद उसे जाले के साथ कोई लगाव नहीं होता उससे केवल इतना ही सम्बन्ध होता है कि इसमें कोई मक्खी मच्छर फंसे तो मैं उसे अपना भोजन बना लूँ। वाहिगुरू जी ने इस प्रकार का प्रसार नहीं किया। उन्होंने अपना प्रसार स्वंय से ही किया और स्वंय ही व्यापक होते हुये निर्लेप रूप में अपनी महिमा सहित अपनी रचना में स्वंय स्थित हैं। यह बात समझनी कठिन है। उदाहरण के साथ यह बात समझ में आ जायेगी। वह प्रकृति का उदाहरण होने के कारण अपूर्ण है पर बात समझ में आ जायेगी वह इस प्रकार है कि करोड़ों बर्तनों में समुद्र का पानी भरा हुआ है, बड़ी बड़ी झीलों में भी पानी भरा है। छोटे से छोटे बर्तन में भी पानी है और समुद्र में भी पानी है। सूरज जब चमकता है उसका प्रतिबिम्ब (परछाई) सभी पानी में पड़ती हैं। एक छोटे से पानी के चूंघड़े (धारा) को देखकर कोई यह कहे कि इसमें सूरज बन्द हो गया तो यह निर्मूल बात है, यह तो परछाई है, हवा चलने पर पानी हिलता है या बर्तन को हाथ लगाने से पानी हिलता है लगता ऐसे है कि सूरज हिल रहा है। सूरज तो निर्लेप है, अलग अलग करोड़ों मील की दूरी पर स्थित है। इसी प्रकार वाहिगुरू जी का प्रतिबिम्ब इस शरीर में पड़ता है जो इस जड़ चित्त को चेतना प्रदान करता है। सूरज तथा वाहिगुरू में अन्तर है, सूरज पानी की अवस्था को नहीं समझ सकता पर वाहिगुरू जी चेतन रूप होकर घट-घट में व्याप्त हैं। सारी शक्तियाँ हुक्म के अनुसार संसार को चलाने के लिये अपना अपना कार्य करती हैं। इस प्रकार एक और उदाहरण है। आप एक बड़ा सा सौ फुट लम्बा शीशा लो, एक तरफ होकर देखो, आसमान में चमकता हुआ सूरज, इसमें दिखाई देगा। सूरज उसमें एक ही होगा पर यदि हथौड़ा लेकर उसके इतने छोटे छोटे टुकड़े कर दो कि छोटा सा टुकड़ा भी इतना सूक्षम हो जाए जिसे उठाना भी कठिन हो तो जब उसमें भी ध्यान से देखोगे तो उसमें भी सूरज उसी तरह उतना ही बड़ा दिखाई देगा जितना बड़ा पहले शीशे में दिखाई देता था। इस प्रकार वाहिगुरू जी अपने रचे हुए संसार के कण-कण में व्याप्त होते हुए हर घट की अवस्था को समझते हैं पर वह टुकड़े होकर इन टुकड़ों में नहीं रमे वह एक और केवल एक ही हैं।

कादर किसी ने देखा नहीं पर कुदरत को देखकर अपना अनुमान लगा सकते हैं। भाई गुरदास जी लिखते हैं -

ओअंकारु आकारु करि
एक कवाउ पसाउ पसारा।
पंज तत परवाणु करि
घटि घटि अंदरि त्रिभवणु सारा॥
कादरु किने न लखिआ
कुदरति साजि कीआ अवतारा।
इक दू कुदरति लख करि
लख बिअंत असंख अपारा।
रोमि रोमि विचि रखिओनि
करि ब्रहमंडि करोड़ि सुमारा।
इकसि इकसि ब्रहमंडि विच
दसि दसि करि अवतार उतारा।
केते बेदि बिआस करि
कई कतेब मुहंमद यारा।
कुदरति इकु एता पासारा॥
भाई गुरदास जी, वार 1/4

अब वह समय की विचार करते हुए बताते हैं कि कोई समय था जब यह मनुष्य पूर्णतया पवित्र था और परमेश्वर का रूप ही गिना जाता था क्योंकि जब हम अज्ञान रहित हो जायें तो हमारे भ्रम के पर्दे नष्ट हो जाते हैं। अज्ञान के बादल उड़ जाएं तो हम क्या देखते हैं कि यहाँ वाहिगुरू जी के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं -

मनि साचा मुखि साचा सोइ।
अवरु न पैखै एकसु बिनु कोइ।
नानक इह लछण ब्रहमगिआनी होइ॥ अंग - 272

उस समय उस युग के पुरुषों को पूर्ण ज्ञान था और 'सोहम ब्रह्म' के ध्यान द्वारा सदा ही परमेश्वर के साथ जुड़े रहते थे एक ही ब्रह्म बताया करते थे। मोह माया की कोई मोहताज़ी नहीं थी, बहुत ही सादा जीवन बिताया करते थे, चाहे लाखों वर्षों तक की आयु थी, पूर्ण ज्ञानवान थे। उस समय के ऋषियों-मुनियों का ज़िक्र करते हुए फ़रमान है -

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए।
मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए॥
अंग - 692

और इस प्रकार भी फ़रमान है -

चारि जुगि करि थापना
सतिजुगु त्रेता दुआपर साजे।
चउथा कलिजुगु थापिआ
चारि वरनि चारों के राजे।
ब्रहमणि, छत्री, वैसि, सूद्रि,
जुगु जुगु एको वरन बिराजे।
सतिजुगि हंसु अउतारु धरि
सोहं ब्रहमु न दूजा पाजे।
एको ब्रहमु वखाणीऐ
मोह माइआ ते बेमुहताजे।
करनि तपसिआ बनि विखै
वखतु गुजारनि पिंनी सागे।
लखि वरहिआँ दी आरजा
कोठे कोटि न मंदरि साजे।
इक बिनसै इक असथिरु गाजे॥
भाई गुरदास जी, वार 1/5

महापुरुषों के अनुभव के अनुसार यह 17 लाख 28 हज़ार वर्षों का समय बीता, इस समय के बीतने के उपरान्त विचार बदल गए, मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन आ गया, विचारों के परिवर्तन से नौं हिस्से आयु कम हो गई, दस हज़ार वर्ष आयु रह गई। माया का प्रभाव हो गया, अज्ञान के अंश उभर आए, मोह पैदा हो गया, अपनत्व का अहमभाव पैदा होकर अपने आप को उस ब्रह्म से अलग जाना जाने लगा। यह युग 12 लाख 64 हज़ार साल की आयु का था पर इस युग में आकर हउमै ने हृदय में निवास कर लिया और वह जो घट-घट में व्याप्त वाहिगुरू जी को जानते हुए आप ही परमेश्वर का रूप कहते थे जिसे सोहम कहा गया है, 'सो' का अर्थ होता है 'वह'; 'हं' का अर्थ है 'यह'(यह हस्ती पारब्रह्म ही है) पर त्रेता तथा द्वापर में यह विचार मद्धम पड़ गये त्रेता के पश्चात द्वापर युग शुरू हो गया, जिसका समय 8 लाख 64 हज़ार साल गिना गया है। इस युग में उम्र कम होकर एक हज़ार वर्ष ही रह गई। उस समय के आर्य लोगों में यह विचार था कि द्वापर में कृष्ण महाराज सोलह कला सम्पूर्ण होकर रूपधारी हुए, कर्म करने के भी अलग अलग ढंग थे ऋग्देव में पूर्व की तरफ मुख करके सारे कर्म किये जाते थे, वह ब्राह्मणों का युग था। द्वापर में क्षत्रियों ने यर्जुवेद ले लिया, उसमें दक्षिण की ओर मुख करके दाता बनकर कर्म करने लगे, वे यह जानने लगे की दक्षिण देश में हरि का निवास है, वैश्य लोग सामवेद को पश्चिम की तरफ मुँह करके प्रणाम करने लगे। ऋग्वेद नीले कपड़े, यर्जुवेद पीले वस्त्र तथा सामवेद पढ़ने वाले सफेद कपड़े पहन कर पाठ किया करते थे। राम कृष्ण जी के हंसों के अवतार होकर उपासक बनकर अपने अपने कार्य किया करते थे। यह थोड़ा सा सूझ बूझ में अन्तर है क्योंकि वाहिगुरू तो देश, काल, वस्तु से न्यारे हैं हर तरफ ही परिपूर्ण हैं।

अब कलयुग का समय आने पर नीच वृत्ति मनुष्य में पैदा हो गई, आयु कम हो गई, सौ वर्ष ही रह गई। सृष्टि माया ने मोह ली और कलयुग में कलह क्लेश की क्रिया ने जगत को भ्रमित कर दिया। जगत में ग्लानि पैदा हो गई, हउमै में लोक ईर्ष्या और नफरत की आग में जलने लगे, बड़े और छोटे की कदर (मान) सब भूल गया राजा अन्यायी बनकर कलयुगी कैंची की तरह संसार को विभाजित करने लगे। सारी दुनियाँ अपने कर्म से भ्रष्ट हो गई -

कलिजुगु चउथा थापिआ
सूद्र बिरति जग महि वरताई।
करम सु रिगि जुजर सिआम के
करे जगतु रिदि बहु सुकचाई।
माइआ मोही मेदनी
कलि कलिवाली सभि भरमाई।
उठी गिलानि जगत्रि विचि
हउमै अंदरि जलै लुकाई।
कोइ न किसै पूजदा

ऊच नीच सभि गति बिसराइ॥
भए बिअदली पातसाह
कलि काती उमराइ कसाई।
रहिआ तपावसु त्रिहु जुगी
चउथे जुगि जो देइ सु पाई।
करम ध्रिसटि सभि भई लोकाई॥

भाई गुरदास जी, वार 1/7

कलयुग की साधना को बताते हुये फ़रमान करते हैं कि अब कर्म, धर्म, पूजा, यज्ञ इनकी कोई पेश नहीं चलती। यह युग केवल नाम जपने के लिए भक्ति द्वारा ज्ञान प्राप्त करके, अपने भ्रम दूर करके, मुक्त होने का है। पिछले जन्मों में जो जीव ने कठिन तप किया है, उसके फल द्वारा ही इसकी मुक्ति होगी। अब इस युग में कर्म-धर्म कोई फल नहीं देते। इस युग में प्रेमा भक्ति जो पिछले जन्मों में किये गये शुभ कर्मों के कारण प्राप्त होगी, वही सफल है। धार्मक सम्प्रदायों में अन्धकार छा गया, पाखंड का बोल बाला हो गया। कलह क्लेश बढ़ गये, कोई शिला की पूजा द्वारा, कोई मड़ियों को पूजकर कोई तन्त्र मन्त्र द्वारा दुनियां में मान प्राप्त करने की लालसा में लीन है। सारी सम्प्रदायों में कलह और क्लेश बढ़ गया है। अपनी अपनी सम्प्रदायों के रास्ते अलग अलग करके चलाये, कोई धरती को शीश झुकाता है, कोई पानी की पूजा करता है, कोई आग की पूजा करता है, फोकट धर्मों में संसार भ्रमित हो गया, बुत परस्ती चल पड़ी और उस जड़ मूत के सामने अनेक भेंट अर्पत करते हैं। इस प्रकार अपने लक्ष्य से पीठ कर लेने से परमात्मा का प्यार हृदय में से निकल गया। परमात्मा द्वारा बनाये गये देवियों-देवताओं की पूजा प्रधान हो गई, ग्लानि ही ग्लानि फैल गई। अन्दर से मनुष्य नास्तिक हो गया भाई गुरदास जी इस प्रकार फ़रमान करते हैं -

कलिजुगि बोधु अउतारु है
बोधु अबोधु न द्रिसटी आवै।
कोइ न किसै वरजई
सोइ करे जोई मनि भावै।
किसे पुजाई सिला सुंनि
कोई गोरी मढ़ी पुजावै।
तंत्र मंत्र पाखंड करि
कलहि क्रोधु बहु वादि वधावै।
आपो धापी होइ कै
निआरे निआरे धरम चलावै।
कोई पूजा चंदु सूरु
कोई धरति अकासु मनावै।
पउणु पाणी बैसंतरो
धरमराज कोई त्रिपतावै।
फोकटि धरमी भरसि भुलावै॥

भाई गुरदास जी, वार 1/18

कहाँ तक बताया जाये। गुरू महाराज जी ने तो निर्णय देते हुए फ़रमान ही कर दिया है कि संसार में झूठ का प्रसार हो गया है। संसार फोकट कर्मों में फंस गया और वाहिगुरू (परमात्मा) के सीधे रास्ते आत्म मार्ग को भूलकर अनेक दिशा भ्रम कर्मों में प्रवृत्त हो गया। जिसके बारे में गुरू दशमेश पिता जी फ़रमान करते हैं -

कई अगन होत करंत।
कई उरध ताप दुरंत।
कई उरध बहु संनिआस।
कहूं जोग भेस उदास।
कहूँ निवली करम करंत।
कहूं पउन अहार दुरंत।
कहूँ तीरथ दान अपार।
कहूँ जग्ग करम उदार।
कहूँ अगन होत्र अनूप।
कहूँ निआइ राज बिभूत।
कहूँ सासत्र सिंम्रिति रीत।
कहूँ बेद सिउ बिप्रीत।
कई देस देस फिरंत।
कई एक ठौर इसथंत।
कहूँ करत जल महि जाप।
कहूँ सहत तन परताप।
कहूँ बास बनहि करंत।
कहूँ ताप तनहि सहंत।
कहूँ ग्रिहसत धरम अपार।
कहूँ राज रीत उदार।
कहूँ रोग रहत अभरम।
कहूँ करम करत अकरम।
कहूँ सेख ब्रहम सरूप।
कहूँ नीत राज अनूप।
कहूँ रोग सोग बिहीन।
कहूँ इक भगति अधीन।
कहूँ रंक राज कुमार।
कहूँ सेख नाम उचरंत।
बैराग कहूँ संनिआस।

कहूँ फिरत रूप उदास।
सभ करम फोकट जान।
सभ धरम निहफल मान।
बिन एक नाम अधार।
सभ करम भरम बिचार॥ *अकाल उस्तति*

भारत वर्ष में हिन्दू राजा राज्य करते थे और पुरोहित कर्मों धर्मों के बारे में संसार को बताया करते थे। वाहिगुरू को छोड़कर संसार फोकट धर्मों में प्रवृत्त हो गया, बड़े बड़े मन्दिर बना लिये अति सुन्दर प्रतिमाएं उसमें रख लीं पर इस बात को भूल गया कि सारी सृष्टि के प्यारे प्रभु इस मनुष्य की हृदय रूपी सेज पर बिराजमान हैं। जैसा कि गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि।
साचा वासा पुरि गगनंदरि।
असथिरु थानु सदा निरमाइलु
आपे आपु उपाइदा।
अंदरि कोट छजे हटनाले।
आपे लेवै वसतु समाले।
बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै
गुर सबदी खोलाइदा।
भीतरि कोट गुफा घर जाई।
नउ घर थापे हुकमि रजाई।
दसवै पुरखु अलेखु अपारी
आपे अलखु लखाइदा॥ *अंग - 1033*

इस्लाम धर्म के महान आचार्य मोहम्मद साहिब जी संसार के रंग मंच पर प्रकट हुए। आपने परमेश्वर द्वारा इलहाम (आकाश वाणी) हुए सिद्धान्त दुनियाँ को दिये। आपने बताया की अल्लाह एक ही है फरिश्ते उसी के बनाये हुए हैं। फरिश्तों को छोड़कर अल्लाह को प्यार करो, वह प्यार द्वारा ही वश में किया जाता है। इन्सान सभी भाई भाई हैं पर समय के फेर के साथ जो इस्लाम पर विश्वास नहीं रखते थे उन्हें काफ़िर कहा जाने लगा। उनके साथ बर्ताव भी कठोर होता गया, इस्लाम के शक्तिशाली राजा, आम तौर पर दसवीं शताब्दी में भारत में आए उस समय भारत में बहुदेव पूजा प्रचलित थी। तन्त्र विद्या शिखर पर थी। सिद्ध, जोगी, नाथ करामातें दिखाकर लोगों को भरमाते थे और उनका दृढ़ विश्वास था कि गृहस्थी होकर सिद्ध नाथ जोगी नहीं बन सकता। उन्होंने बड़े बड़े राजाओं को तख्तों से उतार कर, मुद्राएं पहना कर गुफाओं में बन्द कर दिया तथा बर्फीले पवर्तों की कन्दराओं में छिप गये। ज्योतिष का प्रभाव बढ़ गया, ज्योतिषवाद सारे भारत में फैल गया। मनुष्य अपनी मर्ज़ी से कोई भी काम नहीं कर सकता था। यदि खेत में बीज डालना हो, बच्चे का नाम रखना हो, व्याह शादी करनी हो तो भी पूछकर शुभ दिन ढूँढा करते थे। यदि पूर्व की ओर यात्रा पर जाना होता तो भी पूछकर जाया करते थे। यदि अन्य किसी दिशा में भी जाना होता तो भी पूछकर जाया करते थे। विवाह-शादियाँ सभी शुभ लगन पता करके ही की जाती थीं। वाहिगुरू के हुक्म की पहचान बिल्कुल समाप्त हो गई। यहाँ तक बोल बाला हो गया कि मैं ही सब कुछ कर सकता हूँ। वाहिगुरू परमात्मा की भक्ति का स्थान रिद्धियों सिद्धियों की प्राप्ति ने ले लिया। भारत में ग्लानि फैल गई, झूठ का प्रसार हो गया। इस्लाम वाले भारत में आए। उनके दो रूप थे, एक तो बहुत उच्च कोटि के प्रभु को प्यार करने वाले, बाबा फरीद जी जैसे सूफी थे, मयउदीन बुखतिआर काकी आदि थे तथा और भी अनेक प्रभु प्यारे आए उन्होंने यहाँ की दशा देखी कि भारत के लोग तो प्रभु को बिल्कुल ही भूल चुके हैं। उन्होंने एक अल्लाह का सन्देश दिया। बहुत से लोग इस नये मत में शामिल हो गये पर दूसरे रूप वाले जो इस्लाम को मानने वाले थे वे लालची, लुटेरे, ईर्ष्यालु, अन्धकार में फंसे हुए राजा लोग थे। उन्होंने आकर यहाँ की जनता पर अन्याय भरे जुल्म किये। दसवीं सदी से लेकर गुरू नानक पातशाह जी के संसार में प्रकट होने तक हिन्दु जनता का सांस तक ही धुट चुका था। इसके आचार्य कोई दिशा निर्देश नहीं कर पा रहे थे। फोकट धर्मों में संसार को फंसा दिया। परमात्मा के प्यार से हीन (वंचित) होकर सांस लेना भी दूभर हो गया, यहाँ तक कि अपने अस्तित्व से निराश होकर कि हम तो भेंड़ें हैं, राजाओं ने हमारे ऊपर से ऊन उतारनी है, चाहे इस्लाम का राजा आ जाये, चाहे कोई और आ जाये। वे भारत की राजनीति से बिल्कुल अलग अलग होकर साहसहीन हो गये। अनेक गलत रीतियाँ प्रचलित हो गई। विधवाओं के लिए इस समाज में कोई स्थान न रहा। उनके पति की मृत्यु हो जाने पर उन्हें शव के साथ ज़िन्दा ही जलना पड़ता था। उसे गलती से सती कहा जाता था। गुरू महाराज जी इसके बारे में फ़रमान करते हैं -

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि।
नानक सतीआ जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि॥
अंग - 787

स्त्री पुरुष का प्यार, पैसे का प्यार बनकर रह गया। सो एक घसमान छिड़ गया। भाई गुरदास जी इस प्रकार फ़रमान करते हैं -

बहु वाटी जगि चलीआ तब ही भए मुहंमदि यारा।
कउमि बहतरि संगि करि बहु बिधि वैरु विरोधु पसारा।
रोजे ईद निमाजि करि करमी बंदि कीआ संसारा।
पीर पैकंबरि अउलीए गउसि कुतब बहु भेख सवारा।
ठाकुर दुआरे ढाहि कै तिहि ठउड़ी मासीति उसारा।
मारनि गऊ गरीब नो धरती उपरि पापु बिथारा।
काफरि मुलहदि इरमनी रूमी जंगी दुसमणि दारा।
पापे दा वरतिआ वरतारा॥

भाई गुरदास जी, वार 1/20

हिन्दुओं और मुसलमानों में टक्कर हो गई। चाहे वाहिगुरू एक ही है, हिन्दुओं के शास्त्र भी इसे एक ही बताते हैं। उन्होंने अपने अपने मार्ग तय किए हुए हैं। पातंजलि योग साधना द्वारा उस परमेश्वर तक पहुँचाते हैं, वेदान्त ज्ञान द्वारा, इस्लाम वाले इबादत (भक्ति) द्वारा पहुँचाते हैं पर दोनों कौम शरा (नियमावली) में बन्द होने के कारण आपस में वैर भाव करने लगीं। भाई गुरदास जी फ़रमान करते हैं -

चारि वरनि चारि मजहबाँ जगि विचि हिंदू मुसलमाणे।
खुदी बखीलि तकबरी खिंचोताणि करेनि धिङाणे।
गंग बनारसि हिंदूआँ मका काबा मुसलमाणे।
सुंनति मुसलमाण दी तिलक जंञु हिंदू लोभाणे।
राम रहीम कहाइदे इकु नामु दुइ राह भुलाणे।
बेद कतेब भुलाइकै मोहे लालच दुनी सैताणे।
सचु किनारे रहि गिआ खहि मरदे बाम्हणि मउआणे।
सिरो न मिटे आबणि जाणे॥

भाई गुरदास जी, वार 1/21

इस संघर्ष में हिन्दुओं की हालत अति दयनीय थी, एक तो वे फोकट रस्मों में पड़ गये थे, जनेऊ पहनकर ही सन्तुष्ट रहते थे। गुरू महाराज जी ने कहा कि प्यारे! सच का तो काल ही पड़ गया। जीव जितने भी हैं वे जीव आत्मा पद छोड़कर मनुष्य बने, शरीर को अपना आपा (निजित्व) समझा। अब और नीचे खिसक कर वे मनुष्य भी न रहे, भूत बन गये। गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

कलि काती राजे कसाई धरमु पंख करि उडरिआ।
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ।
हउ भालि विकुंनी होई। आधेरै राहु न कोई।
विचि हउमै करि दुखु रोई।
कहु नानक किनि बिदि गति होई॥ अंग - 145

भाई गुरदास जी फ़रमान करते हैं -

कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु।

अंग - 1242

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई।
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई।
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसतु मुखहु आलाई।
चेले साज वजाइदे नचनि गुरू बहुतु बिधि भाई।
चेले बैठनि घराँ विचि गुरि उठि घरीं तिनाड़े जाई।
काजी होइ रिमवती वढी लै कै हकु गवाई।
इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊँ जाई।
वरतिआ पापु सभसि जगि माँही॥

भाई गुरदास जी, वार 1/30

गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल।
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि॥

अंग - 468

कलयुग के लक्षण बताते हुए गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होई सिकदारु।
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु।
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु।
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु।
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु।
मूरख पंडति हिकमति हुजति संजे करहि पिआरु
धरमी धरमु करहि गावावहि मंजगि मोख दुआरु।
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु।
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै।
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै॥

अंग - 469

ऐसे संकटपूर्ण समय में गुरू नानक पातशाह जी ने संसार के उद्धार के लिये सच का प्रकाश किया, आप जी ने ऐमनाबाद के युद्ध में प्रत्यक्ष तबाही देखी। भाई गुरदास जी ने कलयुग में मुरदार का खाजा बताया है, जायज़ नाजायज़ विधियों से धन बटोरना जो कुछ भी प्राप्त हो जाये उसे अपने लिये ही प्रयोग करना, मुरदार का खाजा हुआ करता है। राजाओं के बारे में आप बताते हैं कि राजा तो धर्म शास्त्रों में निरूपण हुआ है -

राजे चूली निआव की पड़िआ सचु धिआनु॥

अंग - 1240

राजा का कार्य होता है, प्रजा के साथ न्याय करे। उसे बेअन्त शक्तियाँ दी हुई हैं। किसी को उजाड़ देना किसी को बसा देना उसकी समर्थ में होता है। उसे कोई दोष नहीं लगता

क्योंकि उस पर प्रश्न करने वाला उससे बड़ा और कोई नहीं हुआ करता। गुरू नानक पातशाह कहते हैं कि प्यारे! अब तूने राज्य करके सब कुछ कर लिया पर जब दरगाह में जाकर लेखा देना पड़ेगा तब क्या करेगा?

गुरू नानक पातशाह के समय ऐमनाबाद का युद्ध हुआ बाबर बादशाह काबुल में राज्य किया करता था, उसका असली वतन खुरासान था। उसने उस पर अनेक हमले किये पर कामयाबी कोई न मिली। उसने फिर भारत वर्ष पर हमला किया और यहाँ पर अकथनीय जुल्म किये जिन्हें स्वंय गुरू महाराज जी ने अपने नेत्रों से देखा। गुरू महाराज जी के हृदय में दुखियों के लिये दर्द पैदा हुआ। उसने बहुत सारे आदमी पकड़कर कैदी बना लिए और चक्की पीसने पर लगा दिये क्योंकि फौज के लिए राशन की ज़रूरत थी उसमें गुरू नानक पातशाह, भाई बाला जी तथा भाई मरदाना जी भी पकड़े गये। भाई बाला तथा गुरू नानक पातशाह जी को भारी भारी गट्ठड़ियाँ सिर पर रख दीं। मरदाना जी को चार घोड़े पकड़ा दिये। ये भारी गठरियाँ गुरू महाराज जी तथा भाई बाला जी के शीश से काफी ऊँचे रहते थे। जैसे बाबा फरीद जी से जबरदस्ती वगार लेते समय उस समय के तत्कालीन राजा ने आपको ईंटें ढोने पर लगा दिया था, उनका टोकरा भी सिर से काफी ऊपर रहता था, यह कोई ऐसी बात नहीं जिस पर किन्तु परन्तु किया जाये।

तुम्हारे माता जी (बीबी रणजीत कौर जी) के पिता जी लायल पुर ज़िले में मुरबियाँ (शहर के बाहर खेतों) में रहा करते थे। भाई साहिब रणधीर सिंह जी नारंगवाल वाले जो एक महान सन्त तथा देश भक्त हुए हैं वह अपनी पुस्तक रंगले सज्जन में लिखते हैं कि जब भाई हीरा सिंह जी अपने पशुओं के लिए चारा काट कर लाया करते थे तो उस चारे का गट्ठा एक गिठ (एक हाथ) के लगभग सिर से ऊपर रहा करता था। सिर को नहीं छूता था। इसी प्रकार गुरू नानक पातशाह जी के सिर के साथ वगार गठड़ी स्पर्श नहीं करती थी। गुरू महाराज जी अपनी मौज में आकर भाई मरदाना जी से कहने लगे कि मरदाना! रबाब सुर करो, बाणी आ रही है। उसने प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह! मैंने तो चार घोड़े पकड़े हुए हैं, मुगल पीछे पीछे चल रहा है, यदि मैंने छोड़ दिये वह मुझे मारने के लिये भागेगा। गुरू महाराज जी ने कहा, मरदाना! हम गट्ठर उठाने या घोड़े पकड़ने के लिये नहीं आये हैं, छोड़ दे! घोड़े छोड़ दिये, वे अपने आप ही पीछे चलने लगे। इस प्रकार चलते चलते आप कैदियों के कैम्प में पहुँच जाते हैं। वहाँ सभी को चक्की चलाने के लिये अनाज दे दिया। भाई मरदाना जी रबाब बजा रहे हैं तथा गुरू महाराज जी कीर्तन कर रहे हैं। उस कीर्तन का ऐसा प्रभाव हुआ कि जहाँ तक गुरू महाराज जी की आवाज़ पहुँची, सभी श्रोतागण किसी अकह रस में लीन हो गये। न तो किसी का हाथ चक्की के हत्थे पर रहा, न ही कोई दूसरे हाथ से चक्की में दाना डालता था। सभी की चक्कियाँ अपने आप चल रही हैं और आटा अपने आप बर्तनों में गिर रहा है। पहरेदार भी इसी तरह किसी अनभिज्ञ रस में लीन हो गये। एक पहरेदार ने जाकर बाबर को समाचार दिया। वह स्वंय आंखों से देखने के लिये वहाँ पहुँचा। गुरू नानक पातशाह जी से प्रार्थना की कि हे फकीर सांई! मुझ से बहुत बड़ी भूल हो गई है। आप जी को साथ ले जाकर अत्यन्त सम्मान पूर्वक स्थान पर बिठाया, वह स्वंय आपके पास बैठा है। उस समय गुरू नानक पातशाह ने पूरा शबद पढ़ते हुए बाबर को एक बहुत बड़ा ताना मारा कि खुरासान पर तो तेरा ज़ोर न चला और तुझे वाहिगुरू जी ने यम का रूप बनाकर भारत वर्ष पर चढ़ाई करने भेज दिया। तेरी फौजों ने इतनी मारकाट की है, जो असहय थी। तू मनुष्य है तेरे अन्दर परमेश्वर ने दिल दिया है क्या तेरे अन्दर दर्द पैदा न हुआ इतनी कुरलाहट सुन कर भी, इतनी हाय दुहाई सुनकर भी तू बहरा ही बना रहा? हे वाहिगुरू जी! आप तो सभी के हैं फिर बाबर से कहा कि जब तुम्हारी फौजें मैदाने जंग में लड़ रही थीं उस समय तुम दोनों राजा लड़ रहे थे तुम दोनों ताकतवर थे, लोधी की फौजें हार गईं, उस समय तू इस देश का मालिक बन गया पर मालिक होते ही तूने अपनी फौजों को शहर में लूट-खसौट करने का हुक्म दे दिया। तू याद रख इस सारे विनाश का तुझे लेखा जोखा देना पड़ेगा, दरगाह में पूछताछ होगी। इन लोधी पठानों कुत्तों ने हीरे जैसे हिन्दुस्तान को कौडियों में मिला दिया। कितनी बड़ी फौज इनके पास थी। इतिहास में ऐसा आता है कि 80,000 फौजी सिपाही राजपूत सेना के राणा सांगा के थे और लोधियों की फौज इसके अतिरिक्त थी पर ये बाबर के सिपाहियों के सामने न डटे। गुरू महाराज कहते हैं कि रतनों जैसा कीमती देश यह गवाँ बैठा, मरने के बाद इन्हें किसी ने भी याद नहीं करना। बाबर! यदि कोई बड़ा नाम रखवाकर अपनी मन मूजयाँ करता है वाहिगुरू जी की दृष्टि में एक कीड़ा है विष्ठा का। यहाँ महाराज जी हउमै की तरफ संकेत करते हुए, सत्य का फ़रमान करते हुए फरमाते हैं कि आपा भाव से मर कर असली जीवन जीया जाये तब दरगाह में प्रवान होता है। अहंकारी के लिए दरगाह में कोई जगह नहीं है। पूरा शबद इस प्रकार है -

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ।
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ।
एती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आइआ।
करता तूं सभना का सोई।
जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई।
सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई।
रतन विगाड़ि विगोए कुती मुइआ सार न काई।
आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई।
जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे।
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे।
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे॥
अंग - 360

इस शबद में गुरू महाराज जी के वचनों को पढ़ सुनकर हमारे विद्वान यह कहने में संकोच नहीं करते कि गुरू नानक पातशाह ने परमात्मा को उलाहना दिया था पर जब हम इतिहास में बहुत गम्भीरता पूर्वक विचार करते हैं, उस समय पता चलता है कि गुरू नानक पातशाह जब पहली बार ऐमनाबाद में भाई लालों के पास आये उस समय आप जी ने -

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥
अंग - 722

का शबद 1569 में उच्चारण किया था। उस समय गुरू महाराज जी ने जो भविष्य में होने वाली घटना देखी थी उसके अनुसार आपने फ़रमान किया -

काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी
हिदुसतानु समालसी बोला॥ *अंग - 723*

सारा शबद जो उस समय उच्चरित हुआ वे भविष्य वाणी थी जैसा कि -

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।
पाप की जंझ लै काबलहु धाइआ
जोरी मंगै दानु वे लालो।
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कूड़ु फिरै परधानु वे लालो।
काजीआ बामणा की गल थकी
अगदु पड़ै सैतानु वे लालो।
मुसलमानीआ पड़िहि कतेबा
कसट महि करहि खुदाइ वे लालो।
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ
एहि भी लेखै लाइ वे लालो।
खून के सोहिले गावीअहि नानक
रत का कुंगू पाइ वे लालो।
साहिब के गुण नानकु गावै
मास पुरी विचि आखु मसोला।
जिनि उपाई रंगि रवाई
बैठा वेखै वखि इकेला।
सचा सो साहिबु सचु तपावसु
सचड़ा निआउ करेगु मसोला।
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी
हिदुसतानु समालसी बोला।
आवनि अठतरै जानि सतानवै
होरु भी उठसी मरद का चेला।
सच की बाणी नानकु आखै
सचु सुणाइसी सच की बेला॥ *अंग - 722*

जब इस शबद को गौर से पढ़ते हैं तो यह भविष्य वाक्य मालूम होते हैं क्योंकि इस 'टुक टुक होसी' 'सम्भालसी' 'उठसी' सभी क्रियाएं भविष्य में होने वाली बताई जा रही है। सो यह शबद बताता है कि बाबर के काबुल से चलने से पहले के ये वाक्य हैं -

हिन्दुस्तान को बोल जो आन समालहि सोइ।
पंदरहि सै पुन अठतरे आवन तिन के होइ।
चौपाई। सत्रां सै सतानवे मांही।
सफा दूर तिन की हवै जाही।
दोसै बहुरो बरख उनीसं।
करहिं राज होवहि अवनीशं॥ ३८॥
नर अवतार हमारा होइ।
चेला तांहि खालसा जोइ।
दस पातिशाही करिहों जबही।
पीछै होइ खालसा तबही॥ ३९॥
सनै सनै सो लेवहि छीनं।
तब तुरकन होवहि बल हीनं।
करहिं परसपर मेल जि सोऊ।
बधै राज दुशटन घर खोऊ॥ ४०॥
आपस महिं जे करहिं लराई।
रिस बसि हुइ कै, सो दूख पाईं।
नानक बाणी सच्च वखानहि।
परगट हवै नर तबही जानहिं॥ ४१॥
श्री गुर प्रताप सूरज ग्रन्थ

जब गुरू महाराज जी को सारी लीला का पता था फिर वाहिगुरू जी को उलाहना देने का प्रश्न ही नहीं उठता। गुरू महाराज जी स्वंय अकाल पुरुष परमेश्वर का रूप थे, उन्होंने

जो हमें सिद्धान्त दिया है वह है -

हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि॥

अंग - 1

गुरू नानक के सिद्धान्त में उनके अनुयायी हुक्म को पूरी तरह मानते हैं, इस्लाम वाले भी हुक्म को पूरी तरह मानते हैं। हमारे विद्वान जो यह अर्थ किया करते हैं कि परमात्मा को उलाहना दिया, चाहे मधुर भाषा का प्रयोग करके या कड़वी भाषा बोलकर दिया वे यह भूल जाते हैं कि गुरू नानक पातशाह कौन थे? इससे तो ऐसा लगता है कि उस कत्लेआम को देखकर, हुक्म की क्रिया में से हुक्म के मण्डल में से, गुरू नानक पातशाह सांसारिक मण्डल में बातें करने लगे, यह कभी भी नहीं हो सकता। गुरू महाराज जी कहते हैं कि जिन्होंने हुक्म को पहचान लिया उन्हें परमेश्वर का द्वार सूझ जाता है -

जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा।
जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा॥

अंग - 523

हुकमी सभे ऊपजहि
हुकमी कार कमाहि।
हुकमी कालै वसि है
हुकमी साचि समाहि।
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ
इना जंता वसि किछु नाहि॥ *अंग - 55*

पाताल पुरीआ लोअ आकारा।
तिसु विचि वरतै हुकमु करारा।
हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा॥

अंग - 1060

जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा।
हुकमु बूझै सो सचि समाणा॥ *अंग - 193*

सो यह इन पढ़े लिखों का निर्मूल विचार है क्योंकि ये स्वतन्त्र अर्थ किया करते हैं, प्रासंगिक अर्थ नहीं कर रहे। यह सभी कुछ लिखने का भाव यह है कि उस समय भारत वर्ष में हमलावर पश्चिमी देशों से आकर यहाँ की जनता चाहे इस्लाम धर्म को मानने वाली थी या हिन्दु थे उन सभी पर अवर्णनीय अत्याचार किये जाते थे परन्तु इस्लाम धर्म वालों का तो थोड़ा बहुत बचाव हो जाता था पर यहाँ के हिन्दु निवासियों पर बहुत ही अत्याचार किये जाते थे।

इस्लाम में तत्व को पहचानने वाले सूफी पीर सारी सृष्टि को प्यार किया करते थे और तत्व ज्ञान का उपदेश दिया करते थे, भाव वह जोहद (ताकत) बहुत अधिक किया करते थे रिआज़त (जनता) कम थी क्योंकि इस्लाम में पीर परस्ती पर बहुत अधिक ज़ोर नहीं दिया गया, इसलिये आम मुसलमान शरां के पाबन्द रहते हुए शरीअत से आगे हकीकत मार्फत तक कम ही उन्नति करते थे पर सूफी मार्फ़त, हकीकत में से गुज़रते हुए सात वादियों, वादी-ए तलाश, वादी-ए-इश्क, वादी-ए-मार्फत, वादी-ए-महिवीअत, वादी-ए-वहदीअत, वादी-ए-नूर, पार करके वादी-फनाह-फिनाह-फिलाह तक पहुँच कर परमात्मा का रूप हो जाया करते थे। वे तो सत्य का सन्देश दिया करते थे। मज़हब की तबलीग (धर्म परिवर्तन) जबरदस्ती नहीं करते थे पर इसके विपरीत खलीफा का यह कर्तव्य हुआ करता था कि वह इस्लाम को सारी दुनियाँ में फैलाए। जो इस्लाम को नहीं मानते थे उन्हें काफ़र कहा जाता था। चाहे कोई भी हो, जो मनुष्य मोहम्मद साहिब पर विश्वास नहीं रखते, उन्हें वार-ए-गाह (दरगाह) में स्थान नहीं मिलेगा इसलिये वे सारी दुनियाँ को सदा ही इस्लाम में मिलाने के लिये तत्पर रहते थे। इस खलीफाओं में से बगदाद के खलीफे बहुत ही तत्पर थे। वे इस्लाम के विरूद्ध इस्लाम के विश्वास से इधर उधर कोई भी बात सहन नहीं करते थे। यदि कोई इस्लाम की मान्यता से ऊँची अवस्था का ज़िक्र करता उसे काफिर कहा जाता था जिसे मार देना या इस्लाम के घेरे में लाना, मौलवियों, काज़ियों, उल्माओं का परम मनोरथ तथा रूहानी कर्तव्य हुआ करता था जो उस राज शक्ति द्वारा या मज़हबी जनूनी (पागलपन) शक्ति द्वारा पूरा करवाया करते थे।

गुरू नानक पातशाह जब बगदाद में पहुँचते हैं तो वहाँ आप ने वाहिगुरू जी की अनन्तथाको प्रकट करते हुए फरमाया -

पाताला पाताल लख आगासा आगास।
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात।
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु।
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु।
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु॥ अंग - 5

और रबाब बजाकर कीर्तन किया जिसकी बगदाद में मनाही थी। हिन्दी समझने वाले किसी मुरीद (शिष्य) ने समझा था, ने जाकर पीर दस्तगीर को यह बात बता दी कि बगदाद में कोई काफ़र आकर कुफर (जुल्म) तोल रहा है (जुल्म कर रहा है) वह नदी किनारे सरोद भी बजा रहा है तथा पाताला-पाताल कह रहा है। पीर एक दम भड़क उठा। उसने कहा

कि उन्हें संगसार (पत्थरों द्वारा मार देना) कर दिया जाये और सारे शहर को हुक्म का पालन करने का आदेश दे दिया।

गुरू नानक पातशाह के पास जाकर वह ईंट पत्थर न मार सके, जड़ रूप होकर खड़े हो गये। अन्त जब पीर ने होश में आकर गुरू नानक पातशाह के पास प्रार्थना की कि इनकी जड़ता दूर करो तब गुरू नानक पातशाह ने कहा पीर जी! तुम्हें ऐतराज किस बात का हुआ? मैंने तो तुम्हारा कोई कसूर नहीं किया। अल्ला ताला की स्तुति में मैं लीन था, और अकारण ही तुमने हमें पत्थर मार कर मारने का आदेश दे दिया। क्या बात है आप अल्लाह को नहीं मानते। उसकी प्रशंसा भी सहन नहीं कर सकते। पीर ने लाखों आकाश, लाखों पाताल की बात करते हुए कहा कि हमारे विश्वास में केवल सात पाताल और सात ही आकाश हैं। गुरू महाराज जी ने कहा पीर जी! किसी की नज़र 200 गज़, 400 गज़ की दूरी तक देख सकती है, कोई मील-डेढ़ मील तक देख सकता है, किसी की रूहानी दृष्टि बेअन्त खण्ड ब्रह्मण्ड देख सकती है, किसी की सात ही देखती है इसमें किस बात का शोर शराबा? अल्लाह बेअन्त है ला-महदूद है **infinity** है। तुम्हें सात आकाश पाताल दिखाई देते हैं हमें असंख्य दिखाई दे रहे हैं। पीर दस्तगीर ने कहा कि क्या दिखा सकते हो? गुरू महाराज जी ने पीर से कहा आओ तुम्हें दिखायें। पीर बूढ़ा था अपने पुत्र बहिलोल को साथ ले जाने के लिये कहा। पीर के तकरार (बहस) करने पर गुरू महाराज जी ने उसके पुत्र बहलोल को भी साथ ले लिया और पलक झपकने जितने समय में लाखों पाताल, आकाश दिखाये ही नहीं बल्कि एक कचकौल (कच्चे कोयले का मिट्टी का बर्तन) में हर जगह से प्रसाद लेकर जब फिर दृष्टिमान हुए तब उसके बेटे ने कहा कि अब्बा जान! यह खुदाइ है। भाई गुरदास जी लिखते हैं -

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो
बाहरि जाइ कीआ असथाना।
इकु बाबा अकाल रूपु
दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बाँगि निवाजि करि
सुनि समानि होआ जहाना।
सुंन मुंनि नगरी भई
देखि पीर भइआ हैराना।
वेखै धिआनु लगाइ करि
इकु फकीरु वडा मसताना।
पुछिआ फिरिकै दसतगीर
कउण फकीरु किसका घरिआना।
नानक कलि विचि आइआ
रबु फकीरु इको पहिचाना।
धरति आकास चहू दिसि जाना॥

भाई गुरदास जी, वार 1/35

पुछे पीर तकरार करि
एहु फकीरु वडा अताई।
एथे विचि बगदाद दे
वडी करामाति दिखलाई।
पाताला आकास लखि ओड़कि
भाली खबरि सुणाई।
फेरि दुराइन दसतगीर
असी भि वेखा जो तुहि पाई।
नालि लीता बेटा पीर दा
अखी मीटि गइआ हवाई।
लख आकास पताल लख अखि
फुरक विचि सभि दिखलाई।
भरि कचकौल प्रसादि दा
धुरो पतालो लई कड़ाही।
ज़ाहर कला न छपै छपाई॥

भाई गुरदास जी, वार 1/36

गड़ बगदादु निवाइ कै
मका मदीना सभे निवाइआ।
सिध चउरासीह मंडली खटि
दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जीती
धरती जगत सबाइआ।
जीते नव खंड मेदनी
सतिनामु दा चक्र फिराइआ।
देव दानो राकसि दैत सभ
चिति गुपति सभि चरनी लाइआ।
इंद्रासणि अपछरा
राग रागनी मंगलु गाइआ।
भइआ अनंद जगतु विचि
कलि तारन गुरु नानक आइआ।
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ॥

भाई गुरदास जी, वार 1/37

उपर्युक्त लिखने से भाव है कि खलीफा इस्लाम के प्रचार का उत्तरदायी हुआ करता था। जिस प्रकार इस्लाम के

प्रचार का खलीफे फर्ज़ (कर्तव्य) पूरा किया करते थे, धर्म से पतित होने वाले को सजा दे, कुफ्र को खत्म करे तथा गैर मुसलमानों को अपने से बहुत नीचा रखे, यह बादशाहों का कर्तव्य हुआ करता था। बादशाहों ने इस्लाम के प्रचार के लिये अधिकाधिक जोर जबरदस्ती से काम लिया। गैर मुसलमानों को अपने जीने के लिये जजिया (एक प्रकार का टैक्स) जैसा असह टैक्स देना पड़ता था। उन्हें नौकरी नहीं दी जाती थी। खलीफा हज़रत उमर 634-640 ई. में हुआ है उसने मिश्र, स्याम, ईरान पर अधिकार करके एक महान साम्राज्य में बदल दिया उस समय उत्तरी भारत में बहुत ही शक्तिशाली सम्राट हर्ष वर्धन हुआ करता था। हर्ष वर्धन एक सफल प्रभावशाली तथा योग्य योद्धा था। हज़रत उमर और हर्ष वर्धन में बहुत भारी अन्तर था। सम्राट हर्ष वर्धन के समय उत्तरी भारत में किसी की हिम्मत न पड़ी कि यहाँ आकर पैर जमा सकता। इसकी राजधानी कन्नौज थी। 40 वर्ष बहुत योग्यता से राज्य करने के उपरान्त 648 ई. में हर्ष वर्धन की मृत्यु हो गई। भारत में अन्धेरा दिखाई देने लगा। एक महान योद्धा संसार के रंग मंच से अलोप हो गया। एक बहुत बड़ा साम्राज्य छोटे छोटे अनगिनत राज्यों में बंट गया। 600 ई. से 1000 ई. तक सारा पंजाब राजपूतों की छोटी छोटी रियासतों में बंटा हुआ था, ये राजे अपना हित (स्वार्थ) देखा करते थे इन्हें भारत के साथ कोई स्नेह नहीं था और एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर दिखाने के लिए परस्पर ईर्ष्या तथा फूट का शिकार हो गये। ये रियासतें, देश भक्ति तथा राजसी एकता के सिद्धान्तों से बिल्कुल खाली थे। यह 400 वर्षों का समय भारत की किस्मत के लिए एक गम्भीर समय था। इसकी राष्ट्रीय भावना कम हो गई थी। टुकड़े-टुकड़े हुए भारत को संकट में लाकर फैंकने की नीति इन छोटे छोटे राजाओं की महान गलती के कारण है। 711 से लेकर 714 ई. तक एक अरब जरनैल मोहम्मद बिन कासिम थोड़ी सी फौज के साथ सिन्ध तथा मुलतान पर अधिकार जमा बैठा। वह कश्मीर को भी अपने अधिकार क्षेत्र में मिलाना चाहता था उस समय कश्मीर को पाँच माहीअत कहा जाता था। इसी प्रकार एक और खुरासान का गर्वनर अरब जरनैल कुतैबा काबुल के आस-पास अरबों का राज्य स्थापित कर रहा था। पंजाब की उत्तरी सीमा पर एक शक्तिशाली राज्य कश्मीर था, उसके ऊपर कारकोट, उतपल फिर राज घरानों ने राज्य किया। इन्होंने सातवीं सदी से ग्याहरवीं सदी तक पंजाब के इतिहास पर गहरा प्रभाव डाला।

इस समय के दौरान कन्नौज का राजा भोज बहुत ही शक्ति के साथ राज्य कर रहा था। राजा भोज का उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल भी काफी ताकतवर राजा सिद्ध हुआ। जलन्धर के चौहान राज्य में राजपूतों का राज्य था। लाहौर के चौहान राजा गक्खड़ों से भयभीत रहते थे। उस समय पंजाब में एक ताकतवर राजा जय पाल रंग मंच पर आया। उसका राज्य सरहन्द से लेकर मुलतान कश्मीर तक शक्तिशाली राज्य था। उसके मुकाबले पर उस समय सुबकतदीन गज़नी में जहाँ खानदानी गुलामों का राज्य था एक शक्तिशाली बादशाह हुआ है। जयपाल तथा गज़नवी बादशाहों के आपसी काफी संघर्ष हुए। उस समय उत्तरी भारत में बहुत छोटे छोटे राजा थे जिस समय महमूद बहुत बड़ी फौज़ लेकर भारत पर हमला करने आया तब जयपाल ने राजपूत राजाओं को इकट्ठा करके उसका डटकर सामना किया। महमूद 22000 सैनिकों को मरवाने के पश्चात वापिस चला गया।

सुबकतद्दीन तथा गौरी बादशाहों के साथ केवल जयपाल अकेला ही लड़ता रहा और राजा कोई भी उसकी सहायता के लिए न आया क्योंकि भारत वर्ष के राजा एक दूसरे के साथ बहुत ही ईर्ष्या किया करते थे। इस फूट ने हिन्दुस्तान को तुकस्तान तो बना ही देना था पर तुर्क बादशाहों के गर्वनर (राज्य) ही उन्हें विपदाओं में डाले रखते थे एक या दो हमेशा ही नाराज़ तथा रुष्ट रहते थे। जिसका परिणाम यह निकला कि भारत का काफी बड़ा भाग हिन्दू ही बना रहा।

पंजाब की स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए हिन्दू राजाओं ने गजनवी तुर्कों के साथ 910-1026 ई. तक बहुत कठिन संघर्ष जारी रखा। इस संघर्ष का आरम्भ अलपतगीन के गज़नी के अधिकार के समय हुआ। अलपतगीन ने गज़नी पर अधिकार करने के बाद हिन्दू राजाओं के साथ युद्ध किए काबुल में हिन्दू राजाओं का अधिकार था। काबुल की लड़ाई हिन्दू राजाओं की अलपतगीन के साथ पहली टक्कर थी।

हिन्दू राजाओं ने गज़नी को फिर जीत लिया था उस समय पंजाब में जयपाल 965-1001 ई. तक रहा जहाँ उसे पश्चिम की ओर से तुर्क बादशाहों का डर था, वहाँ कन्नौज के राजाओं की ओर से भी उसे सदा चौकन्ना रहना पड़ता था। काबुल जयपाल के राज्य में शामिल था। जयपाल ने बहुत सफल नीतियों रीतियों से हमलावरों से रक्षा की पर बार बार के आक्रमणों ने जयपाल को पीछे हटने के लिये विवश कर दिया।

महमूद उस समय के फौजी उपद्रवों में काफी मज़बूत था। वह 15 वर्ष का था जब उसने 986-87 ई. में जयपाल

के साथ युद्ध किया। जयपाल चाहे वृद्ध हो चुका था पर उसका हौंसला उसी प्रकार कायम था। जयपाल का पुत्र अनन्दपाल भी इसी प्रकार आक्रमणों से उत्तरी सीमा की रक्षा करता रहा।

1002 से 1012 ई. तक जयपाल का पुत्र अनन्दपाल पूरी तरह से पंजाब की रक्षा करता रहा। उस समय भटिन्डे में एक ताकतवर राजा था जिसका नाम बिजी राये था, वह राज्य किया करता था। वह महमूद से हार खा गया उसने आत्म हत्या कर ली। इसमें अनन्दपाल का दोष था उसने बीजी राये के साथ मिलकर संघर्ष न किया। महमूद के साथ अनन्दपाल पेशावर में जाकर भिड़ गया, वह युद्ध जीतने ही जा रहा था पर अचानक उसके हाथी को गोला लगा और वह हाथी को छोड़कर घोड़े पर सवार हो गया। फौज़ ने उसे मरा हुआ समझकर जीती हुई लड़ाई में से भागना शुरू कर दिया। इस युद्ध में 30,000 खोखर (गक्खड़) अनन्दपाल के साथ मिले हुए थे पर हाथी के घायल होने के कारण जीती हुई लड़ाई हार गये। महमूद के 5000 सिपाही थोड़े से समय में ही मार डाले गये। हारी हुई फौज ने हफड़ा-दफड़ी में जिधर जिसका मुँह था उधर भाग खड़ी हुई। इस प्रकार महमूद को भारत पर आक्रमण करने का रास्ता मिल गया।

महमूद ने थानेसर पर हमला किया। अनन्दपाल उसे रोकने में सफल न हो सका। महमूद को मन्दिरों में से काफी धन प्राप्त हुआ। एक मन्दिर में से अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त 70,000 मन सोना प्राप्त हुआ। हीरे जवाहरातों की संख्या का तो कोई अनुमान ही नहीं इसलिए उसने प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ने शुरू कर दिये। अनन्दपाल की मृत्यु के पश्चात त्रिलोचनपाल तथा उसका पौत्र भीम पाल भारत की रक्षा करने लगे। महमूद ने 1013 ई. में अचानक त्रिलोचन पाल पर हमला कर दिया, वह पूरी तरह से उस समय युद्ध के लिये तैयार नहीं था। इसलिए वह हार गया। कुछ गलतियों के कारण त्रिलोचन पाल को अपनी राजधानी सरहन्द कायम करनी पड़ी, उस समय हिन्दू राजा आपस में लड़ रहे थे। महमूद को अवसर मिल गया क्योंकि त्रिलोचन पाल चान्द राय के साथ युद्ध लड़ रहा था। वह मार-धाड़ करता हुआ कन्नौज तक चला गया। 1018 ई. में उसने यमुना को पार किया, यू. पी. के वरन शहर को लूटा। वहाँ का राजा हरदत्त 10,000 साथियों सहित इस्लाम कबूल करके बच गया।

उस समय एक और राजा जिसका नाम कुल चन्द था उसे हार मिली। उसने अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए अपनी रानी का कत्ल कर दिया और बाद में स्वंय आत्म हत्या कर ली। महमूद के लिए आगे का रास्ता साफ हो गया और उसने मथुरा में बने आलीशान मन्दिर तुड़वाकर ढेर कर दिये। कन्नौज़ का राजा बिना युद्ध किये ही भाग खड़ा हुआ। त्रिलोचन की 1021-22 ई. में मृत्यु हो गई। पंजाब पर गज़नवियों का राज्य हो गया। महमूद ने एक एक करके भारतीय राजाओं को करारी हार दी। सोमनाथ के मन्दिर को 1025-26 में लूटा। इस समय के दौरान पश्चिम की ओर से एक के बाद एक लुटेरा भारत पर हमला करता रहा तथा यहाँ राजपूत हिन्दू राजा इतने कमज़ोर हो गये थे कि कईयों ने डर के मारे इस्लाम धर्म कबूल कर लिया। अपनी लड़कियों की डोलियाँ इनके साथ भेज दीं।

पृथ्वी राज और जयचन्द की फूट ने जो थोड़ी बहुत कसर रहती थी, वह पूरी कर दी। राजपूतों ने सिर हथेली पर रखकर युद्ध किये पर आपस में इकट्ठे न होने के कारण हार का मुँह देखते रहे अनेक राजा गुरू नानक पातशाह के प्रकट होने से पहले भारत में पूरी तरह से इस्लाम के राजा राज्य कर रहे थे। उस समय लोधी वंश का राज्य था। भारत वर्ष में काफी ताकतवर राजा हो चुके हैं जैसे विक्रमाजीत ने ततारी लोगों को भारत में से बाहर निकाल दिया था इसी तरह स्वांग राजा बहुत मज़बूत था। इस्लामी राजाओं ने दो काम बहुत ही सख्ती से किये। एक तो यहाँ भारत वर्ष में हिन्दुओं के मन्दिर तोड़े दूसरा हज़ारों देश वासियों को काफिर कहकर उनका कत्ल किया। 1283 में कुतुबदीन ऐबक ने मेरठ शहर जीता तो इस खुशी में 700 मन्दिर तोड़कर मस्जिदें बनवाई। मेरठ का राजा बंस पाल तो शहीद हो गया और उसके वंश का 3000 आदमी कत्ल करके उनके खून से मूतयों को नहलाया गया और खून में चूना मिलाकर मस्जिदें तैयार करवाई गईं। कोयल शहर की रानी जगदेई ने मरदाना भेष धारण करके बहुत बहादुरी के साथ युद्ध किया। उसके राज्य के भी सारे मन्दिर तोड़कर 23 मस्जिदें तैयार की गईं। शहर कलन्जर के 113 मन्दिर तुड़वा कर मस्जिदें बनवाई तथा 33000 हिन्दू ऐसा कत्ल हुआ जिन्होंने कलाम पढ़ने से इन्कार कर दिया था। 50,000 हिन्दू बच्चे तथा लड़कियाँ गुलाम बनाकर गज़नी भेज दिये गये। जिन्होंने इस जब्र जुल्म से डरकर इस्लाम कबूल कर लिया, उनकी कोई संख्या ही नहीं बताई जा सकती बहुत से राजा मुसलमान बनकर इन हमलावरों का साथ देने लग पड़े और अपनी प्रजा को भी इस्लाम धारण करने का उपदेश देकर बड़ी कठिनाई से जीवन जीते रहे।

तवारीख अलाई में अमीर खुसरो लिखता है कि फिरोजशाह खिलजी ने दक्षिण देश के राजा बीर सैन का मुल्क जीतकर तीन बार इस्लाम वालों से ऐसा लुटवाया जो अन्न, वस्त्र कुछ भी न छोड़ा तो भी काफिरों ने दीन इस्लाम को कबूल न किया और कत्ल कर दिये गये। उस समय सभी भारतीय मिट्टी के माधो नहीं थे, उनमें अशाख थी। अल्लाउदीन खिलजी का हाल मीर अबदुल्ला ने लिखा है कि यह बादशाह अपने दीन की उन्नति के लिए दूसरा खलीफा उमर था। उसने शहर खम्भात सहित देश को दीन मनवाने के लिये ऐसे कष्ट दिए जिनकी वज़ह से कई हज़ार काफिर मारी से भर गया पर मोमन न हुआ। उड़क लश्कर (बहुत अधिक संख्य में फौजी) को इस राज्य के शहरों को लूटने का हुक्म दे दिया, उस देश का सोना, चांदी, हीरे मोती, रेशमी कपड़े इतने लूटे कि ये फौजी अमीर हो गये। ये बादशाह की नौकरी छोड़कर दो चार लड़के लड़कियाँ लेकर अपने देश चले गये।

तवारीख अलाई में लिखा है कि अल्लाऊदीन ने एक दिन काज़ी से पूछा कि हिन्दू काफरों के लिए शरां क्या फ़रमान करती है? तब काज़ी ने अर्ज़ की कि हिन्दू धरती माफिक (उचित) है, इनसे मोमन चान्दी मांगे तो यह सोना निकाल कर दे दें। हिन्दू काफ़र कमांद (गन्ना) हैं जितना निचोड़ा जाए उतना ही रस देते हैं। यदि मोमन थूके तो हिन्दू खुशी खुशी उसे भी स्वीकार करके चाट ले, खुदावन्द करीम ने हिन्दू मोमनों की खिदमत (सेवा) के लिये पैदा किये हैं।

अमीर खुसरों मोहम्मद तुगलक बादशाह के बारे में लिखता है कि इस बादशाह जैसा दबदबा और किसी बादशाह का नहीं हुआ जब वह चढ़ाई करता था तो सौ-सौ कोस (मील) आगे भगदड़ मच जाती और मुलक उजाड़ हो जाता था। दो सौ जल्लाद इसने रखे हुये थे और एक हज़ार हिन्दू की लाश इसके दरवाज़े के सामने हर समय पड़ी रहा करती थी। सो इन सारे हालातों का हवाला तवारीख गुरू खालसा में ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने बहुत ही विस्तार से दिया हुआ है।

ऐसे ऐसे तसीहे (यातनाएं) दिये जाते थे जिन्हें पढ़ा जाना भी बहुत कठिन है, इस भग-दड़ में हिन्दुओं को सहारा देने वाला कोई न रहा।

गुरू नानक पातशाह जी जब संसार में प्रकट हुए, उस समय हर जगह पर जुल्म का राज्य था। गुरू नानक पातशाह ने सच का ढिढोंरा पीटा और बेहिस (दुखी) हुई प्रजा की हालत देखकर ऊँची आवाज़ में ढिढोरा देते हुए कहा -

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।
अंग - 145

राजा कसाई हो गये, मज़हब के नाम पर कत्ले आम करके कभी भी अल्लाह ताला प्रसन्न नहीं हुआ करता। उन्होंने बाबर को ज़ाबर (जालिम) कहा तथा भारत वर्ष में एक ऐसी जाग्रति पैदा कर दी कि हर व्यक्ति के अन्दर एक एहसास जागा कि कायर होने की बजाय शरीर का बलिदान कर देना कहीं अधिक सुखदायी है।

गुरू दूसरे पातशाह जी ने हुमाँयु को ताड़ना दी कि तू शेरशाह सूरी से हार खाकर यहाँ आकर तलवार का डर दिखाता है, कहाँ चली गई थी तेरी बहादुरी जब तूने शेरशाह सूरी से मात खाई थी।

गुरू तीसरे तथा चौथे पातशाह के समय अकबर का न्यायकारी राज्य था तथा प्रजा ने सुख की सांस ली। वह बहुत शक्तिशाली तथा न्यायकारी बादशाह था। उसने सभी सम्प्रदायों का सम्मान किया और नाजायज़ लगाये गये टैक्स समाप्त कर दिये। वह वास्तव में ही प्रजा पालक बादशाह था पर जल्दी ही उसकी मृत्यु के पश्चात जहाँगीर तख्त पर बैठा। उसे इन्साफ परवर बादशाह कहा करते थे पर गुरू अर्जुन पातशाह जी की शहीदी को देखते हुए यह पदवी शोभा नहीं देती।

गुरू पाँचवे पातशाह ने अपना बलिदान देकर सारे भारत वासियों के जीवन में एक नई धारा उत्पन्न कर दी। अन्याय के सामने सिर झुकाने की अपेक्षा शहीद हो जाना उत्तम होता है।

गुरू छठे पातशाह जी ने भारतीय मान मर्यादा को हुंकारा तथा बादशाही फौज़ों के साथ चार भयानक युद्ध करके विजय प्राप्त की। कई लेखक इस बात पर प्रश्न उठाते हैं कि गुरू नानक केवल रूहानी आगू थे, वे युद्ध नहीं किया करते थे पर गुरू छठे पातशाह गुरू हरगोबिन्द साहिब जी ने स्वंय युद्ध किये। इसमें कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर टीका टिप्पणी की जाये। यदि कोई परिवार शान्ति के साथ रह रहा है, वह अपनी यथा शक्ति दान पुण्य भी कर रहा है। यदि कोई डाकू उनके घर में घुस कर औरतों की इज़्ज़त लूटे और अपमानित करे तो उसके सामने खामोश़ होकर बैठे रहना कहाँ तक उचित है? यह एक नपुसंग कायरता हुआ करती है। कृष्ण महाराज जी ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए इस बात का पूरी तरह निर्णय करवाया कि क्षत्रिय का धर्म अन्यायियों से धर्म की रक्षा करवाना हुआ करता है। अध्यात्मवाद देह

हंगता को तोड़ता है और आत्म साक्षात्कार करवाता है, उसके सारे कार्य हुक्म में हुआ करते हैं। हुक्म अधीन होकर उस का युद्ध में वीरता दिखाना हुक्म की ही क्रिया हुआ करती है। गुरू छठे पातशाह महाराज जी ने चाहे चार बार फौज़ों को मात दी पर एक इन्च स्थान पर भी कबज़ा न किया। जिन हमलावर फौज़ों के सिपाही घायल हो जाया करते थे उन सभी को पूरी तरह से ठीक करके बादशाह के पास किसी जिम्मेवार की देख रेख में भेज दिया करते थे। गुरू महाराज सच का जीवन जीने की जांच बता रहे थे। जिसमें -

भै काहु को देत नहि नहि भै मानत आन॥

अंग - 1427

का उच्च मानवीय कर्तव्य पूरा किया जाता था। गुरू साँतवे पातशाह औरंगजेब के बुलाने के उपरान्त भी दिल्ली नहीं गये और न ही किसी प्रकार का भय मन में रखा। एक बात मैं यहाँ बता देना चाहता हूँ कि आध्यात्मवाद नपुंसकों का इकट्ठ नहीं हुआ करता, उनमें दोनों प्रकार की शक्ति हुआ करती है, जाबर (अत्याचार) का मुकाबला कर सकते हैं और रूहानी शक्ति का प्रभाव मन मर्जी करने वाले मनुष्यों पर डाल कर उन्हें सीधे रास्ते पर चला सकते हैं। गुरू महाराज जी के सिख बेअन्त शक्तियों के भण्डार थे सब कुछ होते हुए वह नाटक चेटक से दूर ही रहते थे पर परोपकार वश वे सब कुछ कर सकते थे। न तो उन्हें कोई नदियों के तूफानी वेग रोक सकते थे न ही कोई वैरी उन्हें मार सकता था। भाई मति दास जी ने गुरू तेग बहादुर जी की शहीदी के समय जब कहा कि आज्ञा दीजिए मैं लाहौर से लेकर दिल्ली तक तबाही मचा दूँ। गुरू महाराज जी ने कहा कि यह शक्ति गुरसिखों में अकसर आ जाया करती हैं तेरे लिये कोई मुश्किल बात नहीं है तू ऐसे कर सकता है पर हमने इन रूहानी शक्तियों का प्रयोग नहीं करना है। सबसे बड़ी शक्ति यह हुआ करती है कि अन्दर आत्म साक्षात्कार हो जाये और नाम मण्डल में निवास करके प्रभु के देश में निवास कर लें। निर्वाण पद की प्राप्ति हो जाना ही सबसे बड़ी करामात है। गुरबाणी में ऐसा फ़रमान आता है -

बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है
धिगु सिधी धिगु करमाति।
सा सिधि सा करमाति है
अचिंतु करे जिसु दाति।
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै
एहा सिधि एहा करमाति॥ *अंग - 650*

आप कहने लगे, ''मतीदास! ये रिद्धियाँ, सिद्धियाँ माया मण्डल की वस्तुएं हैं। आत्मा अमर है, इसे न कभी काटा जा सकता है, न ही जलाया जा सकता है, न सूरज इसे सुखा सकता है, न समुद्र डुबो सकता है, यह परम ज्योति है। शरीर नाशवान है। आज तक किसी का भी शरीर नहीं रहा हमने प्रजा के दुःख दूर करने के लिए अपने शासकों को सुमति देने के लिए अपना बलिदान हंसते हुये देना है। प्रजा में पैदा हुआ भय तथा बेदिली महापुरुषों द्वारा दी गई शहीदी के बिना दूर नहीं हुआ करती। सो सबसे बड़ी करामात यह है कि पूर्ण चित्त रहते हुये देह हंगता को छोड़कर आरे से दो फाड़ होता हुआ भी प्रभु के साथ लिव लगाकर ही रखना।'' गुरसिखों में अनेक शक्तियाँ थीं पर उन्होंने एक मार्ग दर्शन करना था जिसकी वज़ह से युद्धों में भाग लेना और शहीदी प्राप्त करना, अगम्मी हुक्म की इस दुनियाँ के मंच पर एक खेल था। इन सारे हालातों को देखते हुए गुरू दशमेश पिता जी ने एक बहुत बड़ी करामात की जिसे समझ पाना बहुत ही कठिन है। पिछले वर्ष की वैशाखी के समय *'पूरी हुई करामात'* के शीर्षक के अर्न्तगत इस विषय पर काफी विचार किया गया था। भारत में कर्म काण्डों का अन्धकार जात वर्णों की अज्ञानता, भंवरों में पड़ा, धुन्ध का रूप धारण कर गई थी। जिसकी वज़ह से पिछले 6-7 सौ वर्षों से ऐसी यातनाएं इस देशवासियों को सहनी पड़ीं और ऐसे जालिम बादशाहों के जुल्म का शिकार होना पड़ा, वे बातें न तो लिखी जा सकती हैं और न ही लिखकर पाठकों के मन खराब करने का हमारा कोई इरादा है। जहाँ तक इस्लाम का मत है, इस्लाम में बहुत बड़े बड़े नेक आदमी परोपकारी भी हुए हैं पर धर्म के नाम पर घोर पाप करने वाले राजा जो इस पाप को पुण्य (सबाब) कहते थे उन खूखांर ज़ालिम राजाओं की निखेदी करना कोई बुरी बात नहीं है। वह देश हमारा अपना ही था।

सम्राट हर्ष वर्धन के पश्चात देश का छोटे छोटे टुकड़ों में बंट जाना, जात पात की जन्जीरें और अधिक कठोर हो जाना, आम जनता का पुरोहितों तथा ज्योतिषियों के वश में पड़ जाना, सती तथा शूद्रों का तिरस्कार करना, ये सभी कारण थे जिसकी वज़ह से साढ़े छह सौ वर्षों से अधिक समय तक उन कष्टों को हमारे बुजुर्गों को सहन करना पड़ा जिन्होंने उस समय अपना जीवन बिताया। आज के समय में जब हम देखते हैं तो दुनियाँ के बहुत सारे देशों में मानवीय अधिकारों की बात सुनी जाती है, मनुष्य अच्छी तरह जीने के लिए अपने अधिकार मांगता है। विकासशील राज्य उन्हें इन अधिकारों से वंचित नहीं कर सकते पर उस समय जब खून की नदियाँ

बहाकर पुण्य समझा जाता था तब मानवीय अधिकारों की बात कैसे कही जा सकती थी। यह बात तो कोई सोच ही नहीं सकता था। पर तन्त्र गुलामों जैसा जीवन भारत की गैर मुस्लिम जनता जी रही थी। गुरू नानक जी की परम पावन ज्योति दस शरीरों में प्रकट हुई उसने पहला कार्य यह किया कि चारों वर्ग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का भेद जात पात की दीवार तोड़ दी जो हउमै के बज्र कपाटों के आधार पर खड़ी थी। मनुष्य की जात एक है की जानकारी दी और बताया कि एक ही आत्मा जिसका कोई मज़हब नहीं है वह सभी में एक रस चेतना प्रदान करके शरीर को बुद्धि बल द्वारा हरकत प्रदान कर रही है। खाक, वाद, आतश, मिट्टी तथा आकाश की मिलावट से सब का शरीर बना हुआ है 25 प्रकृतियों से सभी शरीरों की ज्ञानेन्द्रियाँ बनी हुई हैं। सभी के शरीर अन्न पानी के सहारे पर चलते हैं, न ही अन्न की कोई जात है, न ही पानी की कोई जात है सभी को एक जैसी ही भूख लगती है, सभी को एक परमेश्वर पर भरोसा है, कोई उसे राम कहता है, कोई रहीम कहता है, चारों वर्ण मनुष्य का अज्ञानता का प्रतीक है, सत्य यह है कि संसार में मनुष्य की जाति एक ही है, सम्प्रदाएं अनेक हैं। देहुरा और मसीत का मन्दिर और मस्जिद का क्या झगड़ा? आपने अपने शिष्यों में जात पात का पूर्ण रूप से भेद भाव मिटाकर एक ही बाटे में अमृत पान करवा कर भाई भाई बना दिये। जिससे एक जीती जागती इन्सानी भावना का अस्तित्व वजूद में आया। सारी मानवता प्यार के बन्धन में पिरोई गई, सभी के सुख सांझे हो गये, दुःख सांझे हो गये, स्वतन्त्रता पूर्वक जीने की भावना हृदयों में जाग्रत हो गई। एक जाग्रता भरा लम्बा कदम उठाया जिसने अपना बलिदान देकर कट्टरता तथा गुलामी की जन्जीरें तोड़ दीं। ऐसे हालात पैदा करने के लिए गुरू दशमेश पिता जी ने भारत वर्ष की खोई हुई सभ्यता पूर्नजीवित कर दी, चार भागों में कटा बटा मनुष्य आपने मिलाकर एक सम्पूर्ण हस्ती को जन्म दिया। शूद्र तथा ब्राह्मण का भेद मिटा दिया क्योंकि सभी खण्डित टुकड़ों को मिलाकर एक पूर्ण मनुष्य का अस्तित्व कायम किया। जो सेवा करने वाले शूद्र थे, देश की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहने वाले शस्त्रधारी क्षत्रिय थे और रूहानी विद्या का प्रचार करने वाला पण्डित था। इसी मनुष्य को गुरू महाराज जी ने नाम का ज्ञान बख्श कर जोगीश्वर बना दिया, मुनीश्वर ऋषि बनाया तथा ब्रह्मज्ञान का उपदेश देकर सत्य की पहचान करवाई। इतना ऊँचा ले जाकर इस सम्पूर्ण आदर्श को यह कहकर मान दिया गया कि यह मेरा ही रूप है जैसा कि सरब लोह ग्रन्थ में फ़रमान है -

ख़ालसा मेरो रूप है ख़ास।
ख़ालसे महि हौं करौ निवास।
ख़ालसा मेरो इशट सुहिरद।
ख़ालसा मेरो कहीअत बिरद।
ख़ालसा मेरो पछ अर पाता।
ख़ालसा मेरो सुख अहिलादा।
ख़ालसा मेरो मित्र सखाई।
ख़ालसा मात पिता सुखदाई।
ख़ालसा मेरी सोभा सीला।
ख़ालसा बंध सखा सद डीला॥ सरब लोह ग्रन्थ में से

आज हम वैशाखी की याद में इकट्ठे होकर विचार कर रहे हैं। अब सारी मानवता को इस बात पर गर्व करना चाहिए कि गुरू दशमेश पिता जी (गुरू गोबिन्द सिंह जी) ने मानवता को उसके अधिकार दिलवाये और आत्मिक तौर पर इतना ऊँचा कर दिया जिसकी महिमा को कोई नहीं जान सकता। गुरू महाराज जी ने कहा कि वह राजा है जिसके हृदय में वाहिगुरू जी की प्रशंसा स्तुति के फुवारे चल रहे हैं, जिसके अन्दर अनहद नाद गूँज रहा है जिसने सारी सृष्टि को इकाई के रूप में देख लिया है जिसने पहचान लिया है कि यहाँ तो वाहिगुरू जी ही अपनी खेल कर रहे हैं। यह सारी सृष्टि मेरी है तथा सारी सृष्टि मैं ही हूँ, मैं ही सुख में सुखी, दुख में दुखी हूँ, मेरे अनेक रूप हैं, अनेक भाव हैं। जो कुछ दिखाई देता है वह सारा प्रसार मेरे अन्दर ही है और मैं प्रसार में हूँ।

आज दुनियाँ ने जीने के लिए बेअन्त सहुलियतें पैदा कर ली हैं। इल्कैट्रानिक के माध्यम ने अनहोनी बातों को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है। आज यह मैगज़ीन इन्टरनैट पर पहुँच कर सारी दुनियाँ में बिना कोई मूल्य लिये प्राप्त हो रहा है। दुनियाँ एक इकाई बन चुकी है और यह एक नया भाईचारा उभर रहा है। जालिमों का समय नहीं रहा सर्व सांझ का समय सामने आ रहा है। मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान हो चुका है पर अभी समय लगेगा जब गुरू गोबिन्द सिंह जी के सिद्धान्तों को जो पूरी तरह वैज्ञानिक हैं को अपनाकर परम शान्ति प्राप्त की जायेगी तथा बेगमपुरा संसार में साकार होगा। जिसमें कोई दुखी नहीं होगा। कोई मज़बूर नहीं होगा। संसार से कई सीमायें बान्धकर धरती को बांटा नहीं जायेगा। बेअन्त अमीरी होगी पर उसके लिये ज़रूरी है कि गुरू ग्रन्थ साहिब जी के सन्देशों को सुना जाये, जाना जाये और प्रयोग

में लाया जाये और सच्ची भावना के साथ हर रोज़ हृदय में से एक तरंग उठती हुई उस परम शक्ति के साथ जुड़कर कह दिया जाये -

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत का भला॥

सभे साझीवाल सदाइनि
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ॥ *अंग - 97*

यह ख़ालसा आदर्श है खालसा आदर्श वाहिगुरू जी की मौज में प्रकट हुआ है। अकाल पुरुष की फौज़ है जिसने अन्याय गरीबी, धक्केशाही, मिलावटों, शरमायेदारी की अनसावीं (असमान) बांट को रोककर आन्तरिक ज्ञान के दीपक प्रज्जवलित करने हैं। यह खालसा जीवन जब संसार अपना लेगा तो यहाँ स्वर्ग बन जायेगा। देवता भी इस पर रशक (ईर्ष्या) करेंगे। वे भी आकर इस मनुष्य की शान देखेंगे।

आओ, हम इस आदर्श को समझें। 'आत्म मार्ग' पूरी तन देही के साथ इस आदर्श को संसार में साकार करने का इच्छुक है क्योंकि इसके सामने प्रकाश ही प्रकाश है जिसमें ये भाव निहित है -

ब्रहम दीसै ब्रहमु सुणीऐ
एकु एकु वखाणीऐ।
आतम पसारा करणहारा
प्रभ बिना नही जाणीऐ॥ *अंग - 846*

अपने अपने सम्प्रदायों में रहो, कोई अन्तर नहीं पड़ता पर सत्य की पहचान करो। महान सतगुरू ने फ़रमान किया है -

कोऊ भइओ मूंडीआ संनिआसी, कोऊ जोगी भइओ
कोई ब्रहमचारी कोऊ जतीअनु मानबो।
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम शाफी
मानस की जात सभै एको पहचानबो।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भुल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक,
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो॥

अकाल उस्तति

इन आदर्शों को हृदय में बसाओ किसी को बुरा मत समझो। खालसा के लिये कोई भी दूसरा गैर नहीं है। उसके लिये सभी अपने हैं। अपने ही नहीं वह सभी में परमेश्वर रूप ही देखता हैं उसका जीवन आदर्श है -

मनि साचा मुखि साचा सोइ।
एवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ।
नानक इह लछण ब्रहमगिआनी होइ॥ अंग - 272

खालसा एक आदर्शमय जीवन है इसे भेषों की भरमार दबा नहीं सकती। यह सारी सृष्टि के सांझे जीवन की धड़कन है। इस खालसा आदर्श की उपमा नहीं की जा सकती। फ़रमान हुआ है -

सेस रसन सारद सी बुध।
तदप न उपमा बरनत सुध।
या मै रंच न मिथिआ भाखी।
पारब्रहम गुर नानक साखी।
रोम रोम जे रसना पांऊं।
तदप ख़ालसा जस तहि गाऊं।
हौ ख़ालसे को ख़ालसा मेरो।
ओत पोति सागर बूंदेरो॥ *सरब लोह ग्रन्थ में से*

आज जो यह समझते हैं कि हम उस महान गुरू की विरासत से सम्बन्ध रखते हैं वे अपने तंग घेरों में से हल्ला मारकर बाहर निकलें। गुरूद्वारों को शक्ति प्रशिक्षण की प्रयोगशाला न बनायें मन्दिर मस्जिदों का सत्कार करें। मस्जिद वाले दूसरों का आदर करें। ये सभी स्थान प्रभु के प्यार में इकट्ठे होकर बैठने का स्थान है। इनकी शक्लें हमने बनाई हैं, इनकी रूप रेखा हमारे सोचे हुए ढंग से है। मस्जिद में भी उन्हीं भट्ठों की ईंटे लगी हुई हैं जिस भट्ठे में गुरूद्वारों में लगी हुई है। वही सिमेन्ट लगा हुआ है जो मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों में लगा हुआ दिखाई दे रहा है। वही धरती है जिस पर हम सभी खड़े हैं तो फिर भेद-भाव किसका? केवल शक्ल देखकर कि इसका मुख्य द्वार पूर्व की तरफ खुलता है पर गुरूद्वारे के द्वार के चारों ओर से खोलकर बहाई सम्प्रदाय वालों की तरह सभी को निमन्त्रण दिया है कि प्रभु प्यारे! तू आ जा, यहाँ बैठ कर नमाज़ पढ़ सकता है, यहाँ बैठकर गायत्री का पाठ कर सकता है, बाणी पर विचार कर सकता है, यह सब की सर्वसांझी जगह है, पर यदि इस स्थान पर शक्ति द्वारा कब्जा किये गये अज्ञानी पुरुष हो फिर तो वे इस आदर्श को स्वंय ही फेल कर देते हैं। गुरू प्रसन्न नहीं होगा, आपकी मनाई गई वैशाखी सफल नहीं होगी यदि तुमने इस आदर्श को न समझा। आप खालसा कहलाने वाले सारे संसार में से उच्च निशान साहिब कायम करके अपने अस्तित्व का प्रमाण दे रहे हो तुम्हारे निशान का हिलता हुआ फरैरा (ध्वज पताका) देखने वाले को कह रहा है कि यदि तेरे पास रहने की जगह नहीं तो तेरे रैन बसेरे के लिए हमने रिहायश बनाई हुई है। यदि तुझे अभी तक भोजन नहीं मिला

तो निसंग होकर आ जा तुझे आदर पूर्वक भोजन खिलाया जायेगा, यदि तू बीमार है तो तू निश्चिन्त होकर आ जा तेरी दवा दारू की जायेगी, यदि तुझे कोई दुख है तो हम मिलकर उस प्रभु के सामने प्रार्थना करेंगे, जो सभी दुखों को दूर करने की समर्थ रखता है। तुम्हारा निशान साहिब दुनियाँ को सन्देश दे रहा है यहाँ पर कोई दुजायगी (अलगाव) नहीं द्वैत नहीं, यहाँ सर्व जीवन की सांझ है, इस स्थान पर कोई जीव हत्या नहीं कर सकता, कोई किसी को मार नहीं सकता, यहाँ तो जीवन दिया जाता है। यहाँ सर्व सांझेपन का सन्देशा दिया जाता है। इस स्थान से नूर की फुव्वार निकलती हैं जो सभी अन्धेरे कोनों में प्रकाश देती जा रही है। यहाँ तक कि मधुर संगीत उठता है जो आन्तरिक मधुर संगीत के साथ मिलकर आनन्द ही आनन्द देता है। मुरझाया हुआ कमल फूल विकसित हो जाता है और दुनियाँ को आनन्द देता है। इसे अपनाओ इसमें सभी दुखों को समाप्त करने की समर्थ है। यहाँ नाम का ज्ञान कराया जाता है जो हउमै के करारे द्वार तोड़ देती है। यहाँ बताया जाता है कि परम पवित्र परम चेतना ने अपने आप साकार होकर अनेक रूप धारण किये हुए हैं। आखों में पड़ा हुआ अज्ञान का मोतियाबिन्द दूर हो जाता है। ज्ञान का अन्जन आन्तरिक दर्शनीय नेत्र खोल देता है फिर अनुभव होता है सत्य। एक ही प्रभु, एक ही अल्लाह एक God सभी रंगों, रूपों, दृश्यों में प्यार के पूर्ण भाव से रमा हुआ है।

खूब मनाओ वैशाखी, खुशी-खुशी मनाओ। वैशाखी के समय किसान बहुत प्रसन्न होता है कि मेरी फसलों ने पक जाना है, मेरे संकट समाप्त हो जायेंगे, मज़दूर खुश हो जायेगें कि पेट भरकर अनाज खाने को मिलना शुरू हो जायेगा। तैयारियाँ की जाती हैं कि आने वाली जेठ महीने की लूं तथा भादों की उमस तथा पौष मास की ठण्ड में से किस प्रकार आनन्दमयी बहती धारा में गोते लगाते हुये अगले वर्ष की वैशाखी तक पहुँचेंगे। बोलो धन्य गुरू गोबिन्द सिंह साहिब।

प्रान मीत परमातमा पुरखोतम पूरा।
पोखनहारा पातिसाह प्रतिपाल न ऊरा।
पतित उधारन प्रानपति सद सदा हजूरा।
वह प्रगटिओ पुरख भगवंत रूप गुर गोबिन्द सूरा।
अनद बिनोदी जीअ जपि सचु सची वेला।
वाह वाह गोबिन्द सिंह आपे गुर चेला॥
भाई गुरदास जी (दुजा) वार 41/15

नासरो मनसूर गुरु गोबिन्द सिंह।
एज़दी मनज़ूर गुरु गोबिन्द सिंह॥ १०५॥
हक़ रा गंजूर गुरु गोबिन्द सिंह।
जुमला फैज़ि नूर गुरु गोबिन्द सिंह॥ १०६॥
हक़ हक़ आगाह गुरु गोबिन्द सिंह।
शाहिब शाहनशाह गुरु गोबिन्द सिंह॥ १०७॥
बर दो आलम शाह गुरु गोबिन्द सिंह।
ख़सम रा जां काह गुरु गोबिन्द सिंह॥ १०८॥
फाइज़ुल अनवार गुरु गोबिन्द सिंह।
काशफुल असरार गुरु गोबिन्द सिंह॥ १०९॥
तौसीफौ सना, भाई नंद लाल में से

(१०५) सहायता करने वाला तथा (जिसकी अकाल पुरुष की ओर से) सहायता हुई हो वह श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज हैं। अकाल पुरुष को रुचे हैं।

(१०६) अकालपुरुष के खंजानची, सभी बख्शीशों तथा प्रकाश (के मालिक हैं)

(१०७) अच्छी प्रकार से करतार को जानने वाले, महाराजाओं के महाराज।

(१०८) दोनों लोकों के राजाओं, वैरियों को जीने के संशय में डाल देने वाले (योद्धा)

(१०९) बख्शीशों के नूर देने वाले (अकालपुरुष के) भेद बताने वाले।

तब सहजे धरम प्रगासिआ हरि हरि जस गाए।
वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिन्द सिंह आपे गुर चेला॥

मनुष्यता में पड़े हुए भेद भाव मिटा दो। गुरूद्वारों की कमेटियां पदों की प्राप्तियों के लिए झगड़े, लालसाएं छोड़ दो। गुरू के घर का प्रबन्ध गुरू का प्यारा ही कर सकता है। अज्ञानी, माया के प्यारे गुरमत की सूक्ष्मताओं को नहीं समझ सकते।

'आत्म मार्ग' संस्थान आप की पूरी सहायता कर रहा है। गुरू ग्रन्थ साहिब महाराज जी के सिद्धान्तों को साधारण भाषा में आपकी सेवा में भेज रहा है। इसे स्वंय पढ़ो तथा औरों को भी पढ़ाओ और धर्म तत्व का ज्ञान प्राप्त करो तथा संसार को भी करवाओ।

आप सभी को खालसा आदर्श के प्रत्यक्ष रूप में मूर्तमान होने की वर्षगाँठ पर बधाई देता हूँ।

गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।।

सन्त बाबा वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥
जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ ***अंग - 251***

जन्म लेते ही माया ने अपने प्रभाव में ले लिया। संसार में तो इसलिए आया था कि मैं नाम का सिमरन करूँगा। गुरवाणी का फुरमान है -

गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥
सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ ***अंग - 251***

माँ के पेट में उल्टा लटक कर तपस्या करता था तथा सुषुम्ना नाड़ी में सुरति होने के कारण इसे पिछले जन्मों का ज्ञान था। उस समय बहुत पाश्चाताप करता है कि मैंने यह जन्म भी यूँ ही निकाल दिया, यह जन्म भी व्यर्थ में बरबाद कर दिया। मैं इस जन्म में ईर्ष्या करता रहा, विरोध करता रहा और ये सारे जन्म मैंने यूँ ही बरबाद कर दिए लेकिन अब तो मैं अवश्य ही नाम जपूँगा और मैं श्वास-श्वास नाम जपूँगा। विनतियाँ करता है कि हे प्रभु जी! मुझे इस अन्धकूप में से बाहर निकाल दो मैं आपका बखूबी नाम जपूँगा। प्रभु जी कहते हैं ऐ जीव! क्या मैंने तुम्हें एक बार मनुष्य बनाया है? मैंने तो तुम्हें असंख्य बार मनुष्य नाया है लेकिन तुम जब भी मनुष्य बनते हो उसी समय तुम वायदा फरामोश हो जाते हो और अपने वायदों को भूल जाते हो तथा अन्य प्रकार की चीजों में फँसकर रह जाते हो। वे चीजें तुम्हें इस तरफ सोचने ही नहीं देती हैं।

जीव - नहीं महाराज जी! मैं अवश्य ही आपका नाम जपूँगा।

प्रभु - जमानत दो।

जीव - महाराज! मैं यहाँ पर जमानत किसकी दूँ?

प्रभु - तुम्हारे साथ पाँचों तत्वों के देवते मौजूद हैं।

जीव ने जब आकाश को कहा तो वह बोला, मेरा तो कोई वजूद ही नहीं है। आग को कहा तो वह कहने लगी, तेरा मेरा तो कोई साथ ही नहीं है क्योंकि जहाँ मैं होती हूँ, वहाँ से तो तुम दूर भागते हो। मैं तुम्हें प्रेरणा कैसे कर पाऊँगी? धरती को विनय की वह बोली यदि थोड़ी सी भी तुम्हारे ऊपर पड़ूँगी तो तुम मुझे झाड़ने लग पड़ोगे कि मेरे ऊपर मिट्टी पड़ गई है। तुम तो मुझे अपने पैरों के नीचे ही रखोगे और कभी सिर पर नहीं उठाओगे। इसलिए मैं तुम्हारी जमानत नहीं ले सकती हूँ। हवा को कहा तो वह कहने लगी मेरा भी कोई वजूद नहीं है। इसलिए मैं तुम्हारी जमानत देने में असमर्थ हूँ। अब बाकी रह गया पानी। पानी के पास जाकर विनती करता है कि हे वरुण देवता! देखना कहीं तुम भी मना मत कर देना क्योंकि चार तो जबाब दे गए हैं।

वह बोला, देखो! तुम्हारा भरोसा तो कोई है नहीं क्योंकि तुम भरोसे योग्य तो हो ही नहीं, लेकिन फिर भी मैं सशर्त जमानत दे सकता हूँ। फिर प्रभु जी के पास जाकर विनती करता है प्रभु जी! यह सशर्त जमानत दे रहा है। दोनों लोग हाजिर हो गए। प्रभु जी बोले, क्यों भाई जल देवता! तुम इसकी जमानत देते हो? वह बोला महाराज जी! वैसे तो यह जीव विश्वास के योग्य है नहीं क्योंकि इसकी दशा तो ऐसी है कि 'नाव निकली तो ख्वाजा बिसरा'। इस पर चाहे कितना ही बड़ा उपकार कर दो लेकिन यह सब कुछ भूल जाता है तनिक भी याद नहीं रखता है। यह तो आपको भी याद नहीं रखता है जिसने कि यह शरीर बनाया है, मेरा इस पर क्या बल चल पाएगा? प्रभु जी बोले, तो फिर तुम इसकी जमानत क्यों देने आए हो? कहने लगा, महाराज जी मैं इतना कर सकता हूँ कि जब यह ब्रह्ममुहुर्त में उठकर स्नान करने लगेगा और शरीर पर एक दो कप पानी डाला करेगा तो मैं एकाध बार इसके मुख से वाहिगुरू, अल्लाह या राम आदि निकलवा दिया करूँगा। आगे यह जाने इसका काम जाने। अतः महाराज जी कहने लगे कि इस प्रकार के वायदे करके यह आया हुआ है लेकिन -

उरझि परे जो छोडि छडाना ॥
देवनहारू मनहि बिसराना ॥ ***अंग - 251***

यह सब कुछ भूल गया। इसे सन्तजन आवाजें मारते हैं लेकिन यह ऐसा बहरा हो गया है कि तनिक भी नहीं सुनता है। जब इसके मतलब की बात करते हैं तो यह समझने में क्षण भर भी नहीं लगाता है। उस समय तो चाहे इसे दूर भी कर दो तो यह कहेगा कि मैंने यह बात सुन ली थी। जब

इसके वास्तविक कल्याण की बात की जाती है तो इसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता है। इसकी वृत्ति ही ऐसी बन चुकी है कि अच्छी बातों को तो यह सुनता ही नहीं है। यथा -

चंगिआइंी आलकु करे बुरिआइंी होइ सेरू ॥

अंग - 518

बुरा कार्य करने के लिए तो यह शेर जैसा बन जाता है लेकिन यदि इसे कहा जाए कि चलो सत्संग में चलना है तो यह वहाँ नहीं जाना चाहता है। पहली बात तो यह सत्संग मिलता ही बहुत मुश्किल से है। यथा -

बिनु भागा सतसंगु न लभै
बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ *अंग - 95*

यदि व्यक्ति के भाग्य उत्तम हों पूर्वजन्म में दान व पुण्य कर्म किए हों तभी दो चीजें प्राप्त हुआ करती हैं -

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥
कहु नानक तिसु भइओ परापति
जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ *अंग - 642*

मैं विनती कर रहा हूँ कि यहाँ पर एक और बात समझ लेनी भी बहुत जरूरी है कि सत्संग का तात्पर्य यह नहीं होता है कि बस लोग इकट्ठे हुए और बाबा जी की बातें सुनकर घर को लौट गए। जब से तुमने घर से सत्संग स्थल की तरफ जाने के लिए अपना इरादा बनाया है उसी समय से दरगाह में तुम्हारी हाजिरी लगनी शुरू हो गई है। जितने कदम तुम चलकर आए हो प्रत्येक कदम का फल एक-एक अश्वमेघ यज्ञ के बराबर मिलता जाता है। जितनी देर तक तुम मन चित्त को एकाग्र करके सत्संग में बैठे हो श्रद्धा व विश्वास के साथ तुमने सत्संग को श्रवण किया है तो उसका फल कितना होता है, इस बारे में गुरू जी स्वयं फुरमान करते हैं कि -

गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै
जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥

अंग - 669

उसका फल कितना होगा? गुरू जी कहते हैं -

कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥

अंग - 546

यहाँ पर आपके कान भी काम कर रहे हैं, जुबान भी काम कर रही है। जब जुबान के द्वारा शब्द में बोलते हैं, कानों के द्वारा सुनते हैं और बुद्धि के द्वारा विचार करते हैं और हृदय में धारण करते हैं तो गुरू जी कहते हैं कि फिर उसे सत्संग का फल प्राप्त होता है। कितना फल प्राप्त होता है?

दो महान ऋषि हुए हैं एक विशिष्ट जी तथा दूसरे विश्वामित्र जी। विश्वामित्र तपस्वी था। वह कहने लगा, विशिष्ठ जी! आप सत्संग की बहुत महिमा करते हो, कृप्या बतलाइए कि तपस्या का इससे क्या मुकाबिला है? एक व्यक्ति पानी में सारा दिन खड़ा है, ठंड का महीना है और सारी रात नहर में खड़ा है वह तो वैसे ही जम जाएगा। जिन्होंने इस प्रकार के साधन किए हैं वे बताते हैं कि वे इस प्रकार से करते थे।

सन्त महाराज जी (श्री मान सन्त बाबा ईशर सिंह महाराज जी राड़ा साहिब वाले) बतलाते थे कि जब हम होती मरदान जाते थे तो वहाँ पर कलपाणी नदी में स्नान किया करते थे। बर्फ जमी होती थी। बस चौंकड़ी मार कर बैठ जाते थे, कछहरा तो बाँध लेते थे लेकिन चोले के बटन नहीं लग पाते थे, इतनी ठंडक होती थी, बस ऊपर कम्बल ओढकर बैठ जाते लेकिन बैठने के बाद दोबारा उठना मुश्किल हो जाता थे, जब दस बजे धूप लगती, शरीर कुछ गर्म होता तब कहीं उठकर खड़े होने की सामर्थ्य शरीर में आ पाती थी।

सन्त महाराज जी मसतुआणे वाले, जब बन्नू पर्वत पर तपस्या करते थे तो वे नीचे बाउली में स्नान करके वहीं पर बैठ जाते थे, उसके बाद उनके ऊपर बर्फ जम जाती थी। बाद में सेवादार को कहना कि मेरे ऊपर कम्बल डाल देना और साथ ही अपनी गर्माहट मुझे देना, तब कहीं हाड़-पैर खुलेंगे।

साधु संगत जी! अध्यात्मिक जगत की प्राप्तियाँ वैसे ही नहीं हो जाया करती हैं, वे घोर तपस्याएँ करते हैं, साधनाएँ करते हैं, तब कहीं जाकर प्राप्तियाँ हुआ करती हैं। यूँ ही सरलता से यह सब नहीं हो जाया करता है।

इस प्रकार से जिन्होंने तप साधनाएँ की हैं, उन्हें पता है और वे ही अपनी मंजिल प्राप्त होने में सफल हो पाया करते हैं।

अतः विश्वामित्र कहने लगा, वशिष्ठ जी! मैंने तपस्या की हैं, साधनाएँ की हैं इसलिए मुझे पता है कि तपस्या बहुत कठिन चीज है। वे कहने लगे, अपने लोग किसी से निर्णय करवा लेते हैं। जब पारस्परिक राय न मिलती हो और किसी निर्णय पर पहुँच पाना मुश्किल हो तो फिर किसी तीसरे व्यक्ति के पास जाना ही उचित होता है। अब वे दोनों ब्रह्मा जी के पास चले गए। ब्रह्मा जी ने सोचा कि ये दोनों बड़े ऋषि हैं, जब तक इन्हें प्रत्यक्ष रूप में दिखलाया नहीं जाएगा, तब तक ये मानेंगे नहीं। कहने लगे, आप लोग शिव जी महाराज जी के पास चले जाओ। जब उनके पास गए तो वो

बोले, मैं तो ध्यान मुद्रा में हूँ। आप लोग विष्णु मनहाराज जी के पास चले जाओ। अब वे विष्णु महाराज जी के पास चले जाते हैं और जाकर अपना प्रश्न रख देते हैं। वे बोले, देखो बन्धु! मैं तो इस समय सारे संसार को रोजी देने में व्यस्त हूँ क्योंकि मेरा कार्य तो सबको रोजी देना है और इसलिए मेरा नाम विश्वम्भर है। आप लोग शेषनाग जी के पास चले जाओ। जब उनके पास गए तो वे बोले, सम्माननीय ऋषिजनो! में तो परमात्मा का नाम जपने में व्यस्त हूँ और सारी पृथ्वी को सम्भाल रहा हूँ। पहले आप लोग धरती को सम्भालने का कोई उपाय करो तभी मैं आपके प्रश्न का उत्तर दे पाऊँगा। (श्री दशमेश जी लिखते हैं कि शेषनाग जी प्रतिदिन हजारों नए नामों से परमात्मा का स्मरण करते हैं)

अब शेषनाग जी की बात सुनकर विश्वामित्र जी ने कहा, महाराज जी! मैं अपनी दस हजार वर्ष की तपस्या का फल आपको देता हूँ।

लेकिन उस तप को देने से भी धरती हिलने लग पड़ी क्योंकि उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति, उस तपस्या के फल को पाकर स्थिर न रह सकी यानि कि उस तपस्या का फल उस धरती को सम्भालने के लिए पर्याप्त नहीं था। फिर विश्वामित्र ने बीस हजार साल की तपस्या का फल दे दिया और बढ़ाते-बढ़ाते उसने 58 हजार साल का फल दे दिया। लेकिन धरती डोल रही है। शेषनाग ने और फल की माँग की। अब विश्वामित्र बोला कि और तप-फल मेरे पास है ही नहीं। अब शेषनाग जी ने वशिष्ट जी से कहा कि यदि इनके पास फल नहीं है तो आप दे दो। वे बोले मैं अपने फलार्जन में से, केवल चार घड़ी, मन चित्त को एकाग्र करके जो हरियश किया है, वह फल देता हूँ। जब वह फल दिया गया तो धरती एकदम से स्थिर हो गई यानि कि वह डोलने से रुक गई।

शेष नाग जी बोले, देखो ऋषिजनो! अब मैंने क्या निर्णय देना है। निर्णय तो स्वतः ही हो चुका है कि कहाँ पर एक तरफ चार घड़ियों यानि कि 100 मिनट का सत्संग और दूसरी तरफ 58 हजार वर्ष की तपस्या। अब आप लोग स्वयं ही देख लो कि कौन सी चीज ज्यादा है।

अतः ऐसा महान सत्संग हम लोगों को इस कल्युग में प्राप्त हुआ है यह वाहिगुरू जी की कृपा है। जमाना जो है, यह जल-बल रहा है। इसमें सत्संग प्राप्त हो जाना, यह पूर्वजन्म के उत्तम भाग्य के कारण ही सम्भव हो पाया करता है। यथा-

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा॥
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥

इसकी समझ सत्संग में आकर ही प्राप्त हो पाया करती है।

इस प्रकार से यह जो व्यक्ति है यह प्रभु जी से वायदा करके आया है कि हे प्रभु जी! अब मैं केवल आपका नाम ही जपूँगा लेकिन हुआ क्या? जिस समय इसका जन्म हुआ-

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥
अंग - 921

परिवार में मुबारकबाद होने लग पड़ी। जो इससे भी अधिक आगे गए वे जानवरों को काट-काट कर खाने लग पड़े, शराब की बोतलें आ गईं और दूसरी तरफ क्या हुआ-

लिव छुड़की लगी तिसना माइआ अमरू वरताइआ ॥
अंग - 921

उस बच्चे का जो ध्यान परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ था, उसे जो नाम की धुन सुनती थी, वह टूट गई। अब तृष्णा किस चीज की लग गई -

पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ *अंग - 137*

इसे दूध की समझ आ गई। चाहे कोई भी पशु का बच्चा है, भैंस का है, गाय का है तो वह पैदा होते ही दूध की तरफ भागता है -

दूजै माइ बाप की सुधि ॥ *अंग - 137*

इसके बाद नजदीक के रिश्तेदारों का पता चल गया कि यह मेरी माँ है, यह बाप है। कुछ समय पहले तो कुछ भी नहीं था, न कोई माँ थी, न कोई बाप था, लेकिन अब रिश्ता बन गया।

तीजै भया भाभी बेब ॥
चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥
पंजवै खाण पीअण की धातु ॥
छिवै कामु न पुछै जाति ॥
सतवै संजि कीआ घर वासु ॥
अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥
नावै धउले उभे साह ॥ *अंग - 137*

अब क्रोध का समय आ गया। बच्चे कहना नहीं मानते हैं। वह कहता है कि इस प्रकार से करना है लेकिन बच्चा कहता है कि यह बात तो बिल्कुल ही गलत है। तुमने तो सारी जिन्दगी में कुछ किया ही नहीं है। हम तुम्हें कुछ करके दिखाएंगे। वे तो बाप को कोने में बिठा देते हैं कि तुम तो बाहर ही रहा करो। अब जिन बच्चों को बहुत प्यार से पाला

(शेष पृष्ठ 39 पर)

सन्त बाबा लखबीर सिंह जी द्वारा पृथक-पृथक क्षेत्रों में गुरमति समागम दृश्य

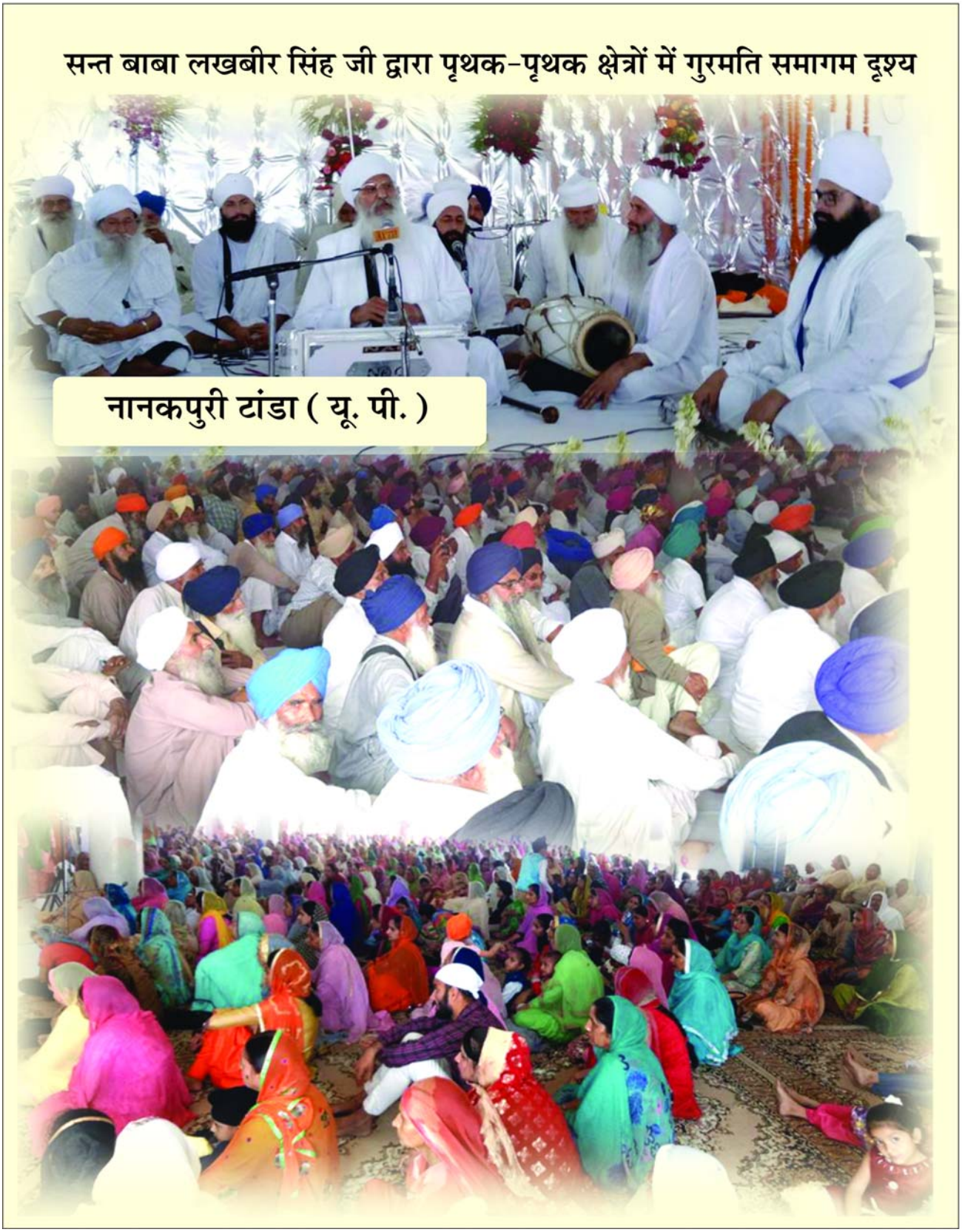

नानकपुरी टांडा (यू. पी.)

झंबेलवाली मण्डी (श्री मुक्तसर साहिब)
NAGI

मझोला फार्म (यू. पी.)

सितारगंज (उत्तराखंड)
Akaal

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी द्वारा पृथक-पृथक क्षेत्रों में गुरमति समागम दृश्य

नगर पैंतपुर (नजदीक रतवाड़ा साहिब)

चाहड़माजरा (नजदीक रतवाड़ा साहिब)

नगर खटकड़ कलां (दोआबा)
KALSI

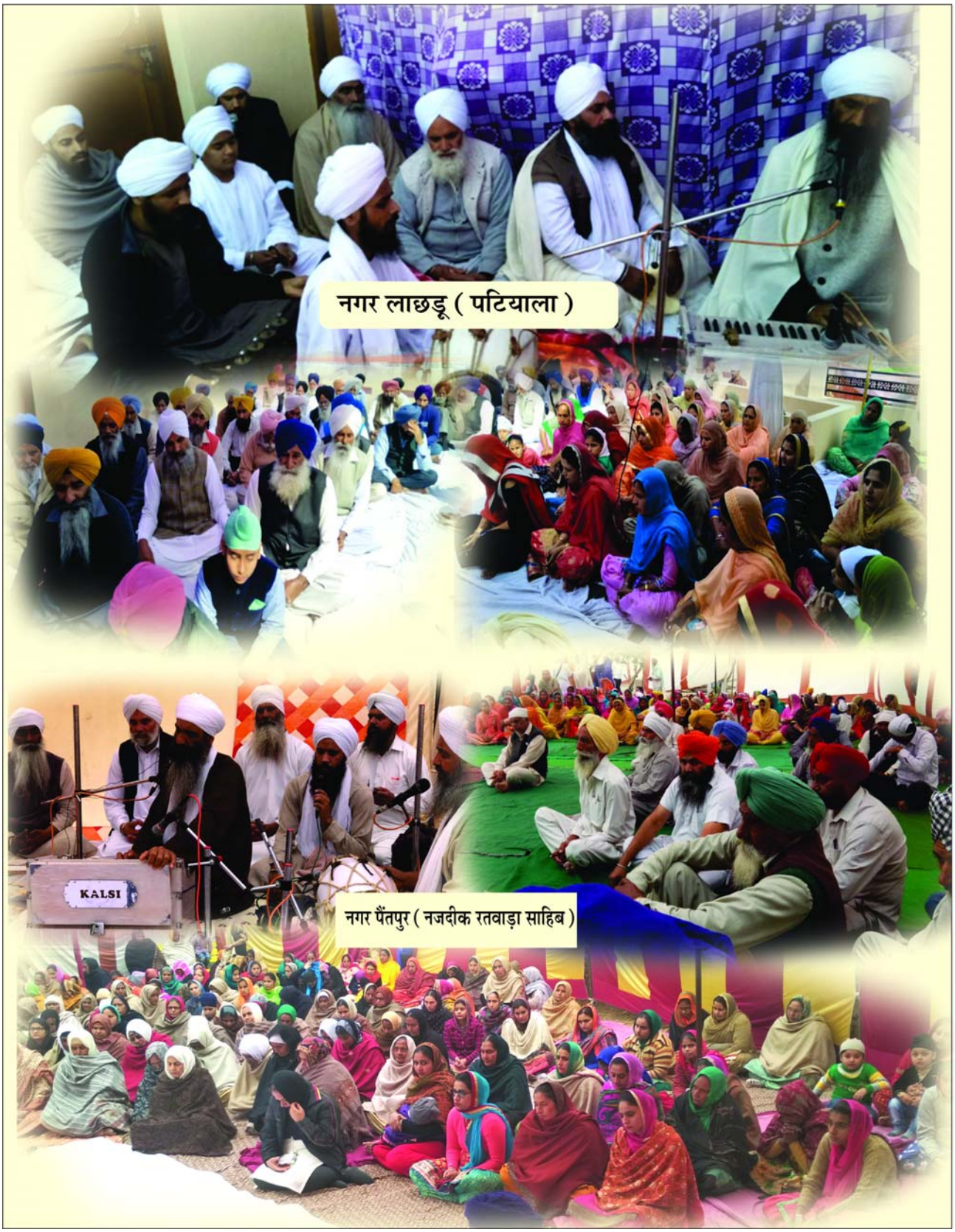
नगर लाछडू (पटियाला)
KALSI
नगर पैंतपुर (नजदीक रतवाड़ा साहिब)

श्री आनंदपुर साहिब होला महल्ला के अवसर पर नगर रामगढ़ (पट्टी टेक सिंह) सन्त बेला के प्रेमीजनों द्वारा गन्ने के रस का लंगर

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी सेवादारों को सम्मानित करते हुए

होला महल्ला के दौरान आत्म मार्ग स्टाल के दृश्य

(पृष्ठ 30 का शेष)

था वे तो तनिक भी प्यार नहीं करते हैं। बच्चों के पास तो इतना भी समय नहीं है कि वे माँ-बाप के साथ बात भी कर लें अथवा सोने से पहले यह भी कह दें कि अच्छा अब हम सोने लगे हैं या सुबह उठकर उनका अभिवादन ही कर दें उनके चरण स्पर्श ही कर लें। इस कारण से माँ-बाप अपनी जिन्दगी में तनावग्रस्त हो जाते हैं।

दसवै दधा होआ सुआह ॥ ***अंग - 137***

इस प्रकार से इसका जीवन एक राख की ढेरी बन जाता है। यह सब इसके भूलने के कारण होता है, महाराज जी कहते हैं कि तुम एक बार नहीं बल्कि असंख्य बार इसी प्रकार से भूले हो। इसे याद करवाने के लिए ही परमात्मा ने सन्तजनों की ड्यूटी लगा दी है कि तुम इन्हें जगाते रहो। लेकिन सन्तजन कहते हैं कि हम क्या करें, ये तो सुनते ही नहीं हैं, बहरे हो चुके हैं। इनके भाग्य इतने खराब हो चुके हैं कि चारों वेद, सत्ताइस स्मृतियाँ, उपनिषदें, कुरान शरीफ, छः शास्त्र, तैरेत, अंजील, बाइबिल, जम्बूर व सारे धर्मग्रन्थ, इस जीव को एक ही बात समझाते हैं कि ऐ भद्रपुरुष! तुम हमारी एक बात नोट कर लो कि -

धारना- इहो तेरी वारी अै,
गोबिंद मिलणे दी।

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ ***अंग - 12***

जिन कामों में तुम व्यस्त हुए पड़े हो ये तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आने वाले हैं। चाहे तुम कोई भी सांसारिक प्राप्ति कर लो लेकिन एक दिन सब कुछ को यहीं पर छोड़ कर जाओगे। दरअस्ल जिस काम को करने के लिए तुम आए थे वह तो तुमने किया ही नहीं है। महात्मा इसे आवाजें लगाते हैं ताकि किसी के कान मे कुछ समझ उत्पन्न हो जाए लेकिन वे कहते हैंकि हम करें क्या -

फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंजाइआ से कित फेरहि चित ॥
अंग - 1378

लेकिन यह अपने चित्त को फेरता ही नहीं है क्योंकि -

धारना - भाग जिनाँ दे मंदे,
दितीआँ बाँगाँ तों ना जागदे।

सन्तजन अपने बे-वशी को जाहिर करते हैं क्योंकि अन्दर शैतान बैठा हुआ है, वह चित्त को फेरने ही नहीं देता है। सत्संग की सुनता रहता है लेकिन फिर भी वहीं का वहीं ही रहता है। सारे सन्तजन सोचते हैं कि जीव इतना क्यों भूलता है? इसका कारण क्या है? यह जीव सही दिशा में क्यों नहीं चलता है?

श्री गुरू नौवें महाराज जी को पूछा कि महारज जी! यह व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातों को समझ जाता है लेकिन यह परमात्मा के मार्ग पर क्यों नहीं चलता है? महाराज जी कहते हैं कि प्रेमीजनो! इसे यह पूर्ण विश्वास हो चुका है कि मैंने इस संसार से नहीं जाना है और मैंने तो हमेशा के लिए यहीं रहना है। यदि इसके मन में यह विश्वास हो कि मैंने इस संसार को छोड़ जाना है तथा अन्य किसी जगह पर जाना है तो फिर यह उस दिशा की तरफ स्वयं को लगाए। एक दृष्टान्त के द्वारा यह बात समझ में आ जाएगी।

एक राजा बहुत ही बुद्धिमान था। उसके राज्य में यह नियम चलता था कि कोई भी राजा बीस साल से अधिक गद्दी पर नहीं बैठ सकता है। बीस साल के बाद उस राजा को एक निर्जन टापू पर जो कि वहाँ से तीन सौ मील की दूरी पर था, छोड़ आते थे ताकि कोई व्यक्ति हमेशा के लिए तख्त का दावेदार ही न बना रहे। अब राजा लोग बीस साल तक अपने राजकाज में व्यस्त रहते और वह समय भी यूँ ही बीत जाता। अब एक सयाना नौजवान आ गया, वह कहने लगा कि मुझे तख्त सम्भालो। कुछ ही दिनों में उसने राज्य के सारे नियमों और कानूनों को समझ लिया और अब उसके हाथ में ताकत आ गई। कहने लगा कि एक जहाज मंगाओ और जहाज में अपने स्टाफ को भर कर वहाँ ले गया, जहाँ कि राजा के बीस वर्ष के शासन करने के बाद उसे छोड़ा जाता था। सबने देखा कि यह तो बहुत ही भयानक जगह है और यहाँ पर तो बहुत ही डरावने जंगली जानवर रहते हैं और ये तो व्यक्ति को वैसे ही खा जाने वाले हैं, भोजन का भी यहाँ पर कोई प्रबन्ध नहीं है। राजा ने अपने इंजीनियर्ज को कहा कि इस स्थान को इतना सुन्दर बना डालो कि संसार के सारे पर्यटक यहाँ पर घूमने के लिए आना अपना सौभाग्य समझने लग पड़ें। इस टापू पर इतनी सुन्दर चीजें स्थापित कर दो कि लोग यहाँ खिंचे चले आएँ। बीस साल की मेहनत रंग लाई और वह टापू इतना सुन्दर बन गया कि वहाँ पर रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के मन में लालसा उत्पन्न होने लग

पड़ी। जब राजा के बीस वर्ष पूरे होने में अभी छः महीने का समय शेष था तो वह राजा कहने लगा। लो भाई मेरे प्रिय देशवासियो! अभी छः महीने रह गए हैं और इस समय में अपना कोई नया राजा आप लोग ढूँढ़ लो जिसने राजगद्दी पर बैठना है। सबने मीटिंग की कि अब तो वह टापू ही ऐसा बन गया कि वहाँ पर तो हम सभी का मन करने लगा है कि वहीं पर जाकर बस जाएँ। अतः सभी मुख्य लोगों ने यह निर्णय लिया कि इसी राजा को आजीवन इस तख्त का मालिक बना रहने दिया जाए क्योंकि यह बहुत ही बुद्धिमान है। अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके यह यहाँ पर भी बहुत उन्नति कर देगा।

जिसने इस संसार में रहते हुए अपने परलोक को संवार लिया है वह तो कहता है कि मैं तो किस समय इस पाँच भौतिक तत्वों के शरीर में से निकल कर उस परमात्मा के महानन्द में सदा-सदा के लिए लीन हो जाऊँ। यथा -

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरै मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ *अंग - 1365*

क्योंकि उसने अपने परलोक को संवार लिया है जो उसे संवारता नहीं है। उसके लिए मुश्किल है। इस प्रकार से इस शाश्वत सत्य को यह व्यक्ति न तो समझता ही है और न ही वह समझना ही चाहता है।

श्री गुरू तेग बहादर जी कहने लगे, प्रेमीजनो! इसे परलोक के बारे में पता ही नहीं है कि वहाँ पर इसके साथ कैसा व्यवहार होना है। बस यह तो यही समझता है कि मैंने तो हमेशा के लिए यहीं पर रहना है। आप इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - नहींओं मरन पछाणदा,
झूठे लालच लग के बंदा।

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है
फूटै घट जिउ पानी ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥ 1 ॥
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥2॥1॥
अंग - 726

प्रेमीपुरुष! तुम तो दिन-रात एक करके उस वाहिगुरू को याद करने लग पड़ो क्योंकि -

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥

जिस प्रकार से उस घड़े में से बूँद-बूँद करके पानी निकल जाता है, जिसमें दरार आ चुकी हो। इस प्रकार से तुम्हारे 24000 श्वास प्रतिदिन कम हो जाते हैं और जो निकल गए वे दोबारा प्राप्त होने वाले नहीं हैं। लेकिन 'हरि गुन काहे न गावही मूरख अगिआना।।' तुम इतने मूर्ख व अज्ञानी हो कि तुम परमात्मा के गुणों का गान करते ही नहीं हो।

झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥

मूर्खों की बात महापुरुष बतलाया करते थे कि एक बार एक राजा था, उसे उसकी रानी नित्य प्रतिदिन कहा करती थी कि राजन्! मनुष्य जन्म बहुत ही मुश्किल से प्राप्त हुआ है और फिर परमात्मा ने तुम्हें राज भाग प्रदान किया है। इसलिए तुम परमात्मा की बन्दगी किया करो, ब्रह्ममुहुर्त में उठकर उसकी याद में बैठा करो।

वह रोज कह देता, भाग्यवान! तुम्हारी बात तो ठीक है, तुम कल सुबह मुझे जगा देना। उसकी रानी उसे जगाती वह जाग जाता लेकिन फिर कपड़ा लेकर सो जाता। छः वर्ष इसी प्रकार से बीत गए उसकी रानी हटी नहीं और वह उठा नहीं। एक दिन रानी गुस्से में आकर बोली, राजन! तुम तो मूर्ख हो क्योंकि छः साल कोई कम समय नहीं हुआ करता है और जो समय बीत गया यह दोबारा हाथ में नहीं आया करता है।

कहने लगा, मैं मूर्ख हूँ? और उठकर बैठ गया।

रानी बोली, यह बात मैं नहीं कह रही हूँ बल्कि छः शास्त्र यही बात कहते हैं कि जिसने अपने परलोक को नहीं संवारा और इसी संसार में पूर्णरूपेण व्यस्त है वह मूर्ख व्यक्ति है। राजा कहने लगा, तुम मुझे मूर्ख कह रही हो? वह बोली, यह बात सभी धर्म ग्रन्थ कहते हैं और यहीं बस नहीं है बल्कि वे तो प्रत्येक तथाकथित पढ़े लिखे व्यक्ति को कहते हैं -

पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥
अंग - 140

वह बुद्धिजीवी किस बात का है जिसके अन्दर लोभ है, मोह है, क्रोध है, अहंकार है, ईर्ष्या है। जो निन्दा करता है, दूसरों को धोखा देता है, फरेब करता है, चुगलियाँ करता है, उसकी तो बुद्धि तेज हो गई है, वह पढ़ा-लिखा नहीं बल्कि मूर्ख व्यक्ति है।

यह बात तो गुरवाणी कहती है सारे वेद, शास्त्र कहते हैं। राजा चुप कर गया और उसने सुबह होते ही सभा बुला ली।

वह अपने वजीर को कहने लगा, वजीर साहिब! हमें यह बताओ कि अपने बीच मूर्ख लोग कितने हैं?

वजीर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

राजा बोला, क्यों वजीर साहिब! कुछ बोल नहीं रहे?

वजीर बोला, महाराज जी! यदि आप पूछते कि सयाने लोग कितने हैं तो मैं गिनकर बता सकता था बाकी यहाँ पर तो सारा संसार मूर्खों से ही भरा पड़ा है, यहाँ बुद्धिमान व्यक्ति तो कोई दिखाई ही नहीं देता है। सबको पता है कि यहाँ संसार में हमेशा के लिए किसी ने नहीं रहना है। यथा -

जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥
अंग - 473

जब यहाँ पर हमेशा के लिए रहना ही नहीं है किस बात का अहंकार? किस बात की मैं व मेरी? फिर इसे यह अभास नहीं हो रहा है कि जो कार्य मैं करता हूँ वे मुझे कितना दुख देंगे।

श्री गुरू नानक देव जी को काबा शरीफ में सवाल किया गया कि हे नानक! यह बतलाओ कि जो लोग नशे पीते हैं, दरगाह में उनका क्या हाल होता है?

महाराज जी कहने लगे, रक्नुद्दीन! दरगाह में जाकर सूक्ष्म शरीर को बहुत अधिक दुख भोगना पड़ता है। एक हजार मन सिक्का रोज गरम करके उसके गले में से निकालते हैं, फिर वह चीखें मारता है और बहुत अधिक दुखी होता है। वहाँ पर (काबा शरीफ में) उन्होंने बहुत सवाल किए, गुरू जी से। गुरू जी ने बताया कि जिसे यही नहीं पता है कि उसे कौन से कर्म करने चाहिए तो शराब व तम्बाकू पीने से क्या होगा?

तनक तमाकू सेवीऐ देव पितर तजि जाइ।

देवजन व पितृजन जो कि तुम्हारे ऊपर कृपा की दृष्टि सदैव ही बनाए रखते हैं, वे अपनी कृपा दृष्टि को उनके ऊपर से हटा लेते हैं। उसके हाथ से पानी भी लेकर पीने से इतना पाप लगता है कि -

पाणी ता के हाथ कउ मधरा सम अघदाइ।

जितना पाप शराब पीने से लगात है उतना ही पाप तम्बाकू वाले के हाथ से पानी लेकर पीने से होता है।

मेरे पास ड्राइवर लोग आते हैं वे कहते हैं कि बाबा जी! हम क्या करें?

मैं उनसे कहता हूँ कि देखो भाई! एक चीज बहुत पवित्र है जो कि समस्त पापों को धो डालती है और वह है - परमात्मा का नाम। जब इस प्रकार की जगह पर तुम्हें भोजन ग्रहण करना पड़े तो फिर तुम अपने भोजन पर निगाह रखकर पाँच बार मूलमन्त्र का पाठ करके और 'त्व प्रसादि भरम का नास' कह कर भोजन ग्रहण कर लिया करो। गुरू जी कहते हैं कि तम्बाकू वाले के हाथ से लेकर पानी पीने का ही इतना पाप लगता है जितना कि शराब पीने का लगता है। शराब पीने का कितना पाप होता है? गुरू जी कहते हैं -

मदरा दहती सपत कुल भाँग दहै तन एक।

शराब सात कुलों का नाश कर देती है और भांग वर्तमान तन का नाश करती है।

जगत जूठ शत कुल दहै निंदा दहै अनेक।

तम्बाकू सौ कुलों का नाश कर देता है। अमेरिका वालों ने रोक लगा दी है कि कोई भी व्यक्ति फैक्ट्री के अन्दर तम्बाकू नहीं पी सकता है, किसी भी सार्वजनिक स्थान पर नहीं पी सकता है। दरअस्ल इसका कारण यह है कि पीने वाले से अधिक इसका धुआँ अन्य लोगों को हानि पहुँचाता है। मैडिकल रिसर्च ने यह सिद्ध कर दिया है कि इसके धुएँ से कैंसर की बीमारी होती है इसीलिए इस पर रोक लगाने की कोशिशें की जा रही हैं। इसमें कैंसर तो है ही साथ ही यह वंश में बढ़ोत्तरी के जीन को भी समाप्त कर देता है। दस पीढ़ियां पहले जिस प्रकार के पूर्वज होते हैं, दसवीं पीढ़ी उसी स्वभाव की हो जाती है, इसी को जीन कहते हैं। इसीलिए पहले खादानियाँ देखा करते थे। शराब भी इसी प्रकार से दोष उत्पन्न करती है। 20 प्रतिशत कैंसर शराब से होती है और 70 प्रतिशत तम्बाकू से होती है क्योंकि ये जीन को काट देते हैं। फलस्वरूप खानदान गलत हो जाता है। अब सारे किसान भी इस बात को समझने लग पड़े हैं। गेहूँ के जीन को छोटा कर दिया है इसलिए अब गेहूँ छोटे कद की रह जाती है लेकिन पैदावार अधिक होती है।

जगत जूठ शत कुल दहै निंदा दहै अनेक।

निन्दा जो है यह तो असंख्य कुलों का नाश कर देती है। थोड़ा बहुत दान-पुण्य करके जो हमारे बुजुर्ग ऊँचे मण्डलों में बैठे हैं, वे भी निन्दा करने वाली अपनी सन्तान को छोड़ देते हैं।

जो नशा पीता है यदि उसे यही नहीं पता है कि दरगाह में जाकर मेरा क्या हाल होना है तो फिर वह किस बात का पढ़ा लिखा है? वह तो बिल्कुल ही मूर्ख है।

इस प्रकार से गुरू जी कहते हैं कि वह तो बहुत बड़ा मूर्ख है क्योंकि -

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना॥'

जो परमात्मा की बन्दगी नहीं करता है, वह तो मूर्ख व अज्ञानी है।

'चलता'

बाबाणियाँ कहानियाँ

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक मार्च, अंग - 23)

एक और घटना आप जी के साथ ऐसी ही घटित हुई, जिसके बारे में गुरबाणी में अंकित है कि सिकन्दर लोधी के समय बनारस में इस्लाम के मुल्ला मौलवियों ने बहुत ही कष्ट दिया। कबीर जी को बाजुओं से बान्ध दिया और पोटली की तरह बना कर मैदान में रख दिया। इन्हें मारने के लिये मस्त हाथी जो शराब के नशे में झूम रहा था, को छोड़ दिया गया। महावत क्रोध में आकर हाथी के सिर पर अंकुश मारता है, वह कबीर साहिब की ओर आता ही नहीं, चिघांड़ कर पीछे को भाग जाता है, काज़ी को हुक्म दिया गया कि हाथी को आगे बढ़ा अन्यथा तुझे यहीं पर काट कर फैंक दिया जायेगा। तू इस हाथी को अंकुश के साथ ज़ोर से चोट मार ताकि यह आगे बढ़े। हाथी चिघाड़ता हुआ उस गठरी रूप बने कबीर जी के पास आ गया। उसने अपनी सूंड के साथ कबीर जी को उठाया और अपने मस्तक के साथ बार बार लगाता है। काज़ी अन्धे ने इस बात को समझने की कोशिश ही न की। इतना कठोर था वह काजी कि इस पर दरगाही प्रभाव के कौतुक का कोई असर न हुआ। कठोर दिल को अभी भी तसल्ली न हुई। कबीर जी फ़रमान करते हैं कि प्रभु प्यारों की वाहिगुरू जान (प्राण) होते हैं -

भुजा बांधि भिला करि डारिओ।
हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ।
हसति भागि कै चीसा मारै।
इआ मूरति कै हउ बलिहारै॥
आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु।
काजी बकिबो हसती तोरु॥
रे महावत तुझु डारउ काटि।
इसहि तुरावहु घालहु साटि।
हसति न तोरै धरै धिआनु।
वाकै रिदै बसै भगवानु॥
किआ अपराधु संत है कीन्हा।
बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा।
कुंचरु पोट लै लै नमसकारै।
बूझी नही काजी अंधिआरै॥
तीनि बार पतीआ भरि लीना।
मन कठोरु अजहू न पतीना।
कहि कबीर हमरा गोबिंदु।
चउथे पद महि जन की जिंदु॥ *अंग - 870-71*

कबीर जी की दृष्टि में वाहिगुरू जी आप ही पवन रूप होकर चल रहे हैं, अपने आप ही पानी रूप बन कर बह रहे हैं, आप ही अग्नि रूप होकर चीज़ों को जला रहे हैं जिसमें आप ही स्पष्ट करके बता रहे हैं कि जो प्रभु का भजन करते हैं उन्हें आग जला नहीं सकती, उनकी दृष्टि में न तो कुछ जलता है, न ही जल रहा है यह तो वाहिगुरू जी जादूगर की तरह आप ही अनेक कौतुक कर रहे हैं। राम नाम के अक्षर जपो, वाहिगुरू जी स्वयं ही रक्षा करेगें। पूरा शब्द इस प्रकार है -

आपे पावकु आपे पवना।
जारै खसमु त राखै कवना॥
राम जपत तनु जरि की न जाइ।
राम नाम चितु रहिआ समाइ॥
का को जरै काहि होइ हानि।
नट वट खेलै सारिगपानि॥
कहु कबीर अखर दुइ भाखि।
होइगा खसमु त लेइगा राखि॥ *अंग - 329*

नाम जपने की अनेक अवस्थाओं में से यह भी एक अवस्था है जहाँ जल डुबो नहीं सकता, आग जला नहीं सकती, सभी जगह स्वयं ही प्रभु दृष्टि गोचर होता है, उसकी दृष्टि में -

तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी। *अंग - 275*

का व्यवहार घटित हो रहा होता है। इस तुक के अन्तरीव भाव पर ही कई प्रेमियों को शंका हो सकती है कि विष तो शारीरिक नियमों के अनुसार अपना काम अवश्य करती है जो खा लेता है उसके रोम रोम में ज़हर का प्रमाद फैल जाता है। उसके दिमाग में जाते ही **brain** का काम बंद हो जाता है, उसका खून नीला हो जाता है फिर अमृत और विष को कैसे समान समझा जा सकता है हम हर बात का उत्तर प्रत्यक्ष मिसाल में से ढूंढते हैं, जिसके लिये महापुरुषों से सुनी हुई कथाओं में से एक कथा का ज़िक्र यहाँ किया जा रहा है।

बाबा खुदा सिंह जी महाराज जिनका असली नाम भाई जसवन्त सिंह था वह वर्तमान हरियाणा राज्य में कैथल के परगने के थानेदार थे? आपको श्री मान 108 बाबा बीर सिंह जी नौरंगाबाद से लगन लगी। आप अपना सारा कारोबार समेट कर, नौकरी से त्याग पत्र देकर अपनी पत्नी सहित नौरंगाबाद पहुँच गये। बाबा बीर सिंह जी से मिलकर आपने पूर्ण रूप से अपने अन्दर से द्वैत का नाश कर दिया। आप शरीर पर केवल कछहरा पहना करते थे, सिर पर भूरी पहनते थे, तथा शरीर पर चादर रखा करते थे। आप मौज मस्ती में भ्रमण करते हुये अफगानिस्तान में काबुल पहुँच गये। वहाँ आप एक दिन मस्जिद में चले गये जहाँ नमाज़ी अपनी साप्ताहिक नमाज़ पढ़ रहे थे। आप जी ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले कई प्रेमियों को धक्के मारकर ताड़ना की कि तू नमाज़ क्यों नहीं पढ़ रहा? नमाज़ पढ़े जाने के उपरान्त मुल्ला मौलवियों ने उन्हें घेर लिया उस दिन काबुल का बादशाह शाही मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये आया हुआ था। उसके रू-ब-रू (आमने सामने) जब पूछा कि तूने नमाज़ पढ़ने वालों को धक्के मारे? तो बाबा जी ने उन नमाज़ियों की मानसिक अवस्था बताते हुये फरमाया कि यह सिजदा कर रहे थे, दुआ भी कर रहे थे, इनके शरीर मस्जिद में थे पर रूह उनकी नफस (घृणा) के अधीन हुई बहुत बुरी बुरी बातें सोच रही थी इसलिये हमें इन्हें धक्के मारने ही थे। बादशाह बहुत समझदार था उसने सारी बात की जाँच पड़ताल करवाई। सचमुच उन नमाज़ियों ने बताया कि उन्होंने हमारे मन की अवस्था को देख कर ही धक्के मारे थे क्योंकि हमारा मन बहुत बुरी बुरी उड़ानें भर रहा था। तब बादशाह ने पूछा दरवेश सांई! तुम्हारा नाम क्या है, जो दो व्यक्ति आपके साथ हैं इनका परिचय दीजिये। आप हिन्दु हो, मुसलमान हो, आप की क्रिया से अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उस समय आपने सत्य वचन उच्चारण किये और कहा कि मैं खुदा हूँ, ये दो मेरे दोस्त हैं - एक मोहम्द है दूसरा रसूल है, बात किसी की समझ में न आई और न ही कोई बादशाह की हजूरी में उन्हें बुरा कहने के लिये तैयार था। इसके पश्चात उनकी कई परिक्षाएं ली गई पर यही पता चला कि यह कोई उच्च कोटि का दरवेश सांई है। बादशाह ने ऐलान किया कि ये मेरे राज्य में खुले आम बिना किसी पाबन्दी के भ्रमण करेगें, कोई इन्हें रोक टोक नहीं। चाहे यह मस्जिद में रहें, चाहे तकिए तपोस्थान में, चाहे मंदिर में, चाहे धर्मशाला, गुरुद्वारे ये रहें इन्हें कोई भी प्रेमी मेरे राज्य में तंग नहीं करेगा। आप जी इस प्रकार सारे अरब देशों में घूमते फिरते वापिस नौरंगाबाद आ गये। उस समय वहाँ महाराजा पटियाला ने अपने राज महलों में दर्शन देने के लिये प्रार्थना की। आप जी ने प्रवान कर ली। कुछ समय बाद आप जी राज महलों में पहुँच गये, उन दिनों में सारे राज महलों में कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का पूरी तरह से कब्ज़ा हुआ करता था। गुरमत की जगह मनमत का प्रभाव ज्यादा हो रहा था। तिथि, वार ज्योतिषी को पूरी तरह से माना जाता था। तन्त्र विद्या में विश्वास का प्रचार आम था। बाबा जी के सत्य वचनों से यह धुन्ध उड़ने लगी। बाणी का प्रकाश होने लगा। आप जी हर रोज सुखमनी साहिब की कथा किया करते थे। एक दिन आप जी इस शब्द की कथा कर रहे थे -

प्रभ की आगिआ आतम हितावै।
जीवन मुकति सोऊ कहावै।
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु।
सदा अनंदु तह नही बिओगु।
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी।
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी।
तैसा मानु तैसा अभिमानु।
तैसा रंकु तैसा राजानु।
जो वरताए साई जुगति।
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति॥

अंग - 275

कथा समाप्त होने के उपरान्त जो राज पण्डित था जिसके मन में बाबा जी की उपस्थिति को देख कर तथा उनके सत्कार को देख कर ईर्ष्या की लपटें जलती रहती थीं, वह

सदा ही यह चाहता था कि मैं किस तरह से इस महापुरुष को राजा तथा संगत की नज़रों में नीचा दिखाऊँ। उसने कथा के भोग उपरान्त महाराज की ओर देखते हुये आज्ञा मांगी की हज़ूर यदि आज्ञा हो तो मैं महापुरुष से एक शंका की निवृत्ति कर लूँ क्योंकि वह बात इतनी गलत है यदि यह संशय बना रहा तो गुरबाणी के सिद्धान्त को हम सन्देह की नज़रों से देखेगें -

तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी। *अंग - 275*

हज़ूर! आप जानते हो कि ज़हर का काम है आदमी को मार देना और अमृत का काम है मरते मरते आदमी को जीवित कर देना। हो सकता है गुरू साहिब ने यह अति कथनी के रूप में कविता के पद बनाने के लिये लिख दिये हों। यह अनुभव पर आधारित नहीं है। महाराजा पटियाला ने आज्ञा दे दी कि आज तो समय बहुत हो चुका है। कल मैं फिर कथा सुनने आऊंगा इस प्रश्न का मेरे सामने ही निर्णय होगा।

दूसरे दिन फिर कथा हुई, राज पण्डित खड़ा हो गया उसके हाथ में बहुत तेज़ प्रभाव करने वाला ज़हर का कटोरा भरा हुआ था तो उसने कहा कि ज़हर ने अपना काम करना ही है उसने नहीं देखना कि मुझे पीने वाला कोई महापुरुष है या पापी है। आग का स्वभाव भस्म कर देना है उसने नहीं देखना कि मैं महापुरुष को जला रही हूँ या पापी के शरीर को जला रही हूँ। उसने अपना स्वभाव नहीं बदलना। गुरू साहिब का यह कह देना अमृत और विष एक ही है; जीवन मुक्त पुरुष के लिये, यह कोई अलंकारिक बात तो हो सकती हैं पर प्रत्यक्ष निर्णय पर आधारित नहीं हो सकती। सन्त जी ने अपनी कथा में यह बात कही थी कि जीवन मुक्त पुरुष को हर्ष तथा शोक, मिलाप और वियोग, सोना और मिट्टी, अमृत और ज़हर, मान तथा अपमान, रंक और राजा एक ही नज़र आया करते हैं। पर हज़ूर ज़हर तो ज़हर ही है और बातें तो हो सकती हैं पर ज़हर तो शरीर पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता ही है। यदि ज़हर अमृत जैसा ही होता है तथा महापुरुष इस बात पर निश्चय रखते हैं तो यह महापुरुष ज़हर का प्याला पीकर हमारा सन्देह दूर करें। उस समय महापुरुषों ने इस राज पण्डित की मूढ़ता पर विचार करते हुये फ़रमान किया कि भाई! संगत में बेअन्त जीवन मुक्त पुरुष बैठे होते हैं। चलो; किसी का छिपा हुआ भेद क्यों प्रकट करना है। इसका निर्णय हम अपने शरीर पर ही करके दिखा देते हैं। बाबा जी ने वह प्याला गटा गट पी लिया और हाथ साफ करके अगली पंक्ति की व्याख्या शुरू कर दी -

पारब्रहम के सगले ठाउ।
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ।
आपे करन करावन जोगु।
प्रभ भावै सोई फुनि होगु।
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग।
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग।
जैसी मति देइ तैसा परगास।
पारब्रहमु करता अबिनास। *अंग - 275*

आप कथा करते रहे। राज पण्डित आपके चेहरे की ओर देखता रहा। आपके न तो बोल धीमे पड़े और न ही ऐसा कोई चिन्ह प्रकट हुआ कि जिससे यह पता चल सके कि अब ज़हर का प्रभाव शरीर पर पड़ना शुरू हो गया है। अगले दिन फिर महापुरुष आये उन्होंने महाराज तथा संगत की हाज़िरी में बताया कि राज पण्डित जी! आप कोरे पण्डित हो और तुम्हें पण्डित की उपाधि पण्डित के घर पैदा होने से मिली है। आप असली पण्डित नहीं हो आपको आत्मिक सूझ होने के कारण ऐसे संशय मन में उठते हैं। वेद पढ़ने से मन का अन्धकार दूर नहीं हो जाता। आप माया के व्यापारी हो। आप तृष्णा की भूख में भूखे रह कर गवारों की तरह अपना जीवन बर्बाद कर रहे हो। चाहे आप चारों वेद पढ़ जाओ तथा उसकी टिप्पणी किये जाओ पर फिर भी तीन गुणों की लगी हुई मैल दूर नहीं हो सकती। आप द्वैत में फंसे हुये हैं। पण्डित जी वचन सुन कर लोहे की तरह गर्म हो गये। आज पहली बार सुना था कि किसी ने राज पण्डित की अवस्था से पर्दा उठाया है। महापुरुषों ने कहा कि राज पण्डित जी। क्रोध छोड़ो तथा आप अपने मन की खोज करो। जैसा कि मेरे वाहिगुरू ने फ़ुरमान किया है -

मुख ते पड़ता टीका सहित।
हिरदै रामु नही पूरन रहत।
उपदेसु करे करि लोक द्रिड़ावै।
अपना कहिआ आपि न कमावै॥
पंडित बेदु बीचारि पंडित।
मन का क्रोधु निवारि पंडित॥
आगै राखिओ सालगिरामु।

मनु कीनो दहदिस बिस्रामु।
तिलकु चरावै पाई पाइ।
लोकु पचारा अंधु कमाइ॥
खटु करमा अरु आसणु धोती।
भागठि ग्रिहि पड़ै नित पोथी।
माला फेरै मंगै बिभूत।
इह बिधि कोई न तरिओ मीत॥ *अंग - 887*

पंडित मैलु न चुकई
जे वेद पड़ै जुगचारि।
त्रै गुण माइआ मूलु है
विचि हउमै नामु विसारि।
पंडित भूले दूजे लागे
माइआ कै वापारि।
अंतरि त्रिसना भुख है
मूरख भुखिआ मुए गवार।
सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ
सचै सबदि वीचारि।
अंदरहु त्रिसना भुख गई
सचै नाइ पिआरि।
नानक नामि रते सहजे रजे
जिना हरि रखिआ उरिधारि॥ *अंग - 647*

हम तो पण्डित उसे कहते हैं जो विचार संयुक्त हो, जिसके अन्दर पूरी तरह से दृढ़ हो कि -

निरगुणु सरगुणु आपे सोई।
ततु पछाणै सो पंडितु होई। *अंग - 128*

और पण्डित जी! आप तो उन पण्डितों में से हो जो विद्या पढ़ पढ़ कर चिल्लाते हैं। ब्रह्म विचार के भेद संसार को बताते हो और आप अपने आप को नहीं खोजते और माया में मस्त हो। उन्हें क्या कहा जाये। महाराज जी फ़रमान करते हैं -

पंड़ितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा
माइआ मोहु पिआरु।
अंतरि ब्रहमु न चीनई
मनि मूरखु गावारु।
दूजै भाइ जगतु परबोधदा
ना बूझै बीचारु।
बिरथा जनमु गवाइआ
मरि जंमै वारो वार॥ *अंग - 86*

जो पण्डित गुरु शब्द की कमाई करता है उस पर से त्रिगुणी माया का प्रभाव खत्म हो जाया करता है-

सो पंडितु गुर सबदु कमाइ।
त्रै गुण की ओसु उतरी माइ। *अंग - 888*

सो पण्डित वह है -

सो पंडितु जो मनु परबोधै।
राम नामु आतम महि सोधै।
राम नाम सारु रसु पीवै॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै।
हरि की कथा हिरदै बसावै।
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै।
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल।
सूखम महि जानै असथूलु।
चहु वरना कउ दे उपदेसु।
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु॥ *अंग - 274*

सो जिसके हृदय में हर समय प्रभु समाया रहता है और जिसने अज्ञान का अन्धेरा दूर करके ज्ञान के प्रकाश में वास कर लिया हो उसे गुरु साहिब पण्डित की उपाधि देते है -

डंडै डिआनु बूझै जे कोई
पड़िआ पंडितु सोई।
सरब जीआ महि एको जाणै
ता हउमै कहै न कोई॥ *अंग - 432*

इस प्रकार महापुरुषों की दृष्टि प्रत्पक्ष रूप में हुआ करती है तथा जो कुछ भी आप वचन करते हैं वह अपने ऊपर अनुभव द्वारा प्राप्त किये होते हैं।

सो अन्त में मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब महापुरुष नाम में लीन हो जाते हैं तो उनका अस्तित्व सदीवी तौर पर समाप्त होकर प्रभु रूप हो जाया करता है। वे प्रभु ही हुआ करते हैं जैसा कि फ़रमान है-

जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ।
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ॥ *अंग - 397*

'चलता'

आत्म ज्ञान

सन्त वरियाम सिंह जी
सम्पादक - प्रो. गुरदेव सिंह

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक मार्च, पृष्ठ - 43)

5. हउमै बूझै ता दरु सुझै

सत्संग की महिमा बहुत बड़ी है क्योंकि पुण्य कर्मों के बिना सत्संग कभी भी प्राप्त नहीं हुआ करता है और सत्संग ही एक ऐसी जगह है जहाँ पर आकर जीव को सद्बुद्धि प्राप्त होती है। सद्बुद्धि यह है कि यहाँ पर आकर यह समझ प्राप्त होती है कि मेरा संसार पर आना क्यों हुआ? सत्संग में आकर सत्पुरुषों के वचन श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाना सर्वोच्च कर्म है। सत्संग में प्रत्येक को दाखिला नहीं मिला करता है क्योंकि यहाँ पर वही आ सकता है जिसके भाग्य में लिखा हो।

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥
कहु नानक तिसु भइओ परापति
जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ ***अंग - 642***

सत्संग के द्वारा जीव को पता लगता है कि वह कौन से कारण हैं जिनकी वजह से मैं प्रभु जी से बिछुड़ कर दुखी हो रहा हूँ और उसके साथ मेरा मिलाप कैसे होगा? यहाँ पर आकर सारे गाते भी हैं, सुनते भी हैं लेकिन किसी को फल कम मिलता है और किसी को फल अधिक मिलता है और कई ऐसे भी होते हैं जो कि खाली रह जाते हैं। जो सिक्ख-सेवक सत्संग में आकर सतगुरू जी को हाजिर व प्रत्यक्ष समझ कर श्रद्धापूर्वक गुरवाणी गाते हैं, सुनते हैं तथा सुनकर गुरू जी के वचनों को सत्य करके मानते हैं तो उनका लेखे में पड़ जाता है। यदि हम गुरू महाराज जी के इन ब्रह्म वाक्यों पर निश्चय करके मान लें तो हमारा उद्धार अवश्यम्भावी है। इसका फल कितना अधिक मिलता है, इसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं।

सेवक सिख पूजण सभि आवहि
सभि गावहि हरि हरि उतम बानी ॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै
जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥
अंग - 669

कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥
अंग - 546

महाराज जी कहते हैं कि उन व्यक्तियों को कई करोड़ यज्ञों का फल प्राप्त होता है जो कि सत्संग में आकर हरियश को श्रवण करते हैं तथा गाते हैं। यदि इस बात पर हम गहराई से विचार करें तो मान लो यदि कोई व्यक्ति पैदा होते ही यज्ञ करने शुरू कर दें भावार्थ उसके नमित्त माँ-बाप ही यज्ञ करने शुरू कर तो सौ वर्ष की उम्र तक उसके 36 हजार 5 सौ यज्ञ हो जाएंगे और हजार वर्ष की आयु वाले के तीन लाख 60 हजार, दस हजार साल की आयु वाले के तीन करोड़ साठ लाख हजार यज्ञ हो जाते हैं। वैसे इतनी लम्बी उम्र तो किसी को मिलती ही नहीं है और न ही इतनी लम्बी उम्र वाला व्यक्ति आज तक दुनिया में आया ही है जिसने कि इतने अधिक यज्ञ या पुण्य कर्म किए हों। यही कारण है कि सत्संग में आकर जो फल प्राप्त होता है उसका अनुमान लगा पाना ही मुश्किल है। दरअस्ल सत्संग में आकर समर्थ गुरू का मिलाप हो जाता है जो कि सर्वाधिक बड़ा पुण्य फल हुआ करता है। गुरू जी कहते हैं कि प्रेमीजनो! सतगुरू जैसा दाता संसार में अन्य कोई नहीं हुआ करता है क्योंकि समर्थ गुरू या पूर्ण गुरू, हउमै के बन्धनों को काट कर जीव को जीव भाव से उठाकर परमात्मा के साथ ही मिला देता है-

सतिगुर जेवडु दाता को नही
सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ
जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ***अंग - 465***

सतिगुर पुरखु अगंमु है निरवैरू निराला।
जाणहु धरती धरम की सची धरमसाला।
जेहा बीजै सु लुणै फल करम समाला।
जिउ करि निरमलु आरसी जगु वेखणि वाला।
जेहा मुहु करि भालीऐ तेहो वेखाला।
सेवक दरगह सुरखरू वेमुखु मुह काला।
भाई गुरदास जी, वार 34/1

यह जीव परमेश्वर के साथ से बिछुड़ कर अरबों-खरबों सालों से दुखी हो रहा है और यह इतना भूल चुका है कि

इसे यह भी पता नहीं है कि मैं कौन हूँ? और कहाँ से आया हूँ? यदि कोई पूछे तो हम कह देंगे कि मैं अमुक हूँ और अमुक शहर से आया हूँ। माया के प्रभाव के कारण अपने आप का ज्ञान भूल गया कि मैं कौन हूँ और इसीलिए हम चौरासी के चक्रव्यूह में चक्कर काटते रहते हैं -

सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥
एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ॥
अंग - 999

हम तो स्वयं को बहुत बुद्धिमान समझते हैं और कहते फिरते हैं कि हमारे जैसा बुद्धिमान कोई नहीं है। बड़े-बड़े समारोह करके डिग्रियों से सम्मानित किया जाता है तथा उन फोटोओं के सारे संसार में टैलीविजन द्वारा दिखाया जाता है। कई यह भी कहते हैं कि हमें सारा संसार जानता है लेकिन यदि उनसे पूछा जाए कि भद्रपुरुष! तुम स्वयं को जानते हो या नहीं? उस समय शायद ही कोई होगा जो यह बता सके क मैं कौन हूँ। यदि पूछा जाए कि तुम वाहिगुरू को जानते हो? तो वे कह देंगे कि वाहिगुरू तो कण-कण में व्याप्त है लेकिन वे हउमै के अभिमान में आकर कहते हैं कि वाहिगुरू एक है, वाहिगुरू एक है। यह रट तो सभी लगा रहे हैं लेकिन महाराज जी कहते हैं कि यदि सचमुच ही ईमानदारी से, हम अपनी पड़चोल करें यानि कि अपने अन्दर झांक कर देखें तो फिर हमारी दुविधा समाप्त हो जाती है -

एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥
अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरू महलु सिञापै ॥
अंग - 930

भद्रपुरुष! यदि यह बात तुम्हारी समझ में आ गई यानि कि यह पहचान आ गई कि अन्दर व बाहर एक वाहिगुरू ही है तो फिर चिन्ता किस बात की है? चिन्ता और घबराहट तो तभी तक थी, जब तक कि हमने जाना नहीं था। जब जान लिया, पहचान लिया तो फिर घबराहट किस बात की? कौन ऊँचा और कौन नीचा? कौन बिछुड़ा हुआ और कौन मिला हुआ? यानि कि फिर सारी सांसारिक बातें समाप्त हो जाती हैं। लेकिन प्रेमीपुरुष! तुम उसे पहचानो तो सही। तुम तो कहते थे कि मैं अमुक सिंह हूँ। इस संसार की सारी चीजों को अलग-अलग करके देख लो तुम्हें पता चल जाएगा कि तुम कौन हो।

स्वामी राम तीर्थ जी उच्च कोटि के सन्त थे उन्होंने एक बार कैलेफोर्निया (अमेरिका) में जाकर लैक्चर दिया। एक अमेरिकन प्रेमी लैक्चर से बहुत अधिक प्रभावित हुआ और उसने स्वामी जी को अपने घर दर्शन देने के लिए विनती की। आप कहने लगे, प्रेमीपुरुष! आप अपना पता लिख कर दे दो। उस अमेरिकन प्रेमी ने अच्छी तरह से पता लिख दिया लेकिन आप गए ही नहीं। उसने दूसरा दिन आकर पुनः विनती की कि महाराज जी! आप आए ही नहीं? स्वामी जी बोले, बन्धु! आपका पता ही गलत था। दूसरे दिन वह अपने घर का नक्शा बनाकर दे गया लेकिन वे फिर भी नहीं गए। तीसरे दिन वह फिर आ गया और उसने अब फिर बहुत विनम्रतापूर्वक विनय की कि महाराज जी! आप अब भी नहीं आए? स्वामी जी फिर वही कहने लगे, बन्धु! जब आपका पता ही गलत है तो मैं कैसे आऊँ?

तुम पहले यह बताओ कि तुम कौन हो? अब उसने अपना नाम व पद बतला दिया।

स्वामी जी कहने लगे प्रेमीपुरुष! आओ! हम थोड़ी सी विचार कर लेते हैं, देखो! पैर के अंगूठे से लेकर सिर की चोटी तक तुम जिस अपने शरीर को मैं कहते हो तो थोड़ी देर के लिए उसे हम मान लेते हैं लेकिन मान लो यदि तुम्हारी दोनों टांगें काट दी जाएँ और दोनों भुजाएँ काट कर एक तरफ रख दी जाएँ तथा सिर को काट कर दूसरी तरफ रख दिया जाए तो तुम क्या कहोगे? वह बोला जी फिर मैं कहूँगा कि वह मेरी टांगें हैं, वह मेरी भुजाएँ हैं, वह मेरा सिर है और यह मेरा धड़ है। स्वामी जी बोले, फिर तुम कौन हो? बन्धु! तुम शरीर नहीं बल्कि इसके अन्दर रहने वाले निवासी हो। वह एकदम से बात समझ गया और स्वामी जी के चरणों पर गिर पड़ा तथा कहने लगा, स्वामी जी! आपने मुझे अन्धकार के गर्त में से बाहर निकाल लिया है। आप ही कृपा करके बतलाओ कि मैं कौन हूँ? स्वामी जी बोले, प्रेमीपुरुष! इस बात को जानना इतना आसान नहीं है बल्कि इसके लिए साधन करने पड़ते हैं, समर्थ गुरू के पास आकर अपने आप को बेचना पड़ता है। जब तक साधक स्वयं को गुरू के पास बेचता नहीं है, तब तक उसे यह ज्ञान नहीं हो पाता है। गुरू महाराज जी भी इसी प्रकार से फुरमान करते हैं -

मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥ *अंग - 286*

जिस दिन यह साधक या सिक्ख गुरु के समक्ष स्वयं को आत्म समर्पित कर देगा तो फिर उसका अहंभाव दूर हो जाएगा क्योंकि हउमै या अहंभाव ही ऐसा तत्व है जो कि इसे परमेश्वर से दूर करके रखता है।

'चलता'

मिलु साध संगति भजु केवल नाम

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥
भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥
अंग - 1377

अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥
जा की सरणि पइआँ सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥ 1 ॥ रहाउ॥
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई॥
तिन की धूरि नानकु दासु बाछै
जिन हरि नामु रिदै परोई ॥ अंग - 618

बिनु भागा सतसंगु न लभै
बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ अंग - 95
कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥
अंग - 1369

कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥
संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरम राइ ॥
अंग - 1375

कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥
अंग - 1369

परम सम्माननीया गुरू प्यारी साधु संगत जी! आओ! ख्यालों को बाहर जाने से रोकने का यत्न करते हुए अपनी चित्त वृत्तियों को एकाग्र करें तथा जिह्वा की पवित्रता के लिए सभी उच्चारण करो जी 'सतिनाम श्री वाहिगुरू'।

महाराज जी की अपार कृपा हुई है कि सभी भाग्यशाली लोग सत्संग मण्डल में पहुँचे हैं। यदि थोड़ा सा समय भी सत्संग करने का मिल जाए यानि कि 'कबीर ऐक घड़ी' जितना समय भी मिल जाए तो भी उसका कल्याण सम्भव है। अब एक घड़ी कितनी होती है? साढ़े चौबीस मिनट की। उससे भी आधी और उससे भी आधी। महाराज जी तो यहाँ तक कहते हैं कि - एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ काल फास के बीच न आइओ।। सत्संग किसे कहा जाता है। सत्संग उसे कहते हैं कि जहाँ पर आने से आन्तरिक अवस्था का भेद खुल जाए -

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ अंग - 293

नाम के सहारे ही सब कुछ हो रहा है -

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ अंग - 284

इसलिए नाम के साथ जुड़ना अत्यावश्यक है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि नाम कहाँ है? दरअस्ल नाम हमारे अन्दर ही है और नाम के अन्दर स्थिति हो जानी ही असली सत्संग है। अब आज आपने प्रत्यक्ष रूप में देखा है कि यहाँ पर कितनी आंधी आई, तूफान आया, बारिश आई और तीन बार टैंट लगाना पड़ा लेकिन आप सबका दृढ़ इरादा था। यथा-

झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरू देखण जाई ॥
अंग - 757

यह दृढ़ इरादे की बात है। अतः यदि सत्संग मिल जाए तो यह बहुत ही अच्छे भाग्यों की निशानी है।

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ अंग - 12

वास्तविकता तो यह है कि हमें मनुष्य जन्म की प्राप्ति ही इसलिए हुई है कि हम सेवा व सिमरन करें। कितना सुन्दर है यह आनन्दपुर साहिब। यह तो आनन्दों की पुरी है। साढ़े तीन सौ साल इस इलाके को हो चुके हैं और आज यहाँ पर गुरू जी की कृपा में और भी वृद्धि हो गई है।

श्री गुरू तेग बहादर जी ने तिलक व जनेऊ की रक्षार्थ इसी आनन्दपुर साहिब से प्रस्थान किया था। उस समय धन्य श्री गुरू गोबिन्द सिंह महाराज जी के शरीर की आयु केवल नौ वर्ष ही थी जिन्होंने अपने पिता जी को यहाँ से ही भेजा। 19 जून सन् 1665 ई. को श्री गुरू तेग बहादर जी ने इस रमणीक स्थान का शिलान्यास किया और जब श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी गोविन्द राय के रूप में पटना साहिब से यहाँ पर पहुँचे तो गुरू जी ने आनंद साहिब का पाठ किया तथा इसका नाम श्री आनन्दपुर साहिब पड़ गया। यह अत्यन्त सुन्दर इलाका है।

सत्संग के माहत्म्य के बारे में गुरू जी का फुरमान है-

कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥

अंग - 546

करोड़ों यज्ञों का फल सत्संग के माध्यम से प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में दो महापुरुषों का संवाद हुआ जिसके उल्लेख अध्यात्मिक जगत में हमें प्राप्त होता है। एक वाद होता है और दूसरा संवाद होता है। संवाद से ही कोई परिणाम सामने आ पाता है। एक महापुरुष थे विश्वामित्र जी। आप कहने लगे कि तप साधना श्रेष्ठ है क्योंकि उनकी तप साधना बहुत अधिक थी। दूसरी तरफ महापुरुष वशिष्ठ जी कहने लगे कि सत्संग का महात्म्य अधिक है। दोनों में पारस्परिक संवाद चल पड़ा। संवाद करते-करते कहने लगे कि चलो किसी तीसरे महात्मा से निर्णय करवा लेते हैं। अतः वे दोनों शिव जी, ब्रह्मा जी व विष्णु जी के पास चले जाते हैं और अपना सवाल उनके समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। अब सत्संग का महात्म्य बताना भी कोई सरल कार्य नहीं है -

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ *अंग - 72*

सत्संग में नाम की व्याख्या है -

साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥
जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥

अंग - 81

अब वे तीनों इस सवाल का जवाब नहीं दे पाए। उस समय वे दोनों महात्मा, शेष नाग जी के पास चले गए जो कि नित्य प्रतिदिन परमात्मा के 2000 नए नामों से उनका सिमरन करता है। जब उनसे सवाल किया तो वे बोले देखो मैं तो धरती को सम्भाल रहा हूँ, इसलिए मेरे पास तो इसका जवाब देने के लिए फालतू समय नहीं है क्योंकि यह जो धर्म रूपी बैल है, इसके सहारे ही धरती खड़ी है -

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ *अंग - 3*

मुझे इस श्रेष्ठ कार्य (प्रभु जी का सिमरन) को रोक कर तुम्हारे सवाल का जवाब देना पड़ेगा। मैं रोज 2000 नए नाम उच्चरित करके प्रभु जी का सिमरन करता हूँ। क्योंकि-

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ *अंग - 284*

अतः आप लोग पहले हमें इसके बदले में तप-फल प्रदान करो तभी मैं तुम लोगों के सवाल का जवाब दे पाऊंगा।

अब विश्वामित्र जी उसे अपनी तप साधना में से पहले सौ वर्ष का तप-फल दिया और बाद में एक हजार साल का तप भी दे दिया लेकिन वह जैसे ही अपने ध्यान को इनकी तरफ करता है तो धरती डोलने लग पड़ती है। जब धरती डोलने से नहीं रुकी तो फिर वशिष्ठ जी एक घड़ी सत्संग का फल उसे देते हैं। धरती तुरन्त डोलने से रुक जाती है। उस समय शेषनाग जी बोले, महात्माजनो! अब तो आप लोगों को स्वतः ही आपके सवाल का जवाब प्राप्त हो गया होगा कि जो धरती इतने अधिक तपस्या के फल को देने से भी डोलायमान रही वही धरती सत्संग के फल को प्राप्त करके तुरन्त ही स्थिर हो गई। अतः साधु संगत जी! सत्संग का बहुत बड़ा महात्म्य बतलाया गया है। कल्युग के अन्दर अन्य कर्म इतने फलदायक नहीं हैं, जितना सत्संग श्रवण करके उस पर अमल करना फलदायी है। यथा -

पाठु पड़िओ अरू बेदु बीचारिओ
निवलि भुअंगम साधे ॥
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ
अधिक अहंबुधि बाधे ॥ 1 ॥
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई
मै कीऐ करम अनेका ॥
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥

अंग - 641

ऐसा नहीं है कि कर्मकाण्डों का कोई फल है ही नहीं। फल तो प्राप्त होता है लेकिन वास्तविकता यह है मनुष्य कल्युग का समय होने के कारण अहंभाव में रहता है और वह शुभ कर्म यानि कि दान-पुण्य करके कहता है कि मैंने किया है, मैंने बहुत महान कार्य किया है और गुरू जी कहते हैं कि -

जब लगु मेरी मेरी करै ॥
तब लगु काजु एकु नही सरै ॥
जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥
तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ *अंग - 1161*

इसलिए -

मोनि भइओ करपाती रहिओ
नगन फिरिओ बन माही ॥
तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए॥
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥
हउ हउ करत बंधन महि परिआ
नह मिलीऐ इह जुगता ॥ *अंग - 642*

अतः उपर्युक्त सभी कार्यों को करने के बाद भी इन्सान का छुटकारा नहीं हो पाता है और वास्तविक छुटकारा तो नाम के साथ अभेद होकर ही हो पाता है। नाम के अतिरिक्त तो जो भी दिखाई पड़ता है उसके बारे में गुरू जी का फुरमान

है -

जोग सिध आसण चउरासीह
ए भी करि करि रहिआ ॥
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै
हरि सिउ संगु न गहिआ ॥ 6 ॥
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥
अंग - 642

इन सभी की अपेक्षा श्रेष्ठ कर्म यही हैं जिसे कि हम लोग कर रहे हैं -

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥
कहु नानक तिसु भइओ परापति
जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ अंग - 642

जब इस जीव के संचित कर्म इसे फल देने के लिए तैयार होते हैं तो फिर कहीं सत्संग की प्राप्ति हो पाती है। कुसंगत तो हरेक जगह पर ही मिल जाती है लेकिन यह जो सत्संग है -

बिनु भागा सतसंगु न लभै
बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ अंग - 95

कल्युग का समय होने के कारण सर्वाधिक महात्म्य सत्संग का ही है -

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥
गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥
आपि तरै सगले कुल तारे
हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ अंग - 1076

इसके अन्दर भी गुरू जी ने शर्त रख दी है कि यह सत्संग इतना फलदाई कैसे होगा। गुरू जी कथन करते हैं कि-

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥ अंग - 295

इस प्रकार से यह सत्संग पूरा फल प्रदान करता है। मिलिट्री के अन्दर जैसे सावधान कहने पर एकदम से 90° पर खड़े हो जाते हैं। निःशंक रूप से वहाँ पर शारीरिक रूप से सावधान होने की बात है लेकिन सत्संग में मानसिक रूप से सावधान होने की बात कही गई है। शारीरिक बात का जहाँ तक सम्बन्ध है उसके बारे में सम, दम, यम, नियम, आसन की बात है। आसन के बाद प्राणायाम है फिर प्रत्याहार है। ये सारे बहिरंग साधन हैं लेकिन जो आन्तरिक चित्त की एकाग्रता की बात है वह धारना, ध्यान व समाधि की अवस्थाओं में सम्पन्न होती है। यह अवस्थाएँ कैसे आ पाएँगी? दरअस्ल जब हम सत्संग में एकत्र होते हैं, सामूहिक रूप से, तो वहाँ पर एक विचित्र प्रकार का माहौल सृजित हो जाता है। वहाँ पर लहरें ही ऐसी होती हैं कि हम एकाग्रता में चले जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है सत्संग के माहौल में असंख्य दिव्य आत्माएँ भी आकर हाजिर हो जाती हैं। यथा -

हरि की कथा होत है जहाँ,
गंगा भी चल आवत तहाँ।

वहाँ पर सारी पावन आत्माएँ आकर एकत्र हो जाती हैं। इसीलिए सत्संग का अकथनीय फल प्राप्त होता है। सत्संग में आकर हम गुरु चरणों पर नमस्कार करते हैं, गुरू चरणों पर झुकते हैं। झुकना भी एक बहुत बड़ी अवस्था होती है क्योंकि गुरू चरणों में झुकना आन्तरिक विनम्रता की निशानी होती है। दूसरी तरह से गुरू जी ऐसा भी कथन करते हैं कि-

अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥
अंग - 470

लेकिन सत्संग में आकर तो हार्दिक रूप से ही झुकना होता है। जब हम गुरू चरणों पर नमस्कार करते हैं तो फिर चरण-धूल हमारे मस्तिष्क को लगती है। उससे क्या होता है? उससे हमारे माथे पर लिखे हुए गल्त लेख सही हो जाते हैं। जिस प्रकार से मोहर होती है उस पर उल्टे अक्षर अंकित होते हैं लेकिन जब वह कागज पर लगती है तो उसके अक्षर सीधे हो जाते हैं। सत्संग में आकर हमारा मस्तिष्क गुरू चरणों के साथ लगता है। फलस्वरूप उल्टे लेख सीधे हो जाते हैं। यदि यह जीव सत्संग नहीं करता है तो फिर उसे धिक्कारें पड़ती हैं। कितनी धिक्कारें पड़ती हैं? गुरू पातशाह जी कहते हैं कि यदि यह जीव आकर गुरू चरणों पर झुकता नहीं है तो फिर उसके जीवन को ही धिक्कार है -

जो सिरू साई ना निवै सो सिरू कीजै काँइ ॥
कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥ अंग - 1381

एक तरफ गुरवाणी कह रही है कि ऐ प्रेमीपुरुष! यदि तुम्हारा शीश गुरू-चरणों पर नहीं झुकता है तो फिर यह शीश किस काम का है। बाबा फरीद जी तो यहाँ तक कहते हैं कि ऐसे शीश को तो चूल्हे की आग में रखकर ही जला देना चाहिए। यथा -

उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥
जो सिरू साँई ना निवै सो सिरू कपि उतारि ॥
अंग - 1381

उजू कहते हैं पाँच स्नाना करने को। गुरवाणी तो सर्वधर्म समभाव की बात करती है अतः गुरवाणी में मुसलमान वीरों की तरफ संकेत करके कहा गया है कि -

फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥
कब ही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥
अंग - 1381

सबकी सांझी गुरवाणी, सबको उपदेश भी सांझा ही करती है यदि शीश गुरू चरणों पर आकर झुकता ही नहीं है तो फिर उसका क्या लाभ है? क्योंकि इस मनुष्य को यह

शरीर की प्राप्ति ही इसलिए हुई है कि -

गुर सेवा ते भगति कमाई ॥
तब इह मानस देही पाई ॥ *अंग - 1159*

अब इसके बाद आँखों की बात आती है। इस बारे में भाई गुरदास जी कथन करते हैं कि -

धिगु लोइण गुर दरस विणु वेखै पर तरणी।
भाई गुरदास जी, वार 27/10

हमारी दृष्टि गुरू, गुरु के प्यारों या गुरू की संगत पर टिकनी चाहिए यदि यह पराए रूप, पराए धन या पराए तन पर जाकर रुकती है फिर तो उसे धिक्कार ही है। फिर उसकी मनोवृत्ति कैसी होगी? फिर तो -

रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥
लबै मालै घुलि मिलि मिचलि उंघै सउड़ि पलंघु ॥
अंग - 1288

यह सम्बन्ध शरीर का है लेकिन मन प्रेरित करता है। मन सदैव ही चंचल है, यह कभी भी टिकता नहीं है। यह तभी टिकता है जबकि साधन सम्पन्न गुरुमुख प्यारों के दर्शन हों।

सेई पिआरे मेल जिनाँ मिलिआँ तेरा नाम चित आवे।
नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥
अंग - 1362

अतः इन आँखों से उनके दीदार करने चाहिए जिनके दीदार करने से परमात्मा का नाम चित्त में आए और बसे। यह कृपा गुरू जी ही करते हैं।

गुरू या संगत के बिना जो आँखों और कुछ देखती हैं या देखना पसन्द करती हैं उन्हें तो धिक्कारें ही पड़ती हैं।

लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥
संनी देनि विखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥ *अंग - 316*

आपीनै भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरू सिधाइआ॥
वडा होआ दुनीदारू गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै
करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
थाउ न होवी पउदीओ हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ
॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ॥ *अंग - 464*

आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥
अंग - 520

इसके आगे कानों के बारे में आता है -

धिगु सरवणि उपदेस विणु सुणि सुरति न धरणी।
भाई गुरदास जी, वार 27/10

करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥
अंग - 1362

कानों को क्या करना चाहिए? इन्हें बाहर का कूड़-कबाड़ सुनने की बजाए आन्तरिक नाद सुनना चाहिए। दरअस्ल सुरति का काम था सुनना जहाँ से आवाज आएगी, सुरति स्वाभाविक रूप से उस दिशा में जाएगी। सुरति का काम था दिव्य शब्द को श्रवण करना। गुरमति का मार्ग ही है - सुरति शब्द का मार्ग। श्वासों के साथ जब हम सुरति को जोड़ देते हैं उसके साथ गुरू के मन्त्र को जोड़ देते हैं तो इसकी मदद से हमारी सुरति ऊँची उठती है। जिधर से शब्द की आवाज आती है, उस दिशा में सुरति जाती है। जब हम टैलीविजन पर अन्य निम्न स्तर के दृश्य देखते हैं तो फिर 84 प्रतिशत तो उनके देखने से ही असर पड़ जाता है। 14 प्रतिशत सुनने से असर पड़ता तथा 1 प्रतिशत नासिका से और 1 प्रतिशत स्पर्श से असर पड़ता है।

यदि आँखें गुरू के दर्शन दीदार करती हैं, गुरू के प्यारों के दर्शन दीदार करती हैं, तो फिर चित्त में नाम का स्मरण हो जाएगा। यदि आँखें बाहरी रंग तमाशे देखती हैं तो वे बिल्कुल भी तृप्त नहीं हो पाएँगी।

इस प्रकार उन कानों को धिक्कारें दी गई हैं जो गुरू का उपदेश नहीं सुनती हैं।

आज धन्य श्री गुरू दशमेश जी का दरबार सजा हुआ है। आप आवाज देते हैं - जल। सेवादार कोई भी नजदीक नहीं था। संगत में से एक प्रेमी, जो कि किसी अमीर घराने का बच्चा था, दौड़कर जल ले आया। सतगुरू जी ने उसके हाथ से जल का गिलास पकड़ा और पीछे की तरफ गिरा दिया। सारे हैरान हैं कि पातशाह जी ने जल के लिए आवाज दी थी, बच्चा जल लेकर आया लेकिन आपने उसे स्वीकार नहीं किया। अब संगत का ध्यान तो गुरू जी की तरफ ही होता है। उसके मन में जिज्ञासा जाग पड़ी कि इसका क्या रहस्य है? गुरू के प्यारे तो अपने गुरू की प्रत्येक अदा की तरफ देखते हैं -

गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥
गुर कै सबदि मंतु मनु मान ॥ *अंग - 864*

अब संगत का ध्यान शत प्रतिशत गुरू की तरफ है। ध्यान भी तीन प्रकार का होता है, एक होता है - प्रतीक ध्यान, दूसरा - सम्पत ध्यान और तीसरा ध्यान होता है - अहंग्रह ध्यान। प्रतीक सामने है, जब उसके दीदार हो जाएँ तो फिर कितनी बड़ी कृपा हो जाती है। फिर आता है सम्पत ध्यान जिसका ध्यान धरो उसी का रूप बन जाता है। 'गुर मुरति गुर सबदु है' जो अन्दर शब्द की धुन को सुनना है उसे कहते हैं - अहंग्रह ध्यान।

अब संगत का ध्यान चला गया कि गुरू जी ने जल मंगवाया था लेकिन आपने जल को नीचे गिरा दिया, यानि कि उसे ग्रहण नहीं किया। उन्होंने नम्रतापूर्वक विनय की

महाराज जी! जल न ग्रहण करने का क्या कारण है क्योंकि गुरू की तो एक-एक अदा से और एक-एक वचन से शिक्षा मिलती है तथा प्रत्येक वचन इस जीव का उद्धार करने में समर्थ है। गुरू और सिक्ख के प्यार की मिसालें मिलती हैं -

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले॥
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले॥
नेहु कवल जल जाणीऐ खिड़ि मुह वेखाले॥
मोर बबीहे बोलदे वेखि बदल काले॥
नारि भतार पिआरू है माँ पुत समाले॥
पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले॥
भाई गुरदास जी, वार 27/4

ऐसी उदाहरणें भाई गुरदास जी ने दी हैं कि चन्द्रमा या सूर्य के साथ इन पक्षियों का प्यार है। चकोर का प्यार चन्द्रमा के साथ है और चकवी का प्यार सूर्य के साथ है ये पक्षी टकटकी लगाकर चन्द्र या सूर्य की तरफ तब तक देखते रहते हैं, जब तक कि वह इनकी आँखों से ओझल न हो जाएँ। चकवी सूर्य को प्यार करती है लेकिन सूर्य को पता ही नहीं होता कि चकवी उसे प्यार करती है। इसी प्रकार से चकोर चन्द्रमा को प्यार करती है लेकिन चन्द्रमा को इस बारे में कोई आभास नहीं है। दूसरी तरफ गुरू और सिक्ख का प्यार दो अंगी है, दोतरफा है।

कमल के फूल का पानी के साथ प्यार है जब पानी न मिले तो कमल मुरझा जाता है। इसके आगे भाई गुरदास जी पति-पत्नी के प्यार तथा माँ-पुत्र के प्यार की मिसाल देते हैं। लेकिन ये सब मोह वाले प्यार हैं लेकिन जो असली प्यार है, वह गुरू और शिष्य या पीर व मुरीद का प्यार है, अन्य सब प्यार तो मोह के प्यार हैं।

अब प्यार में संगत पूछती है पातशाह जी! इसमें क्या भेद की बात है?

गुरू जी कहने लगे, प्रेमीजनो! क्या आप लोगों में से कोई ऐसा है जो मुर्दे को स्पर्श किया हुआ जल पी ले।

वे बोले, नहीं महाराज! मुर्दे को स्पर्श किया हुआ जल कौन पीता है।

यदि मुर्दे को तनिक भी छू लिया जाए, जैसे कि जब हम श्मशान घाट से वापिस लौट कर आते हैं तो फिर स्नान करने के बाद ही कुछ ग्रहण करते हैं। इसलिए मुर्दे को स्पर्श किया गया जल कोई नहीं पीता है। महाराज जी बोले तुम्हें यह विस्मृत हो गया है कि -

विणु सेवा धिग हथ पैरू होर निहफल करणी।
भाई गुरदास जी, वार 27/10

यह तो शरीर के सारे अंगों को धिक्कारें पड़ती हैं क्योंकि यह मुर्दों के समान है। जो पैर कभी संगत की तरफ चल कर नहीं आते हैं, हाथ कभी संगत की सेवा नहीं करते हैं तो फिर उन्हें धिक्कारें ही हैं -

पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सुख सतिगुर सरणी।
भाई गुरदास जी, वार 27/10

यदि कहीं सुख है तो वह गुरू के चरणों में ही निहित है। सेवा के द्वारा ही हाथ व पैर सफल होते हैं, शरीर सफल होता है। सेवा के माध्यम से मिला हुआ लंगर प्रसाद का रूप बन जाता है।

खाणा पीणा पवितु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥
अंग - 472

क्योंकि यह पवित्र कैसे होना है -

दाणा पाणी गुरू दा,
टहल भावनी सिंघाँ सेवकाँ दी।

यह जिह्वा पवित्र कैसे होगी? दरअस्ल यह जिह्वा अपिवत्र इसीलिए है क्योंकि यह परमेश्वर का नाम नहीं जपती है -

रे जिहबा करउ सत खंड ॥
जामि न उचरसि श्री गोबिंद ॥ अंग - 1163

रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥
अंग - 1362

फिर यह जिह्वा किस चीज के लिए हमें प्राप्त हुई है? इसके दो मुख्य कार्य हैं एक है - नाम जपना और दूसरा है - भोजन ग्रहण करना। इन दोनों कार्यों का पारस्परिक सम्बन्ध भी बहुत गहरा है। 'जैसा अंनु तैसा मन।'

जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥
अंग - 472

जिह्वा पवित्र किस प्रकार से हो सकती है -

नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥
अंग - 811

लेकिन यह जीभ तो कच्चा व झूठ बोलती रहती है। ईर्ष्या, निन्दा व चुगली की बातें करती रहती है और इसीलिए रसना, रस के द्वारा नहीं भरती है। यदि भोजन पकाने व वितरित करते समय सतिनामु-वाहिगुरू का जप होता है तो फिर उसके द्वारा भोजन पवित्र हो जाता है तथा उसके सारे दोष दूर हो जाते हैं। चलो यदि ज्यादा नहीं तो मूल मन्त्र के दस पाठ ही कर लो। इसी से सारा अन्न व जल शुद्ध हो जाएगा और फिर यदि मूलमन्त्र का पाठ भी नहीं करना है तो फिर वाहिगुरू गुरमन्त्र का ही जप कर लो। आपको गुरू से कोई न कोई गुरमन्त्र तो मिला ही होगा, उसी का नाम ले

(शेष पृष्ठ 59 पर)

नूरानी मिलाप

(श्री गुरू नानक देव जी महाराज जी के 2019 में 550 वर्षीय प्रकाश शताब्दी को समर्पित)

(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥
गुरू नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥

'जब लग दुनीआ रहीअै नानक किछु सुणीअै किछु कहीअै' जब से सृष्टि अस्तित्व में आई है, तभी से अनेकों प्रकार की योनियाँ भी अस्तित्व में आई हैं और इन सबकी गिनती चौरासी लाख बतलाई जाती है। गुरवाणी के अनुसार तमाम योनियों में मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ व अनमोल है। कई युगों के लम्बे जन्म-मरण के चक्रव्यूह के बाद यह मनुष्य योनि प्राप्त होती है -

कई जनम भए कीट पतंगा ॥
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥ *अंग - 176*

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥
अंग - 631

लख चउरासीह जोनि सबाई ॥
माणस कउ प्रभि दीओ वडिआई ॥ *अंग - 1075*

एक नहीं अपितु अनेकों प्रमाण, इस सम्बन्ध में गुरवाणी के माध्यम से हमें प्राप्त होते हैं जो कि इस जीव के इस चक्रव्यूह में घूमने वाले सफर की निशानदेही करते हैं। मृत्युलोक में जन्म लेने के बाद इस मनुष्य का दूसरे मनुष्यों के साथ मेल जोल व मिलाप होना स्वाभाविक ही है।

इन मेलजोल व मिलाप वाले सम्बन्धों के बाद मनुष्य का एक दूसरे से प्रभावित होना भी स्वाभाविक ही है और एक दूसरे के प्रभाव को कबूल करना भी इसके स्वभाव का एक हिस्सा ही है। जब हम युगों-युगों के मानवीय इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें पता चलता है कि किस प्रकार से रूहानी मिलाप हुए तथा उनके मिलाप के पलों के बाद जो विसमादी होकर घटित हुआ उसका अनुमान लगाना उस समय मुश्किल ही हो जाता है लेकिन समय आने पर वह मिलाप बड़े सिद्धान्त बनकर केवल एक के लिए ही नहीं अपितु सारे संसार के लिए मार्ग दर्शक बन गए हैं। किसी विद्वान का कथन है कि 'बैठीअै पास बडन के होत बड़न सिउ मेल, सभी जानत कि बढ़त है बिरख बराबर बेल।' बड़ों के पास बैठकर उनकी संगत में जाकर स्वयं भी बड़े हो जाया जाता है। बड़े का यहाँ पर तात्पर्य अमीरी, मान प्रतिष्ठा या कद व लम्बाई से नहीं है अपितु परमात्मा के प्रेम के तौर पर है।

युगों-युगान्तरों से मृत्युलोक पर संसार का उद्धार करने के लिए परमात्मा ने, पीर पैगम्बर, औलिए, अवतार, ऋषि-मुनि आदि बख्शी हुई रूहों को भेजा। अपने-अपने समय में वे संसार के मार्ग-दर्शक बने। सांसारिक व्यक्ति को भी जब कोई दूसरा मनुष्य मिलता है तो वह उसके प्रभाव को अवश्य ही कबूलता है लेकिन जब कभी स्वयं परमात्मा द्वारा भेजी गई रूहों के साथ मिलाप होता है तो वह एक दिव्य या विसमादी बन जाता है। यह मिलाप केवल एक शख्सियत को ही प्रभावित नहीं करता है अपितु यह शाश्वत तौर पर आने वाली नस्लों के लिए भी प्रकाशमयी हो जाता है।

बीत चुके समय पर दृष्टिपात करने पर यह अहसास उत्पन्न होता है कि ये किस प्रकार के मिलाप थे जो कि शाश्वत तौर पर हमारे लिए प्रकाशमयी हो गई। कितने ही इस प्रकार के मिलाप इतिहास के अन्दर इस प्रकार से छिप कर बैठे हैं जैसे कि समुद्र में मोती। गहरी डुबकी लगाकर ही मोतियों की प्राप्ति होती है। इसी अहसास के द्वारा नूरानी मिलाप शीर्षक के द्वारा एक नवीन संकल्प आप जी के समक्ष प्रस्तुत करने जा रहे हैं। समय-समय पर किस-किस का मिलाप हुआ तथा उनके उस शख्सियत पर तथा चौगिरदे पर क्या प्रभाव पड़े, हम लोग इस सब पर सविस्तार चर्चा करेंगे। इन विस्मादी, विलक्षण, अनोखी व दिव्य मिलापों की शुरूआत हम स्वयं परमेश्वर श्री गुरू नानक देव जी के प्रकाश के समय से शुरू करने जा रहे हैं। श्री गुरू नानक देव जी से लेकर दस गुरू साहिबान तथा उनके बाद सिक्ख

इतिहास में आए विशेष परमात्मा के प्रेम वाले रसिकों का जिक्र गुरू कृपा की बदौलत किया जाएगा। ये मिलाप देखने में बाहिर्मुखी दिखाई पड़ते हैं लेकिन वास्तव में ये बहिर्मुखी कम और अन्तर्मुखी ज्यादा हैं क्योंकि कुछ ही समय के मिलाप शाश्वत ही हो गए। 'अंतर आतमे जो मिलीअै मिलिआ कहीअै सोइ।।' अतः ये अर्न्तात्मा के मिलाप हैं। 'करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ' की रूपमानता प्रत्यक्ष होती है। वास्तविक और शाश्वत मिलापता अर्न्तात्मा का ही है। बाहरी मिलाप का तो बिछोड़ा होना अवश्यम्भावी है जबकि आन्तरिक मिलाप शाश्वत है ये कभी भी न बिछुड़ने वाला है। शब्द का मिलाप ही आत्मिक मिलाप की पूर्णता है 'सबद मिलावा होति है देह मिलावा नाहि।' लेकिन यहाँ पर यह भी अवस्था भेद के कारण वर्णनीय है कि जो कृपा दृष्टि दर्शनों के माध्यम से हुई वह भी हमारे सामने सिक्ख इतिहास के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान है। 'दरसन देखि जीवा गुर तेरा।।' 'मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई।।' 'दरसन पिआसी दिनसु राति...।' इत्यादि अनेकों गुरवाणी के प्रमाण जिज्ञासुजनों की अवस्था को जागृत कर रहे हैं। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की कृपा की बदौलत तथा आप समस्त पाठकजनों एवं संगत की आशीष की बदौलत ही यह सम्भव हो सकेगा। अतः आप सब अपनी आशीष प्रदान करें तथा इस विचार को आगे बढ़ाने के लिए बल व बुद्धि भी प्रदान करने की कृपा करें जी।

नूरानी मिलाप - 1

दृश्य व अदृश्य का मिलाप

सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जग चानण होआ॥
(भाई गुरदास जी)

रचना की रचयिता के साथ मिलाप की लालसा

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरू बैठा आइ॥
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरू देखिआ जाइ॥ ***अंग - 791***

के अनुसार साकार परमात्मा सतगुरू नानक देव जी के प्रकट होने से पहले जो राइ भोइ की तलवंडी का वातावरण व चौगिरदा था उसके ऊपर सतगुरू जी के प्रकाश होने का जो प्रभाव पड़ा वह भी अनोखा व दिव्य है। जीव-निर्जीव, दृश्य व अदृश्य ने सतगुरू जी के आने से पहले ही जीव-निर्जीव व दृश्य अदृश्य ने सतगुरू जी के आने से पहले ही किसी दिव्यानन्द को जीना शुरू कर दिया था।

श्री सूरज प्रकाश के अनुसार जब तेज प्रभाव वाले श्री गुरू नानक देव जी प्रकट हुए तो बाल्यावस्था का सूर्य उन्हें लेने के लिए आया। सन्तजन तथा कमल फूल उनके आगमन से पुलकित हो उठे। ऋषियों-मुनियों को समाधिस्थ अवस्थाओं में से आनन्द आना शुरू हो गया। रावी नदी की रंगीन लहरें बहुत ही सुन्दर अठखेलियाँ करती हुई प्रतीत हो रही हैं। चिनाब नदी शोभा पा रही है और उसकी लहरें कलात्मक ढंग से ऊपर उठ रही हैं, हवा सुन्दर चवर कर रही है। इन्द्र लोक ने वर्षा के माध्यम से सेवा करने का सौभाग्य समझा। ठण्डी-ठण्डी स्वच्छ हवा मानो नया जीवन प्रदान कर रही है। सारी वनस्पति हरी-भरी होकर पुलकित हो रही है। सूखे वृक्ष हरे होने शुरू हो गए, उनमें कोपलें फूट रही हैं। तलवंडी के अन्दर एक नई उमंग का नया उल्लास है, गलियों व बाजारों में गहमा-गहमी है। सारे मनुष्य खुशियों में खिल रहे हैं। रोगियों के रोग टूटने शुरू हो गए। ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानो सारा वातावरण ही शान्तमयी, आनन्दमयी व उल्लासयुक्त हो गया हो। ऐसा इसलिए था कि करोड़ों ब्रह्मांडों के स्वामी ने स्वंय प्रकाश होकर व दर्शन देकर संसार को कृतार्थ करना था।

सतगुरू जी के आगमन की खुशी में सारी कायनात सेवा करती हुई दृष्टिगोचर हो रही है, तलवंडी में रहने वाले लोग पारस्परिक प्यार से रह रहे हैं। छोटे-बड़े, अमीर-गरीव, राजा-प्रजा, अहिलकार-वजीर मानो सभी एक दूसरे को अपना समझा कर उन्हें प्यार कर रहे हैं। आज चाहे किसी को कुछ भी पता नहीं है कि कुछ समय बाद आज कौन सी कृपा होने वाली है लेकिन उस कृपा के प्रकाश की किरणें इन सबके पहुँच गई हैं और उस प्रकाश ने सारे वातावरण को प्रकाशमय कर दिया है। जीव निर्जीव तथा दृश्य-अदृश्य यानि कि प्रत्येक घटक पर उन किरणों का प्रभावशाली प्रभाव पड़ा। उनके अन्दर नया जीवन व नई रौ रुमकनी शुरू हो गई है। निःशंक रूप से रचयिता अपनी रचना में ही बसा हुआ है, लेकिन फिर भी रचना को रचयिता के साथ मिलने की तीव्र लालसा है यानि कि यह उसकी विलक्षण व दिव्य इच्छा है। परमात्मा कृपा करे कि हम सबके अन्दर भी उस दिव्य नाद का प्रकाश हो जाए, जिसके फलस्वरूप हम सबकी जिन्दगी भी रौशन हो जाए -

धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ ***अंग - 562***

1699 की बैसाखी
पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ

डा. जगजीत सिंह

पृष्ठभूमि - भारतीय समाज स्वाभिमान तथा गौरव जैसे बहुमूल्य गुण अपने अन्दर से गंवाकर बहुत ही गिरावट की तरफ जा रहा था। इतिहासकारों का मत है कि यह पतन अचानक नहीं शुरू हुआ था। यह सारा पतन विदेशियों के माथे नहीं मढ़ा जा सकता था। इसका सम्बन्ध महाराजा हर्षवर्द्धन के शासन काल के अन्त होते ही शुरू हो जाता है। जात-पात के बन्धनों में कट्टरता, परस्पर मेल जोल की कमी, अन्धविश्वास का प्रसार, कर्म काण्डों का कठोर जाल, जो पुरोहित वर्ग ने फैलाया हुआ था, उस से भारतीय जनता बिल्कुल बलहीन और बुद्धिहीन हो चुकी थी। थोड़ी बहुत रहती हुई कमी, इस्लामी राजाओं ने पूरी कर दी। गुरू नानक पातशाह के समय यह हालत थी -

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ।
अंग - 145

हिन्दू समाज में जात-पात, ऊँच-नीच, छूत-छात आदि के बहुत सारे मतभेद हो चुके थे। जादू टोनों वालों के पास जाकर उनसे शकुन-अपशकुन पूछते तथा टोने आदि करके सुख की उम्मीद करते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे हिन्दू समाज के विशाल शरीर में बेअन्त बिमारियां पैदा हो गई हों और इस शरीर का रक्त रूक-रूक कर चल रहा था। एक प्रकार से यह समाज पूर्णत: जमीन पर ही गिर गया था। किसी प्रकार का कोई भी संघर्ष इनके मन में उत्पन्न नहीं हो रहा था और इनका स्वाभिमान पूर्णतया समाप्त हो चुका था। इनकी सहायता करने वाला ईश्वर देवी देवताओं के रूप में बंट चुका था। इन्होंने उनके बुत्त (मूर्तियां) बना कर उसी से ही अपने कल्याण की प्रार्थना की। इतिहासकारों ने हिन्दू समाज का नक्शा खींचते हुए अंकित किया कि हिन्दू समाज पूरी तरह से निम्न स्तर में पहुँच कर गर्त में गिर चुका था। खाने पीने, पहनने, फसलों के बोने तथा काटने, ब्याह शदियों की तिथियाँ नियत करने, शुभ दिवस पूछने तथा प्रत्येक काम ज्योतिषविदों को पूछ कर करने का रिवाज था। जब पति मर जाता था तो स्त्री को सती होना पड़ता था। विधवाओं की हालत बहुत ही दयनीय हुआ करती थी और वह आजीवन दुखों से ही घिरी रहती थी। स्त्रियों का इस प्रकार से आग में जल जाना, उनके पाप का कारण बताया जाता था।

इस प्रकार की परिस्थितियों में गुरू नानक पातशाह ने सत्य का प्रकाश संसार में फैलाकर अन्धेरा दूर किया। गुरू पाँचवें पातशाह जी ने अनेक कष्ट शरीर पर सहन करके सिरमौर शहीदी देकर जुल्म के आगे न झुकने का उत्साह प्रकट किया। गुरू तेग बहादुर साहिब जी ने मानवीय स्वतन्त्रता और तिलक जनेऊ की रक्षा के लिये अपना बलिदान दिल्ली में दिया। गुरू दशमेश पिता जी ने उस समय सात आठ सौ वर्षों से उखड़ती इस हालत को देखकर मानवीय अधिकारों की बात की और मनुष्यों में पड़े हुये अनेक अवगुणों को दूर करने के लिये, अनेक प्रयत्न किये। कई युद्ध पहाड़ी राजाओं के साथ लड़ने पड़े। परन्तु सदा ही सत्य की जीत हुई और अन्याय की हार ही होती रही। इस समय आवश्यकता थी कि एक ऐसा संगठन सदीवी रहने वाला कायम किया जाये, जिसमें सन्तों जैसे गुण हों, जिसकी दृष्टि में सारे पसारे में एक ही वाहिगुरू की ज्योति फैली हुई दृष्टिमान हो और वह सारे संसार के दुखों को दूर करने की लालसा रखता हो और उसका निश्चय हो-

मनि साचा मुखि साचा सोइ।
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ।
नानक इह लछण ब्रह्मगिआनी होइ॥ *अंग - 272*

आतम रस की पूरी जानकारी रखता हो तथा जाग्रत ज्योति का पुजारी होकर सारे कर्म काण्डों, वहमों, तीर्थों, व्रतों, मड़ियों, मसानों के प्रभाव से पूर्णतया निर्लेप हो और सारे विश्व में एक ही फैली हुई ज्योति का पुजारी हो जैसा कि -

जिमी जमान के बिखै समसत एक जोत है।
ना घाट है ना बाढ है ना बाढ घाट होत है॥
अकाल उस्तति

संसार में एक ऐसा आदर्श लाया जाये जो हर एक प्राणी

में रूपमान होकर इस संसार में सुख तथा ज्ञान का प्रकाश करता रहे और जीवन में दया, क्षमा, धीरज, अहिंसा, सन्तोष, सौच, शील, सेवा, दान तथा मृदुभाषी, दूरदर्शी और सर्व सांझ रखने वाला, अन्याय को दूर कराने की समर्था रखने वाला, बाँटकर खाने वाला, धर्म की कमाई करने वाला और सदा ही परमेश्वर की याद में लीन, संसार में विचरण करने वाला हो, जिसका व्यवहार संसार में वैरागियों जैसा हो और मुख्य कर्म प्रभु की प्यार भरी भक्ति वाला हो। जिसका निश्चय पूर्ण ज्ञान वाला हो तथा ऐसा आदर्श, न किसी को दुख दे और न ही किसी को दुख पहुँचाने दे, भय से पूर्णतया रहित हो, अपने शुभ कर्तव्य की पालना करते हुये, न तो किसी से डरता हो और न ही किसी को डराता हो, जिसके नेत्रों से अज्ञान के अन्धकार का नाश हो चुका हो तथा सारे संसार को प्रभु रूप करके देखने वाला हो, शारीरिक तन्दरूस्ती में पूर्ण हो, दुखों-सुखों को प्रभु की रज़ा मान कर प्रसन्नता सहित सहनशील हो, जनता के दुख दूर करने के लिये सदा ही तत्पर हो, समाज की बुराईयों को दूर करने के लिये सदा ही यत्नशीन हो, सारे संसार के धार्मिक निश्चयों का आदर करने वाला हो, ऐसा खालसा पुरुष संसार में प्रकट करना बहुत ही जरूरी समझा गया।

इस उद्देश्य को सम्मुख रखते हुये 1699 की वैशाखी वाला दिन चुना गया। यह वैशाखी का दिन सिख इतिहास में बहुत महत्व रखता है। वैशाखी वाले दिन ही गुरू नानक पातशाह ने संसार के उद्धार के लिए अपनी यात्रा शुरू की थी। पहली वैशाखी वाले दिन ही गोइंदवाल साहिब बाउली का पत्तन टूटा था और जल बाउली में भरा था। वैशाखी वाले दिन ही गुरू हरिकृष्ण महाराज ज्योति-ज्योत समाये थे, वैशाखी वाले दिन को ही गुरू दशमेश पिता ने खालसा का अस्तित्व को कायम करने के लिये चुना। उस दिन एक भारी इकट्ठ को सम्बोधित करते हुये हाथ में नंगी कृपाण को लेकर ऊँची आवाज़ में फ़रमान किया कि मनुष्यता की आज़ादी के लिये बलि देने के लिये मुझे अपने महान प्यारे एक सिख के शीश की आवश्यकता है। वह मेरे पास आये तथा अपना शीश अर्पण करे। भाई दया राम जी लाहौर वासी जो सदा ही गुरू दशमेश जी के प्रेम में लीन रहते थे, अपना शीश अर्पण करने के लिये, गुरू महाराज जी के चरणों में हाज़िर हुये। प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह! मुझ में तो कुछ भी नहीं है, यह मेरा शरीर, मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरी हंगता केवल कहने मात्र ही है पर ये सभी तेरे चरणों में पहले से ही भेंट करके, मैं अपना अस्तित्व आपके अस्तित्व में मिला चुका हूँ। सो यह आप अपनी अमानत समझ कर, जैसे आपका जी चाहे, प्रयोग करो।

गुरू महाराज जी ने उसकी बाजू पकड़ी और तम्बू में ले गए शीश तन से जुदा कर दिया। एक और शीश की माँग की गई। फिर कड़कती हुई आवाज़ में फ़रमान किया कि एक और शीश की हमें आवश्यकता है। भाई धर्म चन्द दिल्ली निवासी था, गुरू चरणों में आकर उपस्थित हो गया और उसने विनय की कि साहिब जी! आप अपनी अमानत स्वीकार करो। तीसरी माँग पर हिम्मत राय, चौथी माँग पर मोहकम चन्द, पाँचवी पर साहिब चन्द हाज़िर हुये। पाँच शीश प्रवान कर ने के बाद, आपने छठे की माँग न की। आप बहुत ही प्रसन्न हुये और आप ने संगत को सम्बोधन करते हुए फ़रमान किया कि गुरू नानक पातशाह के समय सिखी की परीक्षा में केवल भाई लहणा स्वीकार्य होकर, गुरू अंगद के रूप में प्रकट हुये। इस समय महान भयानक कसौटी में पाँच प्यारे सिख प्रवान हुये।

गुरू महाराज जी ने खन्डे-बाटे का अमृत तैयार किया और इन पाँच प्यारों को अपने पावन कर-कमलों द्वारा स्वंय अमृत ग्रहण करवाया। मूलमन्त्र तथा गुरूमन्त्र की अमूल्य वस्तु प्रदान की। दसवें द्वार तक शबद सुरत द्वारा पहुँचने के आन्तरिक भेद, ब्रह्मज्ञान के भण्डार बख्श कर मनुष्य से प्रभु बना दिये जैसा कि फ़रमान है -

ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर।
नानक ब्रहमगिआनी आप परमेसुर॥ *अंग - 273*

अतः गुरू महाराज जी ने भाई दया चन्द लाहौर के खत्री को भाई दया सिंह बनाया तथा धर्म चन्द, दिल्ली से जो जाति के जाट थे, को भाई धर्म सिंह बनाया, हिम्मत चन्द जगन्नाथपुरी जो कि जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के रहने वाले थे तथा एक हजार मील की दूरी से चलकर आए थे, को भाई हिम्मत सिंह जी, भाई मोहकम चन्द गुजरात काठियावाड़ (गुजरात) के रहने वाले थे तथा 1100 मील से चलकर आए थे, को भाई मोहकम सिंह जी और साहिब चन्द मैसूर, जो 1000 मील का सफर तय करके आए थे, को भाई साहिब सिंह बना दिया और अपने अन्दर अभेद करके फ़रमान किया कि मेरे खालसा को मेरा ही रूप समझना, ये पाँचों मेरा ही रूप हैं। फ़रमान किया -

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हौ करौ निवास॥ *सरब लोह ग्रन्थ*

इसके बाद गुरू जी ने पाँचों प्यारों से स्वयं अमृतपान

ग्रहण करने की याचना की और आप अमृतपान करके गोबिन्द राये जी से श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के रूप में प्रकट हुये। संसार के कुल धर्मों के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ, जब एक गुरू ने, अपने शिष्यों, सिक्खों से अमृत ग्रहण किया तथा सिक्ख से सिंह बने। इस विचित्र नाटक बारे में उस समय के भाई गुरदास जी (दूसरे) ने अपनी वार में लिखा है कि गुरू महाराज जी आप ही गुरू तथा गुर चेले का रूप धारण किया -

हरि सचे तखत रचाइआ सति संगति मेला।
नानक निरभउ निरंकार विचि सिधाँ खेला।
गुरु सिमर मनाई कालका खंडे की वेला।
पीवउ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला।
गुरु संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला।
वाहु वाहु गोबिंद सिंह आपे गुरु चेला॥
वार भाई गुरदास जी, दूसरे

इसके बाद गुरू महाराज जी ने फ़रमान किया कि आप आज से खालसा रूप होकर मेरे रूप में अभेद हो गये हो, मैं तुम्हारे अन्दर हूँ और तुम मेरे अन्दर हो। उसके बाद बाणी पढ़ने, रहत-बहत की शिक्षा देने के बाद आप जी ने इस प्रकार से फुरमान किया -

रहित पिआरी मुझ कउ, सिख पिआरा नाहि॥
रहितनामा भाई देसा सिंह जी

और फिर कहा -

रहिणी रहै सोई सिख मेरा।
ओहु ठाकुरु मै उस का चेरा।
रहित बिनां नहि सिख कहावै।
रहित बिनां दर चोटां खावै।
रहित बिन सुख कबहुँ न लहे।
तां ते रहित सु द्रिड़ कर रहै॥
रहितनामा भाई देसा सिंह जी

मैं खालसा आदर्श को संसार में स्थापित करने के लिये ही, अपनी महान सुख पूर्ण लीनता की अवस्था में से, देहधारी होकर, संसार में विचरण करने आया था। आज इस आदर्श को सारे संसार के सुखों के लिए और पूर्ण ज्ञान का वरदान देने के लिए, तुम्हें मैंने अपना रूप बनाया है। आप पूर्ण सतगुरू का कार्य, नाम की तथा ज्ञान की दात देने की सामर्थ्य रखते हो और फ़रमान किया -

ख़ालसा मेरो सजन प्रवारा। ख़ालसा मेरो करत उधारा।
ख़ालसा मेरो पिंड परान। ख़ालसा मेरी जान की जान।
मान महत मेरी खालसा सही। ख़ालसा मेरो सारथ सही।
ख़ालसा मेरो करे निरबाह। ख़ालसा मेरो देह अर साह।
ख़ालसा मेरो धरम अर करम। ख़ालसा मेरो भेद निज मरम।
ख़ालसा मेरो सतिगुर पूरा। ख़ालसा मेरो सज्जन सूरा।
ख़ालसा मेरो बुध अर ज्ञान। ख़ालसे का हो धरो धिआन।
उपमा खालसे जात न कही। जिहवा एक पार नहि लही।
सेस रसन सारद सी बुध। तदप न उपमा बरनत सुध।
या मै रंच न मिथिआ भाखी। पारब्रहम गुर नानक साखी॥
सरब लोह ग्रन्थ

उस समय आप ने फ़रमान किया कि अकाल पुरुष के बिना अन्य किसी के आगे सिर नहीं झुकाा है -

जागत जोति जपै निस बासुर,
एक बिनां मन नैक न आनै।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै,
ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै।
तीरथ दान दइआ तप संजम,
एक बिना नहि एक पछानै।
पूरन जोत जगै घट मै,
तब खालस ताहि नखालस जानै।

इस प्रकार आप ने एक नया आदर्श संसार को सदा सुख देने के लिए खालसा के रूप में प्रकट किया जो भ्रम तथा भेष से न्यारा है, जिसका जीवन संसार से निर्लेप तथा न्यारा होने के कारण गुरू महाराज ने अपना पूर्ण रूप तथा पूर्ण रूहानी सत्ता इसमें भरी है और फ़रमान किया है कि जब तक खालसा इस आदर्श पर कायम रहेगा, उस समय तक मैं अपना पूर्ण तेज़ प्रदान करता रहूँगा। जब यह भ्रमों और प्रपंचों में पड़ जायेगा और भ्रम भेष से अलगपन छोड़ देगा, पुनः कर्म काण्ड में प्रवृत्त होकर बड़े-छोटे की दृष्टि धारण कर लेगा, जात-पात के बन्धनों में फंस जायेगा और अपने आदर्श से हीन होकर अपने हितों के लिये इस महान आदर्श का त्याग कर देगा, तब मैं इसका तेज छीन लूंगा-

खालसा अकाल पुरख की फौज।
प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज।
जब लग खालसा रहे निआरा।
तब लग तेज दीउ मैं सारा।
जब इह गहै बिपरन की रीत।
मैं न करों इन की प्रतीत॥
सरब लोह ग्रन्थ

उस समय संगत को सम्बोधन करते हुए आप ने कहा कि गुरू खालसा जी! खालसा की पदवी महान है क्योंकि यह अपनी पूर्ण रूप से हंगता छोड़कर गुरू में लीन हो गया है। आतम रसिया होकर, संसार में विचरण करेगा, इसकी पदवी वाहिगुरू और गुरू की पदवी के बराबर होगी।

आतम रस जिह जानही, सो है खालस देव।
प्रभ महि, मोह महि, तास महि, रंचक नाहन भेव॥
सरब लोह ग्रन्थ

इस वैशाखी के दिन खालसा के सृजन से भारत का अन्धकारमय इतिहास बदल गया। आज हज़ारों साल बीतने के बाद एक पूर्ण मनुष्य, संसार के रंग मंच पर प्रकट हुआ जिसे खालसा कह कर सम्मानित किया गया। आज एक पूर्ण मनुष्य की सिरजना की गई। खालसा प्रकट होने से पहले एक मनुष्य जो पाँच भागों में बाँटा हुआ था, उपदेश देने का कार्य ब्राह्मण वर्ग के पास था। ब्राह्मण का कार्य दान देना, दान लेना, यज्ञ करना-करवाना, आध्यात्मिक विद्या पढ़ना और पढ़ाना, ये 6 कर्म हुआ करते थे। क्षत्रिय का कार्य शरीर को तन्दरूस्त रखना, तप के बल पर अस्त्र प्राप्त करने जो कि बहुत शक्तिशाली हुआ करते थे जैसे कि वज्रास्त्र, इन्द्रास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्नेयास्त्र, वरूणास्त्र और इस प्रकार के अनेक अस्त्र मंत्र बल द्वारा प्राप्त किये जाया करते थे। इन अस्त्रों की अलौकिक शक्ति हुआ करती थी। आजकल के परमाणु बमों की तरह इस एक अस्त्र का प्रभाव इतना था कि दस-दस हज़ार आदमियों को धरती पर सुला देता था। एक ही अस्त्र हज़ारों बाणों में चलकर हज़ारों आदमियों को लगता था। यह भारत की प्राचीन विद्या थी जो धीरे-धीरे अलोप हो गई और इन अस्त्रों का स्थान आधुनिक साईंस ने लेकर बेअन्त शक्तिशाली बम्ब, गोले, गोलियाँ, परमाणु बम मैदाने जंग को भयभीत करने के लिये पैदा कर दिये। क्षत्रीय जमीन का मालिक हुआ करता था और नीचे वाले वर्ग उसकी जमीन में से अन्न प्राप्त करके, उसे किसी विशेष अनुपात अनुसार बाँट दिया करते थे। खत्री का धर्म देश तथा अपने राज्य की रक्षा करना, अपने प्राणों की आहुति दे देने में पवित्र समझा जाया करता था। उसका जंग में शहीद होना, उच्च स्वर्गों की प्राप्ति माना जाया करता था। इसी प्रकार वैश्य वर्ग, परिश्रम करने वाले लोगों का हुआ करता था जो पशु आदि पालते थे, व्यापार करते थे और देश विदेश में जाकर अपना बनाया माल बेचा करते थे और धन कमा कर टैक्स के रूप में राजा के कोष भरते थे और खत्री को, उसकी खेती बाड़ी द्वारा अन्न पैदा करके निश्चित हिस्सा दिया जाता था और ब्राह्मण को पवित्र समझ कर दान दिया जाता था, जिससे ब्राह्मण वर्ग को कोई काम करने की आवश्यकता नहीं थी, केवल पढ़ना, पढ़ाना और समाज की भलाई के लिये साहित्य तैयार करना उसका कार्य होता था। पर धीरे-धीरे ब्राह्मण ने कर्म काण्डों का प्रसार करके समाज को अपने नियमों में जकड़ लिया और अन्य वर्गों को शक्तिहीन कर दिया। यह वर्ग हर नई दिशा मार्ग, ब्राह्मण वर्ग से पूछा करते थे और यहाँ तक कि खेती में बीज बोने के लिये, व्यापार शुरू करने के लिये, मकान बनाने, यात्रा पर जाने, विवाह शादियों के दिन निश्चित करने, पति-पत्नी सम्बंध जोड़ने नये वस्त्रादि खरीदने, पशु खरीदने, बच्चे को स्कूल में दाखिल करवाने, ज़िन्दगी के हर नये कार्य करने से पहले सारा मार्ग दर्शन ब्राह्मण वर्ग से लिया जाता था और वह शकुन-अपशकुन, तिथि, वार, महीना, ऋतु ग्रह की दशा आदि देखकर बताया करते थे।

शूद्र वर्ग का कार्य इन उपुर्यक्त तीनों वर्गों की सेवा करना ही हुआ करता था। ये अपने मालिकों की दया पर निर्भर रहते थे। इनका काम केवल सेवा करना ही होता था, जिसके बदले में फसलों की आय को मुख रखते हुये, कुछ भाग इन्हें दे दिया जाता था। मनुष्य को यहाँ तक बाँट दिया गया कि इन शूद्रों में से एक तो वे थे जिन्हें स्पर्श किया जा सकता था, जिनके स्पर्श करने से अपवित्र नहीं होता था। एक ऐसा वर्ग था, जिनके स्पर्श करने से अपवित्र हो जाता था। सुबह-सुबह काम करने से पहले यदि इनमें से कोई दिखाई दे जाता, तो बहुत विचार विमर्श किया जाता था। इन्हें भजन बन्दगी, पूजा पाठ, मन्दिर, मठ पर जाने पर पाबन्दी लगी हुई थी। यदि कहीं भूले भटके किसी शूद्र से ओअंकार शब्द का उच्चारण हो गया तो उसकी जुबान काट दी जाती थी और इनमें से कोई ब्रह्मज्ञान की बातें करता था, उसे राजा स्वंय मारता था जैसे श्री राम चन्द्र जी महाराज से सुम्बक ऋषि को ब्राह्मणों ने मरवाया था। श्री राम चन्द्र जी ने राज्य नियमों की पालना करते हुये सुम्बक ऋषि का अपने हाथों वध किया। यह अछूत वर्ग का मनुष्य बहुत ही तिरस्कृत हुआ समाज का अपवित्र अंग माना जाता था। यह अंग अनपढ़ रखा जाता था, कोई भी किरत का स्कूल इन्हें प्रवेश नहीं देता था। यह मत था कि यह शूद्र, परमेश्वर के दर पर न प्रवान होने वाली रूहों के जन्म के कारण हैं। इनके सन्ताप, इनकी मज़बूरियां, इनके द्वारा पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों की सजा है। द्वापर में बाल्मीकि (चन्डाल) ने भजन बन्दगी करके वह पदवी प्राप्त कर ली जो सर्व श्रेष्ठ थी। वह महान ऋषि हुये हैं। श्री कृष्ण महाराज जी ने पाण्डवों के यज्ञ के समय इन्हें प्रकट किया और अपने हाथों से इस ऋषि के चरण धोये और जूठी पत्तलें उठाईं। इनके (सम्माननीय ऋषि बाल्मीकि जी) पाण्डवों के यज्ञ में शामिल होने के कारण घंटा ज़ोर-ज़ोर से बजता रहा और यज्ञ सम्पूर्ण हुआ।

गुरू नानक पातशाह ने जात-पात को पूरी तरह रद्द कर

दिया। ब्राह्मण को, जो ब्रह्म की विचार करता है, श्रेष्ठ ब्राह्मण कहा गया है। जो परमेश्वर की अन्दर पहचान करता है, उस पण्डित के उपदेश को प्रवान किया गया। खत्री को कर्मों का शूरमा कह कर पुकारा गया। गुरू नानक साहिब कथित नीच जातों को मान देते हुये फ़रमान करते हैं -

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥

अंग - 15

गृहस्थ धर्म को सम्मान दिया गया तथा मेहनत करके जीविकोपार्जन करने को महापावन कहा गया -

सो गिरही जो निग्रहु करै। जपु तपु संजमु भीखिआ करै।
पुंन दान का करे सरीरु। सो गिरही गंगा का नीरु॥

अंग - 952

जात-पात का भ्रम पूरी तरह से इन्सान के हृदय में से निकाल दिया गया। यहाँ तक गुरसिखी में और भी अधिक क्रान्तिकारी कदम उठाया गया कि सभी मनुष्यों को बिना किसी भेद भाव , जात-पात, धर्म, मज़हब, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के, एक पंगत में बैठकर भोजन करना, पवित्रता का सूचक माना गया। अकबर जैसे महान सम्राट और अमीर वर्ग के लोग पंगत में बैठकर, भोजन करके गुरू के दर्शन किया करते थे। इसी प्रकार कर्मों धर्मों का बोझ ज्योतिषियों, ग्रहों की जकड़ से बिल्कुल दूर करके फ़रमान किया-

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे।
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे॥ अंग - 137

गुरू दशमेश पिता जी ने मनुष्य की मनुष्यता को पूर्ण रूप में स्वतन्त्र किया और एक ही मनुष्य को खालसा बनाकर उस में ब्राह्मण, खत्री, वैश्य, शूद्र और ऋषियों-मुनियों के आदर्श को फलीभूत किया। गुरसिख, ब्राह्मण के रूप में रहता हुआ गुरबाणी पढ़ता है और दूसरों को गुरबाणी पढ़ाता है, लंगर चलाता है, अपनी मेहनत की कमाई में से गुरू के निमित दसवन्ध देता है और इस दसवन्ध को प्राप्त करके जनता के सुख के लिये मन्दिर हस्पताल, स्कूल, कालिज, धर्मशाला, सड़कें, पुल आदि बनवाने के अनेक शुभ कार्य करता है। जब जनता पर कोई दुःख आता है तो यह उस दान की धन राशि में से उनकी एक दम सहायता करता है।

'चलता'

(पृष्ठ 52 का शेष)

लो। यह वाहिगुरू मन्त्र ही ऐसी चाभी है कि जिसके द्वारा बज्र कपाट खुलने हैं। यदि इन इन्द्रियों से तुमने विधिवत काम नहीं लिया तो फिर तो ये बाहर की तरफ ही दौड़ते रहेंगे।

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥
अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥
तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥

अंग - 954

इस प्रकार से गुरू महाराज जी कहने लगे, प्रेमीजनो! जब तुम लोग मुर्दे के द्वारा स्पर्श किया हुआ जल नहीं पी सकते हो तो फिर जिस जल को यह बच्चा लेकर आया था, उसे हम कैसे ग्रहण कर लेते? मैंने इस बच्चे को पूछा कि बेटा! क्या तुमने कभी संगत की सेवा की है? यह बोला, नहीं महाराज जी! हमारे घर में तो नौकर-चाकर हैं, वे ही सारा काम करते हैं, इसलिए हमें तो कभी जरूरत ही नहीं पड़ी, मैं तो आज पहली बार ही आपके लिए जल लेकर आया हूँ।

महाराज जी कहने लगे, प्रेमीजनो! सेवा के बिना यह शरीर तो पूर्णतः धिक्कार योग्य है। यथा -

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत ॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥

अंग - 253

ये सारे गुण इन्सान के अन्दर हों यानि कि वह अत्यन्त सुन्दर हो, ऊँची कुल वाला हो, चतुर हो, खूब धनवान हो तथा मुख का ज्ञानी भी हो लेकिन यदि उसकी प्रीति परमात्मा के साथ नहीं है तो फिर तो वह मृतक ही है।

यदि इलहोक और परलोक दोनों में सुखी होना है तो फिर गुरू जी की चरण शरण में आ जाओ, प्यारपूर्वक संगत की सेवा करो जिसकी बदौलत फिर हमें यह अवस्था प्राप्त हो जाएगी कि -

जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।

अतः सर्वाधिक प्रभावशाली प्रीति है पीर व मुरीद या गुरू व सिक्ख की -

पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले।

भाई गुरदास जी, वार 27/4

बस प्रार्थना है कि हमारी उस गुरू या परमात्मा के साथ निभ जाए -

वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतहि॥

गुरबाणी अर्थ भण्डार

सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक मार्च, पृष्ठ - 53)

सिरीरागु महला 1 घरू 3

इहु तनु धरती, बीजु करमा करो;
सलिल आ पाउ सारिंगपाणी॥

इहु तनु = इस शरीर को धरती बनाओ तथा निष्काम कर्मों को बीज बनाओ। जो सारिंगपाणी = सारंग नामक धनुष को हाथ में धारण करने वाला प्रभु है, उसके नाम रूपी सलिल = पानीको आ = लाकर पाउ = डालो अथवा (सारिंगपानी) सारंग = बाबीहा जिस प्रकार पानी को प्रिउ-प्रिउ करके रटता है इसी प्रकार से उस प्रभु जी के नाम को रटन (सिमरन) रूपी सलिल = पानी आ = लाकर पाउ = डालो।

मनु किरसाणे हरि रिदै जंमाइ लै;
इउ पावणि पदु निरबाणी॥1॥

मन को किसान बनाओ तथा हरि = परमेश्वर का नाम रिदै = हृदय रूपी खेत में जंमाइले = बोलो। हे भाई! इउ = इस प्रकार तुम निरबाणी = बन्धनों से रहित पदु = रदवी को वापिस = पा लोगे।

काहे गरबसि मूड़े; माइआ॥

मुड़े = हे मूर्ख जीव! काहे = क्यों इस माया की तरफ देख कर गरबसि = अहंकार करते हो क्योंकि यह तो चार दिनों की मेहमान व अस्थिर है।

पित सुतो सगल कालत्र माता;
तेरे होंहि न अंत सखाइआ॥रहाउ॥

पित = पिता, सुतो = पुत्र, कालत्र = स्त्री, माता तथा सगल = सारे सम्बन्धी आदि जो सभी तुम्हारे हैं वे अन्त में कोई भी तुम्हारा सखाइआ = मित्र या सखा बना कर साथ नहीं निभाएगा।

बिखै बिकार दुसट किरखा करे;
इन तजि आतमै होइ धिआई॥

इस खेती में जो बिखै = शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध विषय हैं तथा विकार = काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार विकार हैं। दुसट = बुरे स्वभाव वाले हैं, ये सब तो मानो खेत में खर-पतवार पड़े हुए हैं, इसलिए इन्हें किरखा करे = काट या उखाड़ डाले।

जपु तपु संजमु, होहि जब राखे;
कमलु बिगसै, मधु आसमाई॥2॥

जब बाणी करके जप करना, तपु = शरीर के तौर पर सेवा अथवा साधना करनी, संजमु = इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना आदि शुभ गुण जब इस खेती के रखवाले होंहि = होंगे तो फिर उस समय हृदय मैत्री आदि शुभ गुणों रूपी पंखुड़ियाँ प्रफुल्लित हो जाएंगी तथा इसके अन्दर से मधु = अमृत रूपी आत्मिक आनन्द आसमाई = चूने लगेगा अथवा टपकेगा भावार्थ ब्रह्मा, हृदय में प्राप्त हो जाएगा।

बीस सपता हरो, बासरो संग्रहै;
तीनि खोड़ा नित कालु सारै॥

हे भाई! बीस सपता हरो = बीस तथा सात यानि कि जो सत्ताइस हैं अर्थात पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म तत्व, पाँच स्थूल तत्व, पाँच विषय (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार) मन तथा चित्त जो यह सत्ताइस हैं, इनका हरो = अभिमान दूर कर दो अथवा 27 नक्षत्रों की उपासना को छोड़ दो। सत्रह तत्वों वाला यह सूक्ष्म शरीर जिसमें पाँच प्राण, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि तथा पाँच सूक्ष्म तत्व तथा पाँच स्थूल तत्व, इन सत्ताइस तत्वों की देह का अभिमान छोड़ दो अथवा काम, क्रोध, लोभ, आशा व तृष्णा को छोड़ दो तथा बासरो = दिन प्रतिदिन अर्थात प्रतिदिन उस प्रभु नाम को संग्रहै (सं+ग्रहै) सं = भली प्रकार, ग्रहै = ग्रहण करो भावार्थ धारण करो अथवा बासरो संग्रहै = जो समस्त आत्माओं में निवास करता है, उसका नाम संग्रह करो। तीन खोड़ा = जागृत, स्वप्न व सुषुप्त में नित्य जो काल सारै = सड़ता है उससे तुरिया पद में टिका जिसके फलस्वरूप बच जाओगे अथवा तीनि खोड़ा = बालपन, युवावस्था तथा वृद्धावस्था में नित्त कालु = मृत्यु, सारै = संभालती है भावार्थ मृत्यु कभी भी आ सकती है अर्थात तीनि खोड़ा = तीनों प्रकार के शरीरों (सूक्ष्म, कारण तथा स्थूल) में नित्य यह काल सम्भालता ही रहेगा।

दस अठार मैं, अपरंपरो चीनै;
कहै नानकु इव एकु तारै॥3॥26॥

दस = चार वेद तथा छः शास्त्र, अठार = अट्ठारह पुराणों मै = में जिस अपरंपरो = परमेश्वर का कथन किया गया है उसे चीनै = जानो अथवा दस इन्द्रियाँ व अट्ठारह वर्णों वाला जो शरीर है इसमें से प्रकृति से परे जो प्रभु है उसे जानो। सतगुरू नानक देव जी फुरमान करते हैं कि इव = इस प्रकार से एक प्रभु उस भवसागर से तारै = पार कर देगा अथवा इव = ये साधन जब तुम करोगे तो तुम्हें वह परमेश्वर पार लगा देगा भावार्थ वह तुम्हें मुक्त कर देगा।

'चलता'

स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार
(Inspired Thoughts of Swami Ram)

डा. स्वामी राम जी

अनुवादक - शमशेर सिंह 'कोमल'

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक मार्च, पृष्ठ - 62)

हम इसका समाधान बतलाते हैं। एक नियमित तरीके से तुम शरीर की चेतना से शुरू करो। फिर जब तुम एक बार शान्त होकर व चुप होकर बैठना सीख लेते हो, एकसुरता से श्वास लेने लग पड़ते हो, तो फिर तुम चेतन मन को समझ सकते हो। वह मन जिसे कि तुम अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हो, उसे नियन्त्रित करना सीख लेते हो, तो फिर तुम अपनी समस्याओं का समाधान भी कर लेते हो। फिर तुम अपने आपको जानने लग पड़ते हो, समझने लग पड़ते हो। यहाँ पर पहुँच कर फिर तुम यह नहीं कहते हो कि इस चेतना के नीचे कितनी मिट्टी को साफ कर रहे हो लेकिन जब तुम मैडिटेशन करके आगे बढ़ जाते हो तो फिर तुम देखते हो कि तुम्हारे चेतन मन पर कितनी मिट्टी जमी पड़ी है। फिर तुम अपने अचेत मन के आमने-सामने हो जाओगे। अचेतन मन तो बहुत बड़ा है। वास्तव में तीन चौथाई भाग तो अचेतन है। तुम्हें स्व प्राप्ति के लिए आवश्यक रूप से इसकी सफाई करनी ही पड़ेगी। तुम स्वयं ही इसका सफाई कर सकते हो। अन्य कोई भी तुम्हारे लिए इसकी सफाई नहीं कर सकता है।

आन्तरिक मार्ग पर चलते हुए तुम बहुत सारे मील के पत्थर देखोगे, इस मार्ग पर चलते हुए तुम्हारे मार्ग में बहुत सारे मील के पत्थर आएँगे। जल्दी ही तुम महसूस करोगे कि तुम्हारा अध्यापक तुम्हारे साथ ही है, तुम्हारे अन्दर ही है और वह है - तुम्हारी अर्न्तात्मा। बस केवल यही एक मास्टर है, यही एक ताकत है। स्वयं को परेशान न करो बाहर के किसी अध्यापक की तलाश मत करो क्योंकि तुम्हारा अध्यापक तो तुम्हारे साथ है, तुम्हारे अन्दर है, बस तुम उसके प्रति चेतन रहो। तुम मैडिटेशन के माध्यम से गुरू को मिलो, फिर वह गुरू तुम्हें परमात्मा से मिलाएगा, तुम्हारी चेतना से मिलाएगा और फिर तुम्हें विश्व-चेतना तक ले जाएगा। इस प्रकार से तुम्हारा जीवन मार्ग सफल हो जाता है। जब तुम अपने अन्दर बैठे परमात्मा को जान लेते हो, जब तुम अपने अन्दर के सत्य को जान लेते हो, जब तुम अपने अन्दर के सत्य का अनुभव कर लेते हो तो उसके बाद तुम यह समझ लेते हो कि चहुँओर सत्य का ही विस्तार है।

मैडिटेशन - चिकित्सा

सत्य की प्राप्ति के बारे में समस्त धर्मों ने सविस्तार बतलाया है लेकिन मैडिटेशन कोई मजहब नहीं है। केवल मैडिटेशन ही जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकती है, जब मनोवैज्ञानिक यह समझ लेंगे मैडिटेशन कितनी लाभकारी है तो फिर यह सारे संसार में प्रचलित हो जाएगी क्योंकि केवल मैडिटेशन ही पूर्ण चिकित्सा है। अब तो मनोवैज्ञानिक केवल परामर्श ही देते हैं। वे स्थिर होना ही बतलाते हैं तथा वे तकनीकों का ही प्रयोग करते हैं लेकिन यहाँ पर यह भी जान लेना अत्यावश्यक है कि मैडिटेशन **hypnosis** से पृथक है। **Hypnosis** का तात्पर्य है नींद में ले जाना। इस सब कुछ को **jung, freud, jams** तथा अन्य बड़े-बड़े मनोवैज्ञानिकों ने पूर्णतः छोड़ दिया था, जिस समय कि वे कुछेक बातों को स्पष्ट नहीं कर सके थे। नींद में ले जाना बुरा नहीं है, लेकिन यह स्वयं के द्वारा किया जाने वाला नहीं है अपितु इसमें तुम दूसरे की सलाह पर चलते हैं। हम तो पहले ही अपनी संस्कृति से काफी कुछ प्रभावित हैं और फिर हमारा शिक्षा का तरीका भी हमें काफी कुछ सिखला देता है लेकिन प्रश्न उत्पन्न होता है कि हमने जो कुछ भी सीखा है क्या हम उसे भुला सकते हैं? दरअस्ल हमें सीखने के तरीके तो बहुत सारे पता हैं लेकिन हमारे पास उस सीखे हुए को भूल जाने के तरीके पता ही नहीं हैं। मैडिटेशन एक ऐसी पद्धति है जिसमें तुम सीख भी सकते हो तथा सीखे हुए को भुला भी सकते हो। तुम अपनी याददाश्त पर पूरा नियन्त्रण स्थापित कर सकते हो और इस प्रकार के व्यक्ति को ही पूरी तरह से शिक्षित व्यक्ति कहा जा सकता है।

जब मैडिटेशन के द्वारा तुम्हारा अपना अनुभव हो जाता है तो फिर बाहरी पुष्टीकरण की जरूरत नहीं रह जाती है

यानि कि फिर तुम्हें बाहर से पूछने की जरूरत नहीं रह जाती है कि 'मैं कौन हूँ?' फिर तुम अपने आप में ही सुरक्षित हो जाते हो। मैडिटेशन करके तुम वहाँ पर पहुँच जाते हो, जहाँ पर कि तुम्हें पता चल जाता है कि खुशी क्या है? खुश रहना क्या है? उस दिन के बाद तुम्हें यह जरूरत नहीं रह जाती है कि तुम सुन्दर हो, तुम अच्छे हो, लेकिन यह तभी होता है जबकि तुम्हारा अपना अनुभव हो जाए यानि कि तुम चेतन हो जाते हो। वास्तव में तुम्हारा अपना अनुभव ही तुम्हारे आत्म शोधन या आत्म प्रशिक्षण का आधार है। जब तक तुम स्वयं को इस कार्यक्रम में लेकर नहीं आते हो, इसके अधीन नहीं होते हो तब तक तुम किसी न किसी शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक समस्या में उलझे ही रहोगे और कोई भी दवाई तुम्हारी सहायता नहीं कर सकेगी। दरअस्ल तुम केवल शरीर नहीं हो बल्कि तुम एक श्वास लेने वाले व सोचने वाले प्राणी हो। तुम चेतन हो, एक ऐसे चेतन बिन्दु हो जो कि इन सभी सीमाओं से बहुत दूर है, परे है। केवल मैडिटेशन ही तुम्हें वहाँ तक पहुँचा सकती है, जहाँ पर कि चेतना का प्रवाह है और जहाँ से वह पृथक-पृथक मात्रा में और पृथक-पृथक रूप मे निकलती है। बहुत सारे लोग यह सोचते हैं कि मैडिटेशन का अर्थ है कि तुम कुछ भी मत सोचो लेकिन यदि तुम सोचना ही बन्द कर दोगे तो फिर तो तुम भ्रमों व शंकाओं में पड़ कर रह जाओगे और तुम्हारे मन की चेतना जाती रहेगी। मैडिटेशन का अर्थ यह नहीं है कि तुम सत्य से परे हो जाओ या सोचने से परे हो जाओ। जब तुम अपनी सोच से सोच की विधि से लड़ रहे हो उस समय फिर तुम मैडिटेशन नहीं कर रहे हो। अपने विचारों के साथ लड़ाई करने से नकारात्मक विचार आते हैं, इसलिए तुम अपने विचारों के प्रवाह को तो बिना व्यवधान के चलने दो तथा धीरे-धीरे अपनी विश्लेषण करने की शक्ति को तेज करो। ऐसा करके तुम अपनी समझने की व देखने की शक्ति के साथ-साथ अपनी आत्म चिन्तन की शक्ति को भी बढ़ाते हो। फिर तुम यह देखते हो कि कौन से विचार सकारात्मक हैं, उत्साहवर्द्धक हैं। दरअस्ल साकारात्मक विचार ही तुम्हें एक दृढ़ मनोवृत्ति प्रदान करते हैं जो कि एक स्वस्थ जीवने के लिए नितान्त आवश्यक है।

सकारात्मक विचारों को तुम्हारे अन्दर से ही शक्ति प्राप्त होती है। वास्तविकता तो यह है कि तुम अपने अन्दर की तरफ देखते ही नहीं हो और बहुत बार तो तुम उसे नजरअन्दाज ही करते हो जबकि वास्तव में वही खुशी और उल्लास का श्रोत होता है। सम्पूर्ण शारीरिक आरोग्यता के लिए तुम्हें खुश रहना सीखना चाहिए। खुशी सबसे बड़ा डाक्टर है। तुम लड़ो मत और अपने अन्दर नकारात्मक विचारों को मत आने दो। तुम्हें दो बातों को अच्छी तरह से समझने की नितान्त आवश्यकता है और इनका अभ्यास करने की आवश्यकता है। खाने की मेज पर बैठ कर तुम्हें लड़ना नहीं चाहिए क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारी सारी पाचन विधि खराब हो जाती है। यह समझना बहुत जरूरी है। हमेशा खुश रहना सीखो। हम संसार में बहुत थोड़े समय के लिए ही आते हैं और यदि तुम अपनी दैनिक जिन्दगी को देखोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि हम अपना बहुत सारा समय सोने में, खाने में, नहाने धोने व शरीर को संवारने में लगा देते हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम अपना इतना समय बरबाद क्यों करें? क्या मनुष्य शरीर अन्य किसी अच्छे कार्य के लिए नहीं है?

यदि हम अपने अन्दर के सत्य को जान सकें तो हम अपनी चिन्ता को समाप्त कर सकते हैं, हम अपनी शक्ति को छिन्न-भिन्न होने से बचा सकते हैं। बस, खुश रहना सीखो, अपनी खुशी को किसी दूसरे पर मत डालो, उसे तुम परमात्मा पर मत छोड़ो कि वह तुम्हें प्रसन्न करेगा। परमात्मा तो तुम्हारे अन्दर है, खुशी तो तुम्हारे अन्दर है, बस, इसे महसूस करो। निर्भीक होकर रहो। वास्तव में तो तुम अपने जीवन को स्वयं ही बनाते हो और इस बात को तुम्हें कभी भी भूलना नहीं चाहिए। तीन महीने तक अभ्यास करने के बाद तुम देखोगे कि तुम्हारे श्वास शान्त हो जाएँगे और धीरे-धीरे तुम्हारा चेतन मन स्थिर हो जाएगा, शान्त हो जाएगा फिर तुम असीम लाइब्रेरी तक पहुँच जाओगे जिसे कि अचेत मन कहते हैं और फिर धीरे-धीरे तुम चेतना के स्तर पर आ जाओगे और उसके बाद इससे भी परे चेतन बिन्दु पर पहुँच जाओगे।

यह मैडिटेशन का मार्ग है। मैडिटेशन के लिए एक स्कूल अत्यावश्यक है क्योंकि किसी भी मनुष्य को, जो कि मैडिटेशन करता है, किसी न किसी स्कूल की बहुत ही जरूरत होती है। यह समझ लेना बहुत जरूरी है कि शान्ति, खुशी व स्थिरिता जिसे प्राप्त करने के लिए तुम लालायित रहते हो उसे तुम केवल मैडिटेशन के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हो। मैडिटेशन एक चिकित्सा है। मैडिटेशन के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति लाभ प्राप्त कर सकता है, शान्त हो सकता है और शान्त व स्थिर होकर ही तुम अपने अन्दर के परमात्मा को जान सकते हो।

'चलता'

रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब

(12.00 बजे से 4.00 बजे तक)

पूर्णमाशी - 30 अप्रैल, दिन सोमवार।

(रात्रि 12.00 बजे से प्रातः 4.00 बजे तक)

संक्रान्ति - वैसाखि, 14 अप्रैल, दिन शनिवार।

(प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक)

अमृत संचार - महीने के प्रथम रविवार को गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब में सुबह 11.00 बजे होता है।

INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : www.ratwarasahib.in

Website : www.ratwarasahib.org

Instagram : RATWARA SAHIB (https://instagram.com/ratwara.sahib/)

You Tube : https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh

Facebook : https://www.facebook.com/ratwarasahib1

Twitter : https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13

Live Audio Link 1 - https://www.awdio.com/Ratwara Sahib

Live Audio Link 2 - https://mixlr.com/ratwara-sahib

E-mail :- sratwarasahib.in@gmail.com

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

आवश्यक निवेदन

1. रिन्युवल का चन्दा भेजने के लिए मेंबरशिप नम्बर (सदस्यता संख्या) तथा रिन्युवल तारीख (पुनर्नवीनीकरण तिथि) का व्यौरा अवश्य दिया जाए तथा यह भी बतलाया जाए कि चन्दा, रिन्युवल के लिए है अथवा नई मेंबरशिप प्राप्त करने के लिए प्रेषित किया गया है।

2. यदि किसी प्रेमी पुरुष ने आत्म मार्ग मैगजीन के लिए चन्दा जमा करवाया हो और उसे मैगजीन न पहुँच पा रहा हो, तो उसे जमा करवाई गई रकम का रसीद नम्बर आदि लिखकर आत्म मार्ग कार्यालय से सम्पर्क करना चाहिए।

3. 'आत्म मार्ग' एक धार्मिक मैगजीन है, इसके अन्तर्गत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की वाणी छपी हुई होती है, इसलिए समस्त पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि कृप्या इसका प्रयोग रद्दी पेपर की भांति न किया जाए। यदि आप पुराने मैगजीन को रखना नहीं चाहते हैं तो उन्हें हमारे किसी भी वितरण केन्द्र पर सहर्ष वापिस कर सकते हैं।

आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magajine
S/B A/C No. 12861000000003 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
SB A/C No. 12861100000005 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
Punjab National Bank SB A/C No. 0779000100179603
RTGS/IFSC Code - PUNB0077900 Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार **Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901** पर भेजने की कृपा करें। यदि **Online** राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर **SMS** भेजें जी।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि आपने अभी तक आत्म मार्ग मासिक पत्रिका की सदस्यता ग्रहण नहीं की है तो आप कृप्या अधोलिखित प्रारूप पत्र को भरकर सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। यदि आप पहले से ही सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं, तो पुनर्नवीनीकरण हेतु इस प्रारूप पत्र के साथ आवश्यक चैक/ड्राफ्ट "VGRMCT/ATAM MARG MAGAJINE" के नाम पर प्रेषित करने की कृपा करें।

Subscription form ✓ ☐ नई सदस्यता ☐ पुनर्नवीनीकरण ☐ आजीवन सदस्यता

within India

Subscription Period	By Ordinary Post/Cheque	By Registered Post/Cheque
1 Year	Rs. 300/320	
3 Year	Rs. 750/770	
5 Year	Rs. 1200/1220	
Life	Rs 3000/3020	

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 $
Europ	50 Euro	500 Euro
Australia	80 Aus $	800 Aus $

जनवरी ☐ फरवरी ☐ मार्च ☐ अप्रैल ☐ मई ☐ जून ☐ जुलाई ☐ अगस्त ☐ सितम्बर ☐ अक्तूबर ☐ नवम्बर ☐ दिसम्बर ☐

नाम/Name पता/Address.....

.....

.....Pin Code..... Phone ..... E-mail :.....

सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल, रतवाड़ा साहिब

समय - सुबह 9.30 बजे से 2.00 बजे तक (रविवार से शुक्रवार)

डाक्टरों का समय - सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

दूरभाष नं. 98786-95178, 92176-93845

डा. का नाम	विशेषज्ञ	दिन
1. डा. जसबीर कौर	जनरल मैडिसन	सोमवार
2. डा. श्वेता	फिजीओथरैपिस्ट	सोमवार से शुक्रवार
3. डा. हरबंस सिंह	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	मंगलवार
4. डा. तेजिंदर सिंह	जनरल मैडिसन	मंगलवार
5. जे.पी.आई. अस्पताल मोहाली के डाक्टर	आँखों के विशेषज्ञ	मंगलवार
6. श्री माइकल जी	एक्स-रे विशेषज्ञ	मंगलवार तथा वीरवार
7. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	बुद्धवार
8. डा. जे. एस. गुजराल	जनरल मैडिसन/शिशु रोग विशेषज्ञ	बुद्धवार
9. डा. आर. एस. संधू	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	वीरवार
10. डा. संतोष अनेजा	जनरल मैडिसन	वीरवार
11. डा. एस. के. बांसल	जनरल मैडिसन	शुक्रवार
12. डा. बरिन्दर सिंह	जनरल मैडिसन तथा त्वचा रोग विशेषज्ञ, एअरो स्पेस मैडिसन	शुक्रवार
13. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	रविवार
14. डा. जिंदल	जनरल मैडिसन	रविवार
15. डा. गुरप्रीत कौर गिल	होम्योपैथिक	बुद्धवार

-: लैबोरेटरी टैस्ट तथा अन्य सुविधाएँ :-

1. खून टैस्ट, 2. सारे खून सैल काउंट टैस्ट 3. ब्लड शुगर टैस्ट, 4, किडनी टैस्ट, 5. लीवर टैस्ट, 6. लिपिड परोफाइल टैस्ट, 7. थायराइड टैस्ट, 8. हिमोग्लोबिन टैस्ट, 9. पेशाब टैस्ट, 10. स्टूल टैस्ट, 11. ई.सी.जी., 12. एक्स-रे (क्ष-किरण)

सारे लैबोरेटरी टैस्ट आधे शुल्क पर किये जाते हैं तथा मरीज को दवाई मुफ्त दी जाती है।

जरूरी सूचना

प्रत्येक रविवार को अस्पताल खुला रहेगा। समय 11.00 से 1.00 बजे तक। प्रत्येक शनिवार को अस्पताल बन्द रहेगा।

विश्व गुरमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी	
1. सुरति शबद मार्ग	70/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-
3. बात अगंम की - सात भागों में	400/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-
10. सर्व प्रिय गुरू गोबिंद सिंह जी	10/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-
12. अमृत फुहार	10/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-
16. अमर गाथा	100/-
17. वैशाखी	10/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-

English Version	Price
1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमां करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magajine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**